ƱZZ ƱZƱOLT
हो’ दोषतुर
(हो’ संस्कार)
THE HO' SACRAMENTS

लेखकः—
डॉ0 दास राम बारदा
केन्द्रीय धर्म सचिव,
आदिवासी हो’ समाज महासभा, चाईबासा।

ƱZZ ƱZƱOLT
हो’ दोषतुर
(हो’ संस्कार)
THE HO' SACRAMENTS

लेखकः—
जतारा दियुरि—सह—पाण्डाइत
डॉ0 दास राम बारदा
पूर्व अधिषद् सदस्य,
जन—जातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा
जिला — पश्चिम सिंहभूम, झारखण्ड।

धर्म सचिव,
आदिवासी हो’ समाज महासभा, केन्द्रीय समिति
चाईबासा, पश्चिम सिंहभूम, झारखण्ड।
Email :- drbarda1958@gmail.com
Mob.- 9572635713

मूल्यः— 120/एक सौ बीस रुपये मात्र।

◇T-卐 बर–आ′ (प्राक्कथन) PREFACE

हो′ हुदा् रे मुनु काड़ यते एसु पुरः पुनुर (पवित्र) दोषतुरको (संस्कार) मेनः। नेन दोषतुरको बर बहगा रे हटिङ दइयोः अ। मिय्ड् मिह बहगादो हुदा् रेयः दोषतुरको अण्डोः दोसर बहगादो पोरोब् रेयः दोषतुरको तना। नेन हुदा् रेयः दोषतुरको रे जोनोम रेयः दोषतुर, आँ′दि चि अणादि रेयः दोषतुर, गोनोए् रेयः दोषतुर अण्डोः जते–पनरचि रेयः (प्रायश्चित) दोषतुरको एमन मेनः। एनका गे, दोसर बहगा रे पोरोब्–पोनइको रेयः दोषतुरको एमन मेनः। जेमोन :–माँगे पोरोब्, बहा पोरोब्, हेरोः पोरोब्, बड्ताउलि पोरोब् अण्डोः जोमनमा पोरोब्को एमन मेनः। सोंगे ते गे बाबा मुउट, अषाड़िया्, जनतड़ा, कारम, दसाँय, कोलोम उटा्णि, ताण्डि पोरोब् एमन दोषतुरको मेनः। बुरु संगर, सिंगिरा्य पोरोब्को एमन मेनः। नमा ओवः बइ यन रे ओवः जते–पनरचि चि ओवः अणादि दोषतुरको एमन मेनः। बाला–साका रे नमा ओवः–दुवा्र नेल चि बाला–बपालाको एमन मेनः। बिषिः रे षिइइँः बिषिः, जोनोम बिषिः, अणादि बिषिः, गोनोए् बिषिः अण्डोः बिट्ल बिषिःको एमन मेनः। नेन बिषिःको रे जते–पनरचि (प्रायश्चित) रेयः एनेतोको एमन मेनः गेया। हो′ हुदा् रे दियुरिको, पाण्डाइतको, ए′णको अण्डोः देयोवाँको अः किलिमिलि बारोनको (व्रत) एमन मेनः। एनका गे मुण्डा्, मणाकि, डाकुवा्, पोरजा–पइकिको अः तनगा–दपइ दिइति (दायित्व) मेनः। सिदा्मन हो′को नेन ओतोङको बुगिलेका तेको मान–मनातिङ हुजुः लेडा। एन मान–मनातिङको एमन आ′–काजि रे गेको रिका् लेडा। दुर्ङ, कहानि, कुदुम, मोनतोर एमनको रेको सजाओ रिका् लेडा। नेन ओतोङ जनागरको बुड़ा् हो′, बुड़ि एराको तहः रे मेनः। मेनदो तिसिङ अबु हो′को रे लइइः अनासुल होराको रे गे मेनःबुआ्। एन बुड़ा् हो′को चि बुड़ि एराको तहः रे दुब्–अकन ते अयुम–जोङ तेयः सोमय बनोः यना। एन सगुन जनागरको ओल रिका्य तेयः सोमय बनोः यना। एनमेनते, हो′ हुदा् रेयः पुनुर दोरोम दोषतुर रेयः षासतोर (पवित्र धर्म शास्त्र) बनोः यना। एन सगुन जनागरको गे तिसिङ अलिळ नेन पुति रेलिळ ओल अंकाय तना।

अषरा मेनः, (आशा है) चि नेन हुड़िङ–नोः पुति रे ओल–अकन दोषतुरको अबु हो′ हुदा् रेन हो′को लगिड् बुगिन अण्डोः सगुन (शुभ) होरा पाँजा नमे तेयःको नमेया।

– **ओतोल्ल,** डॉ0 दास राम बारदा।

◇FUH-ſZAZT (बिष्य–डोगोर)
बिषय–सूचो CONTENTS

(1) प्रकृति (पुदगा्ल) The Nature

(2) Ufსωο∂ภſ (षिळ्ह्बोंगा) भगवान GOD

(3) चुम्बकीय Åर्जा (ओŸı रोयोङ) Magnetic Energy

(4) सौर ऊर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy

(5) हो′ समुदाय में आस्था और विश्वास

(6) व्यक्तिगत पूजा स्थान

(7) सामूहिक पूजा स्थान

(8) पवित्र वंशज पूजा स्थान (अदिङ)

(9) धान रखने का स्थान (तनतरा)

(10) पवित्र आँगन (राचा)

(11) नगे एरा बिषिः टयेड् (कुण्डा्म)

(12) गोहाल पूजा स्थान (गोवाँ वोंङा टयेड्)

(13) गोबर गड्ढा स्थान (गुरिः दुबि टयेड्)

(14) स्वाभाविक मृत्यु

(15) कव्रस्थान (उकु षासन)

(16) स्वाभाविक मृत्यु का कव्रस्थान

(17) अस्वाभाविक मृत्यु एवं जन्म छूत मृत्यु (बिषिः–बिट्ल′न गोनोए्)

(18) अस्वाभाविक मृत्यु एवं जन्म छूत मृत्यु का कव्रस्थान (बिषिः–बिट्ल′न षासन)

(19) खलिहान पूजा स्थान (कोलोम वोंगा टयेड्)

(20) वंशज महादेव पूजा स्थान (मरं वोंगा टयेड्)

(21) जल देवी पूजा स्थान (नगे एराको अः टयेड्)

(22) ग्राम गइँश्री स्थान (हातु गइँषिरि टयेड्)

(23) जाहेर थान (देषाउलि अण्डोः जयेरा टयेड्)

(24) गोट पूजा स्थान (गोहोट वोङा टयेड्)

(25) बड़ाम बोंगा हण्डोर एड़ः टयेड्

(26) मंत्र पाठशाला स्थान (मोनतोर अकाड़ा)

(27) नाच–गान अखाड़ा (षुसुन अकाड़ा)

(28) खेल का मैदान (इनुङ गोड़ा)

(29) आषाढ़ी पूजा स्थान (अषाड़िया् वोङा)

(30) जन्ताल पूजा स्थान (जनताड़ा वोङा)
(31) हर जाण्टा बोङा टयेड्
(32) असगुन पूजा स्थान (एरे बोङा एड़्: टयेड्)
(33) वनभोज स्थान (बोड़ोबुळ्जि टयेड्)
(34) छाता मेला स्थान (चाता पोरोब् टयेड्)
(35) करमा पूजा स्थान (कारम वोङा टयेड्)
(36) शैतान की बिदाई स्थान (बगिया् हण्डोर एड़्:)
(37) सामूहिक माँगे पोरोब्
(38) अदिङ में माँगे पोरोब्
(39) अनादेर
(40) गउ महरा
(41) ओते इलि
(42) हे: साकम
(43) गुरि् लोयो
(44) मरं पोरोब्
(45) जतारा पोरोब्
(46) हर मगेया या हर बगिया्
(47) अदिङ में बहा पोरोब्
(48) अदिङ में हेरो: पोरोब्
(49) अदिङ में बड्ताउलि पोरोब्
(50) अदिङ में जोमनमा पोरोब्
(51) स्वाभाविक मृत्यु Normal death
(52) अस्वाभाविक मृत्यु Ab-normal death
(53) हो' जनजाति समुदाय में वेद (बेएद)
(54) शिशु वेद (षिशु बेएद)
(55) औरतों के गर्भकाल के समय
(56) शिशु बच्चा जन्म के समय
(57) शादी–विवाह के समय
(58) बपाला के बाद समधि बिदाई के समय
(59) मृत्यु के समय
(60) शिशु वेद (षिशु बेएद) के सि)ान्त
(61) तन्त्र (ओŸोनतोर) Natural Bylaws
(62) मन्त्र (मोनतोर) Volumetrical Sound
(63) यन्त्र (जोनतोर) Mechanical Apparatus
(64) ग्राम गइँश्री (हातु गइँषिरि)
(65) आस्था और विश्वास का उदय
(66) षोयतायेम् (प्राकृतिक रचना में सत्य पर आस्था)
(67) षेबायेम् (प्रकृति में प्रकृति की सेवा–अर्चना)
(68) षुन–दुर्ंङेम् (प्रकृति में उसके अनुकूल नाच–गान)

ƱZZ ƱZƱOLT
हो’ दोषतुर
(हो’ संस्कार)
The Ho' Sacraments

(1) प्रकृति (पुदगा्ल) The Nature

हो’ जनजाति समुदाय ‘आदि काल’ से ‘प्रकृति’ (पुदगा्ल) की गोद में रहते आ रहे हैं। और प्रकृति की पूजा–उपासना ही करते आ रहे हैं। ‘प्रकृति’ को ही श्रृष्टि कŸर्ा, पालन कŸर्ा एवं संहार कŸर्ा यानि भगवान (षिळ्ह्बोंगा GOD) की संज्ञा दी जाती हैं। प्रकृति की रचना एवं उनके Øियाकलाप के अनुकूल ही अपना अलग संस्कार (दोषतुर) का उदय हुआ। उसी प्रकार से प्रकृति को ही ‘देवी–देवताओं’ (वोंगा–बुरु) के रूप में माने जाते हैं। इसलिए, हो’ समुदाय में प्रकृति में प्रकृति की पूजा–पाठ करने का प्रचलन हुआ। हो’ समुदाय में मुख्य पाँच प्रकार के ही ‘श्रृष्टि देवी–देवताओं’ की पूजा की जाती हैं। और पाँच प्रकार के ‘वंशज देवी–देवताओं’ की ही पूजा की जाती है। जो अपनी भाषा (हो’ भाषा) में ही ‘मन्त्रोच्चारण’ करने का रिवाज है। हो’ समुदाय के प्रत्येक पर्व– त्योहारों में इन पाँच ‘श्रृष्टि देवी–देवताओं’ की पूजा की जाती हैं। और पाँच ‘वंशज देवी–देवताओं’ की भी पूजा की जाती है। उसी प्रकार से प्रत्येक छूत संस्कार में भी इन पाँच ‘श्रृष्टि देवी–देवताओं’ की पूजा की जाती हैं। और पाँच ‘वंशज देवी–देवताओं’ की भी पूजा की जाती है। हो’ समुदाय की ‘पूजा प)ति’ एवं उनकी ‘आस्था और विश्वास’ भी किसी अन्य समुदाय से अलग ही होते हैं। इसलिए, हो’ समुदाय के ‘पूजा स्थान’ भी अलग प्रकार के होते हैं। चूँकि हो’ समुदाय प्रकृति के उपासक होते हैं, और पूजा स्थान भी प्रकृति की गोद में ही माने जाते हैं। हो’ समुदाय में कहीं ‘स्वर्ग या नरक’, ‘तीर्थस्थान’, किसी ‘मूŸिर् पूजा’ एवं ‘पाप एवं पुण्य’ पर आस्था और विश्वास नहीं रखते है।

प्रकृति में अनेक प्रकार के पेड़–पौधे आदि होते हैं। अनेक प्रकार की लताएँ भी होती हैं। इन पेड़–पौधों के छाल का स्वाद

भी चखते, जानते और समझते हैं। उसी प्रकार से तरह–तरह की लताओं के गुण आदि भी जानते हैं। उनमें किस पेड़–पौधों के फल एवं फूल खाये जाते हैं, उसे सब पता होता है। पेड़–पौधों की छालों के गुण आदि भी जानते हैं। उनमें से किस लताओं से कौन–सी दवाएँ बनती हैं, उसे आदि काल से व्यवहार में लाते आ रहे हैं। जंगल की किस चिड़ियों को खाते हैं, उसे सब पता होता है। उसी प्रकार से किस पेड़ में या पौधों का कन्द होता है, और किसे खाया जाता है, उसे भी पता रखते हैं। उसे किस जंगल में कौन–सा कन्द कहाँ और कब मिलता है, उसे पता होता है। कौन–सा पेड़ किस _तु में कब फूलता–फलता है, उसे पता होता है। उसी प्रकार से किस मौसम में कौन–सा छŸk (मशरुम) निकलता है, उसे भी पता होता है। और किस मौसम में कैसा पानी बरसता है, उसे भी पता रखता है। पेड़ की पिŸायों को देख कर अकाल होने की सम्भावना को बता सकते हैं। चिड़ियों के चहचहावट से पता कर सकता है, कि किस दिशा में खूँखार जंगली जानवर होते हैं।

(2) [illegible] (षिळ्ह्बोंगा) भगवान GOD

श्रृष्टि करने वाला, पालन करने वाला और संहार करने वाला को ही भगवान कहा जाता है। इसलिए, हो' समुदाय के अनुसार 'प्रकृति' (पुदगा्ल) को ही [illegible] (षिळ्ह्बोंगा) भगवान GOD का रूप कहा जाता है।

[illegible] = [illegible] + [illegible] – [illegible].
षिळ्ह्बोंगा = षिळ् + बुउ – ओंगाह।
भगवान = भग + वान्।
GOD = G + O + D.
G for Generator (ब्रह्मा)– श्रृष्टि कŸाा,
O for Operator (विष्णु)– पालन कŸाा एवं
D for Destroyer (महेश)– संहार कŸाा।

देवी–देवता = वोंगा–बुरु। हो' समुदाय में इन सबको वर्ष में एक बार सेवा–अर्चना किया जाता है। क्योंकि, ये सब 'सुआत्मा' होते हैं और लोगों की भलाई करते हैं। भूत–प्रेत = बोंगा–बुरु। हो' समुदाय में इन सबको गाँव से बाहर भगा दिया जाता है। क्योंकि, ये सब 'कुआत्मा' होते हैं और लोगों की बुराई करते हैं। हो' समुदाय के मतानुसार 'स्वाभाविक मृत्यु' की आत्मा को 'सुआत्मा' कहा जाता है। उसी प्रकार से 'अस्वाभाविक मृत्यु' की आत्मा को 'कुआत्मा' कहा जाता है। पुरूष लोगों की 'सुआत्मा' को 'देवता' (कोवा वोंगा) कहा जाता है। और स्त्री लोगों की 'सुआत्मा' को 'देवी' (कुइ वोंगा) कहा जाता है। उसी प्रकार से पुरूष लोगों की 'कुआत्मा' को 'भूत' (कोवा बोंगा) कहा जाता है। और स्त्री लोगों की 'कुआत्मा' को 'प्रेत' (कुइ बोंगा) कहा जाता है। सेवा–अर्चना = षेबा–साड़ा। हो' समुदाय के अनुसार 'सेवा' (षेबा) एक प्रकार का 'मन्त्र (मोनतोर) एवं तन्त्र' (ओŸाोनतोर) होता है, जो दिखता नहीं है। मगर 'अर्पण' (साड़ा) किया जाने की सामग्री आँख से दिखाई देता है। जो 'मन्त्र' के द्वारा विधि–विधान (तन्त्र) के साथ 'पूजा सामग्री' (वोङाय सामगिरि) अर्पण (दाँङ) किया जाता है। वह साक्षात रूप से 'पूजा सामग्री' दिखाई देता है। आस्था और विश्वास = पतिया्ओ ओण्डो: षारि। आस्था (पतिया्ओ का अर्थ होता है, जिसे आँख से देखे बिना विश्वास किया जाता है। जैसेः– भगवान, देवी, देवता, भूत, प्रेत आदि।) विश्वास (षारि का अर्थ होता है, जिसे अपनी आँख से देख कर विश्वास किया जाता है। जैसेः– पृथ्वी, सूरज, चाँद, तारे आदि अपनी आँख से दिखाई देते हैं।) संस्कार (दोषतुर = दोष + तुर्र)। पूर्वज द्वारा दोष यानि गलत जो हो चुका है, उसे प्रायश्चित रूप से समाधान करना ही 'संस्कार' (दोषतुर) कहा जाता है।

चूँकि, इस प्रकृति (पुदगा्ल) यानि इस धरती या संसार (ओŸाा–ताल) में दो प्रकार की Åर्जाएँ विद्यमान होती हैं। इसी Åर्जा से ही प्रकृति में जीव–जन्तुओं एवं वनस्पतियों की उत्पिŸk gksrh gSaA vkSj blh Åर्जा से ही सब जीते एवं मरते भी हैं। वनस्पति भी इसी Åर्जा से ही अंकुरते हैं। और इसी Åर्जा से ही उगते एवं जीते मरते हैं। उसी प्रकार से मनुष्य प्राणी भी इसी Åर्जा से ही अपनी माता के गर्भ में 'गर्भधारण' करता है। उसके बाद जन्म लेता है, और इस Åर्जा से ही पलता–पोषता है, और मरता भी है। यह तो प्रकृति की ही देन (पुदगा्ल रेय: एनेम) God gift है। इसलिए, हो' समुदाय में 'प्रकृति' (पुदगा्ल) को ही 'भगवान' (षिळ्ह्बोंगा) GOD कहा जाता है।

इस प्रकृति यानि इस धरती में निम्नलिखित दो प्रकार की Åर्जाएँ होती हैं। इन दो Åर्जाओं के बारे में आदि काल से हो' समुदाय के लोग अच्छी तरह से जानते थे। जैसेः–

(1) चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy एवं

(2) सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy।

(3) चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy

हो' समुदाय के अनुसार उŸार दिशा (जाम्बारा जना) को चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का धनात्मक आवेश (पोर्र योङ) माना जाता है। और दक्षिण दिशा (काँदुवा् जना) को चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का ऋणात्मक आवेश (ओब् योङ) माना जाता है। क्योंकि, चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy हमेशा दिन–रात चलते रहता है। यह कभी रुकता नहीं है, बल्कि उŸार दिशा (जाम्बारा जना) से दक्षिण दिशा (काँदुवा् जना) की ओर चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy सतत् बहती जाती है। इस चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy से जीवन दान प्राप्त होता है। और माता के गर्भ में भी इस चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy से ही पोषण भी मिलता है। हो' समुदाय के अनुसार, इस संसार में जितने भी जीवधारी होते हैं, पाँच प्रकार के ही जीव पाये जाते हैं। इन पाँच प्रकार के जीवों की सुरक्षा एवं मंगल कामना के लिए ही 'माँगे पोरोब्' का त्योहार माना जाता है। (पोरोब् = पोर्र $^{+}$ + ओब् $^{-}$)।

(4) सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy

हो' समुदाय के अनुसार पूरब दिशा (तुर्र जना) को सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy का धनात्मक आवेश (तुर्र योङ) माना जाता है। और पश्चिम दिशा (षुर्र् जना) को सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy का ऋणात्मक आवेश (षोर्र् योङ) माना जाता है। क्योंकि, सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy हमेशा दिन को ही चलता है, रात को स्थितिज Åर्जा में विद्यमान रहता है। और यह सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy हमेशा पूरब दिशा (तुर्र जना) से पश्चिम दिशा (षुर्र् जना) की ओर बहती है। सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy हमेशा सूर्योदय होते ही चालू हो जाता है। और सूर्यास्त होते–होते अपना काम को स्थगित कर स्थितिज Åर्जा में विद्यमान रहता है। यही चØ सालों भर चलते रहता है। हो' समुदाय के अनुसार, इस सौर Åर्जा (एंगेल रोयोङ) Solar Energy से ही 'माता के गर्भ' में 'शिशु बच्चा' को बिना साँस लिए 9 माह 7 दिन जीवित रहता है। और गर्भ में पोषण होकर जन्म लेता है।

इसलिए हो' समुदाय में उŸार दिशा (जाम्बारा जना) की ओर मुँह करके कोई काम करना शुभ माना जाता है। और दक्षिण दिशा (काँदुवा् जना) की ओर मुँह करके काम करना अशुभ माना जाता है। चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का उŸार दिशा (जाम्बारा जना) का धनात्मक आवेश (पोर्र योङ) और दक्षिण दिशा (काँदुवा् जना) का ऋणात्मक आवेश (ओब् योङ) को संतुलन करना ही पर्व (पोरोब्) कहा गया है। उसी प्रकार से पूरब दिशा (तुर्र जना) की ओर मुँह करके कोई काम करना शुभ माना जाता है। और पश्चिम दिशा (षुर्र् जना) की ओर मुँह करके काम करना अशुभ माना जाता है। इसलिए 'शादी–विवाह' के समय हो' समुदाय में अपने आँगन में 'हल्दी लेपन' के समय पूरब दिशा की ओर मुँह किया जाता है। और मण्डप बेदी के अन्दर उŸार दिशा की ओर मुँह करना शुभ माना जाता है। अतः मरने के बाद लाश को दक्षिण दिशा की ओर 'सर या माथा करना' और उŸार दिशा की ओर 'पैर करना' शुभ माना जाता है।

(5) हो' समुदाय में आस्था और विश्वास

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार नया घर बनाने के बाद आजीवन ये सब कर्म काण्ड करना अनिवार्य माना जाता है। जैसेः–

(1) नव गृह प्रायश्चित एवं गृह प्रवेश (नमा ओवः जते–पनरचि अण्डोः वोङा अनादेर)।

(2) अपनी माँ के द्वारा नव शिशु का गोदी करके गृह प्रवेश (नमा सिटिया् कोयोङ अनादेर अण्डो: वोङा अनादेर)।
(3) नव दूल्हन का कमर में गोदी करके गृह प्रवेश (नमा किमिन हेबे अनादेर अण्डो: वोङा अनादेर)।
(4) मृत आत्मा को पुकार कर गृह प्रवेश (रोवाँ केया अनादेर अण्डो: वोङा अनादेर) और
(5) श्रा)कर्म (दिरि दुल सुनुम) के उपरान्त प्रायश्चित एवं हवन–योग के बाद गृह प्रवेश (बिषि: ओव: जते–पनरचि अण्डो: वोङा अनादेर)।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार आदि काल से दियुरि प्रथा या प्रणाली या पद्धति पाँच प्रकार के माने जाते हैं। जैसे:–
(1) षुक्न जतारा दियुरि,
(2) षुक्न माँगे दियुरि चि बुरु माँगे दियुरि,
(3) हातु माँगे दियुरि,
(4) दिलि माँगे दियुरि और
(5) बुरु–वोंगा दियुरि।

हो' समुदाय के अनुसार इन पाँच प्रकार के दियुरियों में 'षुक्न जतारा दियुरि' या 'जतारा दियुरि' वंशानुगत Parental होते हैं। बाकि दियुरियों को 'रुम नम' के द्वारा चयन किया जाता है।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'श्रृष्टि आत्मा जीव' (षिरजोन रेन रोवाँ जिउको) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) उत्पŸिा आत्मा जीव (उप्न रोवाँ जिउको),
(2) तपस्या आत्मा जीव (जापन रोवाँ जिउको),
(3) पिण्डज आत्मा जीव (जोनोम रोवाँ जिउको),
(4) प्रायश्चित आत्मा जीव (जतेन रोवाँ जिउको) और
(5) अण्डज आत्मा जीव (रुतुइ् रोवाँ जिउको) आदि।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'श्रृष्टि के देवी–देवताओं' (षिरजोन रेन वोंगा–बुरुको) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) माङ बुरु,
(2) देषाउलि,
(3) पउइँ,
(4) जयेरा तथा
(5) गोवाँ वोंगा आदि।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'पर्व–त्योहारों' (पोरोब्–पोनइको) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) माँगे पोरोब्,
(2) बहा पोरोब्,
(3) हेरो: पोरोब्,
(4) बड्ताउलि पोरोब् और
(5) जोमनमा पोरोब्।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'छूत' (बिषि:) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) मासिक छूत संस्कार (षिइँ: बिषि: दोषतुर),
(2) जन्म छूत संस्कार (जोनोम बिषि: दोषतुर),
(3) विवाह छूत संस्कार (आँ'दि बिषि: दोषतुर),
(4) मृत छूत संस्कार (गोनोए् बिषि: दोषतुर) और
(5) अशिष्ट छूत संस्कार (बिट्ल बिषि: दोषतुर)।

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'ज्ञानेन्द्रियों' (षेयाँ' नतिया्को) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) आँख (मे:ड्),
(2) कान (लुतुर्),
(3) नाक (मुटा् चि मुआँ),
(4) मुँह संग जीभ (आ सोंगे ते ले: चि हालं) और
(5) त्वचा संग मस्तिष्क (उउँर सोंगेते हातं चि मोगोज)।

हो' समुदाय के मतानुसार 'पंचांग' (गोरगोणिड्) में 'पाँच अंग' (मोणे उटिड् चि हित्ड्) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) तिथि (दिल्),
(2) बार (उलं),
(3) नक्षत्र (पाँडा),

(4) योग (जोओग चि जोगोन) और
(5) करण (लगिन चि लोगोन)।

हो' समुदाय के अनुसार तिथि (दिल्) के दो पक्ष (पनह) होते हैं। एक शुक्ल पक्ष (तेते: पनह) की तिथि तथा दूसरा कृष्ण पक्ष (नुब: पनह) की तिथि। प्रत्येक पक्ष के 15–15 दिन या दिवस के होते हैं। दिन या दिवस की संख्या 7 होते हैं।

हो' समुदाय के मतानुसार शादी–विवाह में पाँच प्रकार के कर्म काण्ड पूरा करना अनिवार्य माना जाता हैं। जैसेः–
(1) दूल्हन का सिंदूर दान एवं लोहा का चूड़ी पहनाना (सिंदुरि दान अण्डो: मेएड् साकोम तुसिङ),
(2) दूल्हन का कमर में गोदी करके गृह प्रवेश (अदिङ रे हेबे अदेर),
(3) दूल्हन का अदिङ में पूजा प्रायश्चित गृह प्रवेश (अदिङ रे 'वोङा अदेर),
(4) दूल्हन का अदिङ में खान–पान गृह प्रवेश (अदिङ रे 'जोम इसिङ) और
(5) दूल्हन का अदिङ में प्रसादी ग्रहण गृह प्रवेश (अदिङ रे 'जोम सुट्म)। हो' समुदाय में इन पाँच विशेषताओं का होना अनिवार्य माना जाता है।

हो' समुदाय के मतानुसार Å̈गलियों की संख्या निम्न–लिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। मानव में हाथ एवं पाँव की 5 ऊँगलियाँ (अंगुड़िको) ही प्राकृतिक रूप से होती हैं। यथाः–
(1) अंगूठा (एंगा गाँडा 'माङ बुरु' के लिए),
(2) तर्जनी (चुण्डुल गाँडा 'देषाउलि' के लिए),
(3) माध्यमिका (मुतुल गाँडा 'पउइँ या पउणि' के लिए),
(4) अनामिका (लुकु गाँडा 'जयेरा' के लिए) और
(5) कनीनिका (कानि गाँडा 'गोवाँ वोंगा' के लिए)।

'सारना धर्म दस्तूर' (षहारन: दोरोम दोषतुर) के 'अंक ज्योतिष' (अंका पाँडाइति) के मतानुसार चटाई (किंद्ड् किता् जाटि) की लम्बाई 1 हाथ 1 बित्ता और 3 ऊंगली (षरसर) होती है। हो' समुदाय के मतानुसार 'विवाह संस्कार' (अणादि दोषतुर) में दूल्हा एवं दूल्हन की 'चटाई आसन' का मूलांक संख्या लम्बाई में 5 होती हैं। इसकी मूलांक संख्या 5 इस प्रकार हैं। जैसे (जेमोन):–
'चटाई का आसन' (किंद्ड् किता् जाटि) की लम्बाई में – 1 हाथ
'चटाई का आसन' (किंद्ड् किता् जाटि) की लम्बाई में – 1 बिŸाा और
'चटाई का आसन' (किंद्ड् किता् जाटि) की लम्बाई में – 3 Å̈गली।

इस चटाई का आसन में अंक संख्या होती है, अंक इकाई में नहीं होती है। इसलिए, कुल संख्या जोड़ने पर मूलांक संख्या (1 + 1 + 3 = 5) होती है।

हो' समुदाय के मतानुसार 'मृत छूत संस्कार' (गोनोए बिषि: दोषतुर) में लाश दफनाने के पूर्व 'पाँच चीजों' (सजीव एवं निर्जीव) का 'सगुन तैल नहान' कर्म के लिए सगुन अंजलि (षहार तेला उरा्) करना अनिवार्य माना जाता है। उन 'पाँच चीजों' में जैसे (जेमोन):–
(1) गोटा बीरी (गोटा राँबाह) और
(2) सिझा हुआ चावल यानि उष्णा चावल (तिकि चउलि)।
(3) धूब घास (दुबि तासड्),
(4) आरवा धान (अदोवा बाबा),
(5) गोबर की गोली (गुरि: डुइ),

हो' समुदाय में लाश दफनाने के पूर्व इन पाँच चीजों (सजीव एवं निर्जीव) का 'सगुन तैल नहान अंजली' (षहार तेला उरा्) करना अनिवार्य माना जाता है। हो' समाज में 'मुखाग्नि' नाम का कोई स्थान नहीं होता है। क्योंकि, हो' समुदाय में 'स्वाभाविक मौत' के लाश को 'दहन' करने का रिवाज नहीं है। बल्कि 'स्वाभाविक मौत' के लाश को 'दफन' करने का पवित्र रिवाज होता है। सिर्फ 'अस्वाभाविक मौत' के लाश को ही 'दहन' करने का पवित्र रिवाज होता है। हो' समुदाय में 'अस्वाभाविक मौत' के लाश को 'दहन' करने का पवित्र रिवाज होता है। 'दहन' करना या 'दफन' करने के पूर्व इन पाँच चीजों (सजीव एवं निर्जीव) का 'सगुन तैल नहान अंजली' (षहार तेला उरा्) करना वर्यनीय है। 'अस्वाभाविक मौत' की आत्मा (रोवाँ) को 'अदिङ' में 'अत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) नहीं किया जाता है। क्योंकि, अस्वाभाविक मौत की आत्मा 'भूत–प्रेत आत्मा' (बगिया्) होती हैं।

इस प्रकार से उä 'सगुन तैल नहान अंजली' (षहार तेला उरा) सामग्रियों को दो भागों में 'बाँटने' का रिवाज पवित्र माना गया है। एक भाग 'औरतों' के लिए 'हल्दी तैल नहान' के समय 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) करने के लिए होता है। तथा दूसरा भाग 'मर्दो' के लिए 'धान बुनाई' के समय 'धान मुट्ठी' (बाबा मुउट) के लिए होता है।

उन पाँच चीजों में औरतों के लिए पहला भाग में दो सामग्रियाँ होती हैं। जैसेः–
(1) गोटा बीरी (गोटा राँबाह) और
(2) सिझा हुआ चावल यानि उष्णा चावल (तिकि चउलि)।

इन दो चीजों को 'अदिङ में आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के समय 'औरतों' के लिए हिस्सा होता है। 'आत्मा पुकार' के दिन इन दो चीजों को भात–दाल बनाकर 'अदिङ में अर्पण करना' पवित्र माना गया है। इस प्रकार से हो' समुदाय में 'मृत संस्कार' (गोनोए दोषतुर) का पवित्र प्रचलन होता है, जो अन्य समुदाय से अलग माने जाते हैं।

उसी प्रकार से उन पाँच चीजों में मर्दों के लिए दूसरे भाग में तीन सामग्रियाँ होती हैं। जैसेः–
(1) धूब घास (दुबि तासड़),
(2) आरवा धान (अदोवा बाबा),
(3) गोबर (गुरि:)।

इन तीन चीजों को खेत में 'धान मुट्ठी' (बाबा मुउट) के समय 'मर्दों' को धान बुनाई के लिए हिस्सा होता है। 'धान मुट्ठी' (बाबा मुउट) के समय इन तीन चीजों को अपने खेत में बुनना पवित्र माना गया है। इसलिए, हो' समुदाय के अनुसार धान मुट्ठी वाला खेत के धान को अलग रखा जाता है। क्योंकि, इस खेत के धान से बना चावल को अन्य व्यäियों को नहीं दिया जाता है। इस चावल को किसी अन्य व्यäियों को देने से 'सगुन' (षहार) चले जाने पर आस्था और विश्वास रखा जाता है।

हो' समुदाय में पवित्र 'इष्ट पूजा स्थान' मुख्य दो प्रकार के माने जाते हैं। हो' समुदायों में पूजा स्थान की परम्परा निम्नलिखित इस प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–
(1) व्यäिगत पूजा स्थान और
(2) सामूहिक पूजा स्थान होते हैं।

(6) व्यäिगत पूजा स्थान

हो' जनजाति समुदायों में 'व्यäिगत पूजा–पाठ' में मन्त्र आदि अपनी 'हो' भाषा' में सम्पन्न करने का रिवाज है। 'व्यäिगत पूजा–पाठ' सम्पन्न करने के लिए एक सुरक्षित एवं पवित्र 'पूजा स्थान' निम्न प्रकार के होते हैं। जैसे (जेमोन):–
(1) सर्वोच्च पवित्र इष्ट पूजा स्थान (अदिङ),
(2) पवित्र आँगन (राचा),
(3) धान रखने का स्थान (तनतरा),
(4) नगे एरा बिषि: टयेड् (कुण्डा्म)
(5) गोहाल पूजा स्थान (गोवाँ वोङा टयेड्),
(6) गोबर गड्ढा स्थान (गुरि: दुबि टयेड्),
(7) कब्रस्थान (उकु षासन टयेड्),
(8) खलिहान पूजा स्थान (कोलोम वोङा टयेड्),
(9) इष्ट वंशदेव पूजा स्थान (मरं वोंगा रेय: वोङा टयेड्),
(10) जल देवी पूजा स्थान (नगे एरा रेय: वोङा टयेड्) आदि।

(7) सामूहिक पूजा स्थान

हो' जनजाति समुदायों में 'सामूहिक पूजा–पाठ' में भी मन्त्र आदि अपनी 'हो' भाषा' में सम्पन्न करने का रिवाज है। 'सामूहिक पूजा–पाठ' सम्पन्न करने के लिए भी एक सुरक्षित एवं पवित्र 'पूजा स्थान' निम्न प्रकार के होते हैं। जैसे (जेमोन):–
(1) ग्राम गइँश्री स्थान (हातु गइँषिरि टयेड्),
(2) जाहेर थान (देषाउलि अण्डो: जयेरा टयेड्),
(3) गोट पूजा स्थान (गोहोट वोङा टयेड्),
(4) बड़ाम हण्डोर एड़: टयेड्,
(5) मंत्र पाठशाला स्थान (मोनतोर अकाड़ा टयेड्),
(6) नाच–गान अखाड़ा (षुसुन अकाड़ा टयेड्),
(7) आषाढ़ी पूजा स्थान (अषाड़िया् वोङा टयेड्),
(8) जन्ताल पूजा स्थान (जनताड़ा वोङा टयेड्),
(9) हर जानटा वोंगा टयेड्,
(10) असगुन पूजा स्थान (एरे वोङा टयेड्),

(11) वनभोज स्थान (बोड़ोबुळ्जि टयेड्),
(12) मेला स्थान (चाता पोरोब् टयेड्),
(13) करमा पूजा स्थान (कारम वोङा टयेड्),
(14) शैतान की बिदाई (बगिया् हण्डोर एड़्: टयेड्)
(15) खेल का मैंदान (इनुङ ताण्डि)।

इस प्रकार से हो' समुदाय में 'व्यÃगत पूजा स्थान' एवं 'सामूहिक पूजा स्थान' दो प्रकार के पवित्र पूजा स्थान होते हैं। मान्यता के अनुसार इसे हटाना या विस्थापन करना गुनाह समझा जाता है। क्योंकि, इन स्थानों को पूर्वजों द्वारा पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रूप से रखा गया है। और हो' समुदाय की मान्यता के अनुसार इन सारे सुरक्षित स्थानों को संरक्षण दिया जाता है। इन स्थानों में पूर्वजों द्वारा 'व्यÃगत पूजा स्थान' में अपने एवं अपने परिवार के हित एवं कल्याण के लिए पूजा–पाठ होती है। और 'सामूहिक पूजा स्थान' में ग्राम देहरी के द्वारा अपने एवं अपने ग्रामवासियों के हित एवं कल्याण के लिए पूजा–पाठ होती है। पीढ़ देहरी के द्वारा अपने एवं अपने पीढ़वासियों के हित एवं कल्याण के लिए पूजा–पाठ होती है। इलाका देहरी के द्वारा अपने एवं अपने इलाका़वासियों के हित एवं कल्याण के लिए पूजा–पाठ करने का पवित्र रिवाज है।

(8) पवित्र वंशज पूजा स्थान (अदिङ)

हो' जनजाति समुदाय में 'अदिङ' एक परिवार का पहला सर्वोच्च पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'बंशज इष्ट पूजा स्थान' होता है। हो' समुदाय के सभी विवाहित घरों में 'अदिङ' व्यÃगत पूजा–पाठ के लिए 'इष्ट पूजा स्थान' होता है। घर के अन्दर सुरक्षित 'अदिङ' एक पवित्र एवं सुरक्षित पूजा स्थान होते हैं। इस 'अदिङ' स्थान में सिंदूर, होलोङ, षासं, आरवा चावल एवं धूना या धूप, अगर बŸाी आदि का प्रयोग नहीं होता है। यह 'अदिङ' प्रत्येक हो' आदिवासी जनजाति के घर में पाये जाते है। 'अदिङ' में पुराने जमाने से आस्था और विश्वास के साथ पूजा–पाठ आदि सम्पन्न किया जाता है। इस स्थान में अपने समाज के दूसरे गोत्रों को भी प्रवेश करना वर्जनीय है। क्योंकि, इस स्थान में अपने आदि गोत्र के पूर्वज मृत आत्माओं तथा श्रृष्टि देवी–देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। इस स्थान में अन्य गोत्रों के प्रवेश करने पर 'अदिङ' को प्रायश्चित करना अनिवार्य माना जाता है। और वह भी एक 'लाल मुर्गी' (मुर्गा नहीं) को 'जभ्हे' (हड् करसा) कर ही प्रायश्चित करना अनिवार्य माना जाता है।

नये घर के बनने के तुरन्त बाद 'गृह प्रवेश' (ओव्: अणादि) के समय एक लाल मुर्गी (मुर्गा नहीं) को 'जभ्हे' (हड् करसा) कर बलि चढ़ाया जाता है। और वह भी अदिङ में लाल मुर्गी का ही 'जभ्हे' (हड् करसा) करने का रिवाज है। नये घर के नया 'अदिङ' में इस दिन कुम्हार का नया 'भात हण्डी' में भात पकाने का पवित्र रिवाज होता है। इस 'अदिङ' स्थान में 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) का ही प्रयोग होता है। 'अदिङ' स्थान में दो 'सियाली पŸाों' (रुउङ साकम) को बिछाया जाता है। एक 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में 4 जगह 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) को अर्पण कर सजाया जाता है। उसी तरह से दूसरे 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में भी 4 जगह 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) को अर्पण कर सजाया जाता है। पहला एक सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में चार जगह जीवित पउँड़ि (जिइड् पउइँ) देवी एवं देवताओं के लिए भोग चढ़ाने का रिवाज है। इन चार जीवित पउँड़ि (जिइड् पउइँ) के नाम इस प्रकार हैं। जैसे (जेमोन):–
(1) राँगा पाट,
(2) चोनदोन पाट,
(3) आ':् वोंगा एवं बिर वोंगा तथा
(4) षुक्न जतारा के लिए भोग चढ़ाया जाता है।

हो' समुदाय के मतानुसार, प्रत्येक पर्व–त्योहारों में इन पाँच प्रकार के जीवित पउँड़ि (जिइड् पउइँ) देवी–देवताओं को पवित्र अदिङ में चार जगह भोग चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है। दूसरा एक सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में चार जगह 'वंशज देवी–देवताओं' के लिए भोग चढ़ाने का रिवाज होता है। इन चार 'वंशज देवी–देवताओं' के नाम इस प्रकार हैं। जैसे (जेमोन):–
(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा,
(2) चनल्: दिषुम मरं वोंगा,
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को तथा

(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को एवं चनल्: दिषुम दुउम हो'को के लिए भोग चढ़ाने का पवित्र रिवाज हुआ।

इस नया 'अदिङ' में पहला 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) के 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) में 'लाल मुर्गी' को चुभाया (अतिङ) जाता है। फिर दूसरा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) के 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) में 'लाल मुर्गी' को चुभाया (अतिङ) जाता है। इन दोनों 'सियाली पŸाों' (रुउङ साकम) के 'उष्णा चावल' (तिकि चउलि) में 'लाल मुर्गी' को चुभाने (अतिङ) के बाद 'जभ्हे' (हड् करसा) कर बलि चढ़ाया जाता है। लोटा के पानी में 'जभ्हे' (हड् करसा) वाला लाल मुर्गी का खून को मिलाया जाता है। इस खून से सारे घर के कमरों को प्रायश्चित किया जाता है। प्रायश्चित करने का अर्थ होता है, इष्ट पवित्र पूजा स्थान, रसोई घर या पाकशाला (अदिङ), धान रखने का कमरा (तन्तरा ओव:), शयन कक्ष (मेला ओव:), गोहाल (गोवाँ), गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि), कब्रस्थान (उकु षासन) एवं श्मशान (माणा उरुब् टयेड्), खलिहान (कोलोम), इष्ट वंशज देवस्थल (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा टयेड्), जल देवी स्थान (नगे सुउँड्) आदि।

इस 'अदिङ' स्थान में वार्षिक पाँच प्रकार के पर्व–त्योहारों में पूजा–पाठ किया जाता है। हो' जनजातियों में मुख्य पाँच प्रकार के पर्व–त्योहार होते हैं। इन पाँच प्रकार के त्योहारों के उपलक्ष में प्रसादी के रूप में भात–दाल एवं हाँड़िया का भोग चढ़ाया जाता है। हो' जनजातियों में मुख्य पाँच पर्व–त्योहारों के नाम इस प्रकार हैं। जैसेः–

(1) माँगे पोरोब्,
(2) बहा पोरोब्,
(3) हेरो: पोरोब्,
(4) बड्ताउलि पोरोब् एवं
(5) जोमनमा पोरोब् आदि।

हो' जनजाति समुदायों में प्रकृति के अनुकूल इन पाँचों पर्व–त्योहारों में अलग–अलग पŸाों में अलग–अलग भोग चढ़ाने का पवित्र रिवाज हुआ। उसी प्रकार से इन पाँचों पर्व–त्योहारों में भी अलग–अलग गोटा दाल का भोग चढ़ाने का रिवाज हुआ। हो' समुदाय में 'अदिङ' में पूजा–पाठ वाला शब्जी में हल्दी, मशाला, नमक, तैल आदि मिलाना वर्जनीय है। क्योंकि, हो' समुदाय के अनुसार आदि काल में 'मुनु हड़ाम, मुनि बुड़ि' या 'लुकु हड़ाम, लुकुमि बुड़ि' या 'टोटा हड़ाम, टोटा बुड़ि' या 'पिलचु हड़ाम, पिलचु बुड़ि' के समय हल्दी, मशाला, नमक, तैल आदि का प्रचलन नहीं था।

इसके अलावा अपने घर में 'जन्म छूत' (जोनोम बिषि:) होने पर 'अदिङ' को प्रायश्चित करना अनिवार्य होता है। 'अदिङ' के पुराने भात हण्डी को बाहर निकाल कर फेंकने का पवित्र रिवाज है। और जिस दिन जन्म छूत (जोनोम बिषि:) को प्रायश्चित किया जाता है, उसी दिन फिर कुम्हार का एक दूसरा 'नया हण्डी' को चढ़ाया जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार जन्म छूत को तीन बार में पूर्ण प्रायश्चित माना जाता है। जैसेः–

(क) 'नया शिशु का जन्म के तुरन्त बाद एवं नाभी झड़ने से पहले पिता के लिए' (नियर एड़:) होता है,
(ख) 'नया शिशु का नाभी झड़ने के बाद नवजात शिशु के लिए' (नोरता एड़:) होता है,
(ग) 'नया शिशु की माता के लिए' छटियारी (तिकि एड़: या एकषिया्) आदि प्रायश्चित करने का पवित्र प्रचलन है।

इस प्रकार से हो' समाज में पूर्ण प्रायश्चित करने के लिए कुल एक माह का समय लगता है। उदाहरण स्वरूपः–

(अ) अपने घर में नया शिशु के 'जन्म' लेने पर 'अदिङ' को छूत माना जाता है। इसलिए, 'अदिङ' के पुराना 'भात हण्डी' को बाहर निकाल दिया जाता है। हो' समुदाय के अनुसार उस 'जन्म छूत' को 'एकषिया्' में ही 'प्रायश्चित' (जते परचि) किया जाता है। उसी दिन उस 'अदिङ' में माँ के द्वारा नया शिशु को गोदी करके गृह प्रवेश (कोयोङ अदेर) करने का पवित्र रिवाज है। और उसी दिन फिर कुम्हार का दूसरा 'नया भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। 'अदिङ' के पूर्वज आत्माओं को नये जन्म लेने वाला शिशु से परिचित कराया जाता है। उस दिन भी 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी को 'जभ्हे' (हड् करसा) कर बलि चढ़ाया जाता है। और उस 'अदिङ' में 'मुर्गी का कलेजा एवं माँस–पेशियों' के साथ भात का भोग चढ़ाया जाता है। पूजनीय पेय के रूप में 'हाँड़िया' (डिया्ङ) को भी 'अदिङ' में भोग के रूप में चढ़ाया जाता है।

इसके अलावा किसी 'शादी–विवाह छूत' (अणादि बिषि:) में भी 'अदिङ' के पुराने भात हण्डी को बाहर निकाल कर फेंकने का पवित्र रिवाज है। जिस दिन 'विवाह छूत (अणादि बिषि:) को प्रायश्चित किया जाता है, उसी दिन फिर कुम्हार का एक दूसरा नया 'भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'शादी–विवाह छूत' को भी दो बार में पूर्ण प्रायश्चित माना जाता है। जैसे (जेमोन):–

(क) 'बहू भात' (जोम इसिङ) के दिन,

(ख) 'इष्ट प्रसादी ग्रहण' (जोम सुट्म) के दिन।

'सारना धर्म संस्कार' (षहारन: दोरोम दोषतुर) के मतानुसार 'बहू भात' (जोम इसिङ) के दिन भी 'अदिङ' के पुराने 'भात हण्डी' को निकाल कर बाहर करने का पवित्र रिवाज है। और उसी दिन फिर कुम्हार का एक दूसरा नया 'भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। जैसे:–

(आ) अपने घर में 'शादी–विवाह' होने पर 'अदिङ' को छूत माना जाता है। इसलिए, 'अदिङ' के पुराना 'भात हण्डी' को बाहर निकाल दिया जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'नयी वधू' को उसी अदिङ में ही 'कमर में गोदी कर गृह प्रवेश' (हेबे अदेर) करने का पवित्र रिवाज है। और 'बहू भात' (जोम इसिङ) के दिन फिर कुम्हार का दूसरा नया 'भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। उस दिन भी 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी (षुक्य कटुलि) को 'जभ्हे' कर बलि चढ़ाया जाता है। और उस मुर्गी के खून से सारे घर को प्रायश्चित किया जाता है। उस 'अदिङ' में 'मुर्गी का कलेजा एवं माँस–पेशियों' के साथ भात का भोग चढ़ाया जाता है। पूजनीय पेय 'हाँड़िया' को भी भोग के रूप में चढ़ाया जाता है।

'मृत छूत' (गोनोए बिषि:) होने पर भी 'अदिङ' के पुराने 'भात हण्डी' को बाहर निकाल देने का पवित्र रिवाज है। और जिस दिन मृत छूत (गोनोए बिषि:) को प्रायश्चित किया जाता है, उसी दिन फिर कुम्हार का एक दूसरा नया 'भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'मृत छूत' को तीन बार में ही पूर्ण प्रायश्चित माना जाता है। जैसे (जेमोन):–

(क) 'लाश दफनाना' (माणा तोपा) या 'लाश जलाना' (माणा उरुब्),

(ख) 'आत्मा पुकार' (उम्बुल अदेर या रोवाँ केया अदेर),

(ग) श्रा)कर्म (दिरि दुल सुनुम) का प्रचलन है।

नोट:– हो' समुदाय में आस्था एवं विश्वास के मतानुसार 'स्वाभाविक मौत' की लाश को दफनाने का प्रचलन है। और 'अस्वाभाविक मौत' की लाश को जलाने का प्रलन है। अस्वाभाविक मौत की लाश में 'माणा उरुब् सालि' (जंगली नोनी की लकड़ी) का होना अनिवार्य समझा जाता है। हो' समुदाय में 'चन्दन की लकड़ी' का अनिवार्य होना नहीं माना जाता है।

(इ) अपने निज गोत्र के किसी सदस्य के घर में 'मृत्यु' होने पर पुराना 'भात हण्डी' को बाहर निकाल दिया जाता है। हो' समुदाय के अनुसार 'लाश' को अपनी ही जमीन पर यानि अपने ही 'कब्रस्थान' में दफनाने का पवित्र रिवाज है। या फिर 'लाश' को अपनी ही जमीन में 'दाह संस्कार' करने का पवित्र रिवाज है। हो' समुदाय में 'मुखाग्नि' का प्रचलन नहीं होता है। उस 'मृत आत्मा' को उसी अदिङ में ही 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) करने का पवित्र रिवाज है। और उसी दिन फिर कुम्हार का दूसरा नया 'भात हण्डी' को चढ़ाया जाता है। उस दिन भी 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी को 'जभ्हे' कर बलि चढ़ाया जाता है। उस 'अदिङ' में ही 'मुर्गी का मांस' को पकाया जाता है। और उसे 'अदिङ' में 'मुर्गी का कलेजा एवं माँस–पेशियों' के साथ भात का भोग चढ़ाया जाता है। पूजनीय पेय 'हाँड़िया' को भी 'अदिङ' में भोग के रूप में चढ़ाया जाता है। सभी उपलक्षों में 'हाँड़िया' को दो दोना (मुलि पुउ:) में पेय के रूप में भोग चढ़ाने का रिवाज है। हो' समुदाय में श्रा)कर्म (दिरि दुल सुनुम) नहीं होने से 'शादी–विवाह' रचाना 'अशुभ' माना जाता है। यह कार्य प्रकृति के विपरीत माना गया है, इसलिए असगुन एरे होने का भय बना रहता है।

इस प्रकार से हो' जनजातियों का 'अदिङ' में कुल पाँच बार 'गृह प्रवेश' करने के पवित्र रिवाज होते हैं। जैसे:–

(क) नये घर के बनने के तुरन्त बाद 'गृह प्रवेश' में 'प्रायश्चित प्रवेश' (जते–पनरचि अदेर एवं 'वोङा अदेर) होता है। बिना प्रायश्चित किए नये घर में रसोई आदि बनाना वर्जनीय होता है। इस 'प्रायश्चित प्रवेश' में एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 7 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से सारे घर को

प्रायश्चित किया जाता है। इस दिन 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (करसा) चढ़ा कर पूरे घर को प्रायश्चित करना होता है।

(ख) नया शिशु के जन्म के तुरन्त बाद बच्चा के पिता को 'नियर् एड़:' करना होता है। नया शिशु के जन्म के नवाँ दिन में बच्चा को 'नोरता एड़:' करना अनिवार्य होता है। नोरता के एक्कीसवाँ दिन तक में बच्चा को माँ के द्वारा 'गोदी कर गृह प्रवेश' (कोयोङ अदेर' एवं 'वोङा अदेर) होता है। इस 'गोदी कर गृह प्रवेश' (कोयोङ अदेर' एवं 'वोङा अदेर) में एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 5 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से सारे घर को प्रायश्चित किया जाता है। इस दिन 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (करसा) चढ़ा कर पूरे घर को प्रायश्चित करना होता है।

(ग) शादी–विवाह के बाद नयी बहू का 'कमर में गोदी कर गृह प्रवेश (हेबे अदेर एवं वोङा अदेर) होता है। इस 'कमर में गोदी कर गृह प्रवेश' (कोयोङ अदेर एवं वोङा अदेर) में एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 7 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से सारे घर को प्रायश्चित किया जाता है। इस दिन पवित्र 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (करसा) चढ़ा कर पूरे घर को प्रायश्चित करना होता है।

(घ) मृत्यु के बाद 'आत्मा पुकार कर गृह प्रवेश (रोवाँ केया अदेर एवं वोङा अदेर) करना पवित्र माना जाता है। इस 'आत्मा पुकार कर गृह प्रवेश (रोवाँ केया अदेर एवं वोङा अदेर) में एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 9 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से सारे घर को प्रायश्चित किया जाता है। इस दिन 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (करसा) चढ़ा कर पूरे घर को प्रायश्चित करना होता है।

(ङ) हो' समुदाय में किसी व्यfक्त के श्रा)कर्म (दिरि दुल सुनुम) को भी 'मृत छूत' माना जाता है। इसलिए, श्रा)कर्म (दिरि दुल सुनुम) के बाद घर को प्रायश्चित करना अनिवार्य होता है। एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 9 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से सारे घर को प्रायश्चित किया जाता है। इस दिन 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (हड् करसा) चढ़ा कर पूरे घर एवं पूजा स्थान को प्रायश्चित करना अनिवार्य एवं पवित्र माना जाता है।

(च) इसके अलावा हो' जनजाति समुदाय का अन्य समुदाय के साथ 'शादी–विवाह' (अन्तर्विवाह) रचाने पर इसे 'अशिष्ट छूत' (बिट्ल बिषि:) माना जाता है। हो' समुदाय में 'अशिष्ट छूत' (बिट्ल बिषि:) होने पर इसके बाद 'अशिष्ट प्रायश्चित' (बिट्ल जते–पनरचि) यानि 'बोड़ोबोंजि जते–पनरचि' एवं 'वोङा अदेर' का ि∅याकर्म करना अनिवार्य माना जाता है। इस प्रायश्चित में एक लोटा पानी में हल्दी चूर्ण देकर 9 आम की पŸाी, 3 धूब घास एवं तुलसी डाली से सारे घर को प्रायश्चित करना पवित्र समझा जाता है। इस दिन 'अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि 'जभ्हे' (हड् करसा) चढ़ा कर पूरे घर को प्रायश्चित करना अनिवार्य होता है। प्रायश्चित का अर्थ होता है, रसोई या पाकशाला (अदिङ), धान रखने का कमरा (तन्तरा ओव:), शयन कक्ष (मेला ओव:), गोहाल (गोवाँ), कब्रस्थान (उकु षासन), खलिहान (कोलोम), इष्ट वंशदेव स्थान (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा टयेड्) आदि जगहों को भी प्रायश्चित करना अनिवार्य माना जाता है।

नोट:– चूँकि, हो' समुदाय में 'स्वर्ग–नरक', 'पाप–पुण्य', 'मूŸार्ि पूजा' एवं 'तीर्थ स्थान' पर आस्था एवं विश्वास नहीं रखते हैं। हो' समुदाय के पूजा–पाठ में ब्राह्मण, धोबा, भंडारी आदि के स्थान नहीं होते हैं। हो' समुदाय के पूजा–पाठ में 'हो' देहरी' (हो' दियुरि), हो' ब्राह्मण (एण), हो' पण्डित (हो' पाण्डाइत) एवं हो' ओझा (हो देयोवाँ) होते हैं।

(9) धान रखने का स्थान (तनतरा)

हो' जनजाति समुदाय में 'तनतरा' एक परिवार का दूसरा सर्वोच्च पवित्र एवं महŸवपूर्ण लक्ष्मी पूजा स्थान (बाबा एंगा) होता है। हो' समुदाय के सभी विवाहित घरों में 'तनतरा' व्यfक्तगत पूजा–पाठ के लिए 'इष्ट पूजा स्थान' होता है। इस तनतरा के कोठरी में किसी अन्य व्यक्तियों को प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। इस तनतरा घर की कोठरी में 'मांस, मछली एवं अण्डा' खाकर प्रवेश करना मना है। इस तनतरा घर की कोठरी में 'दारु एवं शराब' पीकर प्रवेश करना भी मना है। क्योंकि, इस स्थान को 'माँ लक्ष्मी' (बाबा एंगा, लुकुमि) का निवास–स्थान माना जाता है। तनतरा के ऊपर ही धान आदि के पूड़ा (बाँदि) को रखा जाता है।

धान सिझाई के लिए धान निकालने के पहले इस तनतरा में 'साल का धूना जलाकर' निकाला जाता है। इस कोठरी में केवल पवित्र व्यक्ति ही प्रवेश कर सकते हैं। जन्म छूत, मरण छूत एवं मासिक छूत में धान निकालना आदि मना है। इस घर की कोठरी को पवित्र कोठरी माना जाता है।

हो' समुदाय के मतानुसार, साँप का सपना देखने से 'देशाउलि' का दर्शन होना समझा जाता है। हाथी का सपना देखने से 'बाबा एंगा' (माँ लक्ष्मी) का दर्शन होना समझा जाता है। शेर, बाघ या शिकार करने का सपना देखने से 'जयेरा' का दर्शन होना समझा जाता है। पानी में तैरना, मगरमच्छ देखना या नाव पर चढ़ना 'नगे एरा' (जल देवी) का दर्शन होना समझा जाता है। इस दिन तनतरा में साल का धूना जलाना पवित्र माना जाता है।

(10) पवित्र आँगन (राचा)

हो' जनजाति समुदाय में 'राचा' (आँगन) एक परिवार का तीसरा सर्वोच्च पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'गुरु वोंगा' (गुरू देव) स्थान होता है। हो' समुदाय के सभी विवाहित घरों में 'राचा' (आँगन) व्यãगत पूजा–पाठ के लिए 'इष्ट पूजा स्थान' होता है। इस 'राचा' (आँगन) में किसी अन्य व्यक्तियों को प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। इसलिए, हो' समुदाय के घर के चारों ओर से घेरा (बाकइ) किया जाता है। जंगली झाँटी से बाकइ किया जाता है। या मिट्टी की दीवाल से घेरा बनाया जाता है। इस 'राचा' (आँगन) में 'मरा हुआ मांस' या अखाद्य मांस खाकर प्रवेश करना मना है। किसी अतिथि के आने पर पहला चरण में खटिया में बैठाना अनिवार्य माना जाता है। इसलिए, ही अपने आंगन में किसी व्यक्ति या अतिथि के आने पर 'लोटा पानी' देने का पवित्र रिवाज है। उसके बाद ही कोई पानी या हाँड़िया पीने के लिए देने का पवित्र रिवाज होता है।

चूँकि, हो' समुदाय के गाँव में किसी प्रकार के होटल आदि नहीं होते हैं। इसलिए, अतिथि के आने से हाँड़िया पीने एवं पिलाने का प्रचलन हुआ।

(11) नगे एरा बिषि् टयेड् (कुण्डा्म)

हो' जनजाति समुदाय में पिछवाड़ा (कुण्डा्म) एक परिवार का चौथा महŸवपूर्ण स्थान होता है। घर के कोई नया शिशु के जन्म होने से 'जन्म छूत' माना जाता है। जब तक छूत खत्म नहीं होता है, तब तक 'राचा' (पवित्र आँगन), 'अदिङ' (पवित्र इष्ट पूजा स्थान), 'तनतरा' (पवित्र धान रखने के स्थान), 'गोवाँ' (पवित्र गोहाल), 'दुबि' (पवित्र गोबर गड्ढा), 'षासन' (कब्रस्थान), 'कोलोम' (पवित्र खलिहान), 'मरं वोंगा टयेड्' (पवित्र इष्ट कूलदेव या वंशदेव स्थान), 'नगे एरा टयेड्' (जलदेवी स्थान) आदि जगह आना–जाना मना है। नया शिशु के जन्म होने के तुरन्त बाद शिशु के पिता को 'हल्दी' अर्पण कर तालाब या नदी के पानी में 'नियर एड़:' करना अनिवार्य माना जाता है। पिछवाड़े (कुण्डा्म) में एक 'अपवित्र' परन्तु अति सुरक्षित स्थान माना जाता है। नवजात शिशु के जन्म लेने पर इस पिछवाड़े (कुण्डा्म) में ही 'नाभी नाल के फूल' को दफनाने का प्रचलन है। और वहाँ पर एक महुआ के पेड़ की डाली को गाड़ने का रिवाज भी होता है। महुआ के पेड़ की डाली गाड़ा हुआ देख कर अन्य लोग भी जान जाते हैं, कि यहाँ पर कोई 'जन्म छूत' होगा। Åधर आना–जाना छूत समझा जाता है। वहाँ कोई भी व्यãि नहीं आते–जाते हैं। पेड़ों की डाली में भी 'महुआ की डाली' को ही शुभ एवं सर्वोŸाम माना जाता है। क्योंकि, महुआ को खाते हैं, एवं फूल सहित फलदार और खीरदार (दूधभरा) होता है। नवजात शिशु के 'नाभी नाल के फूल' को अन्यत्र किसी असुरक्षित जगह दफनाने या कहीं फेंकने का प्रचलन नहीं है। क्योंकि, नाभी के काटने के बाद कटा शेष के झड़ने से इसे भी 'नाभी नाल के फूल' के साथ ही दफनाया जाने का प्रचलन है। हो' समुदाय के मतानुसार 'नाभी नाल के फूल' को किसी असुरक्षित जगह में फेंकना या दफनाना मना है। 'नाभी नाल के फूल' को किसी असुरक्षित जगह में फेंकने या दफनाने से कुŸाा, सियार या बिल्ली आदि के खाने से 'शिशु' बच्चा के लिए खतरा होने का डर बना रहता है। क्योंकि, हो' समुदाय में हमेशा किसी जंगल या पहाड़, नाले आदि आते–जाते रहते हैं। इससे कभी भी उस शिशु बच्चे को जंगली जानवरों का शिकार होना माना जाता है।

(12) गोहाल पूजा स्थान (गोवाँ वोङा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'गोहाल' (गोवाँ) एक परिवार का पाचवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'गोवाँ वोंगा का इष्ट पूजा स्थान' होता है। हो' समुदाय के सभी घरों में गोहाल (गोवाँ) व्यfäगत पूजा–पाठ के लिए होता है। घर के दूसरे कमरे गोहाल (गोवाँ) में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित पूजा स्थान होता है। यह स्थान प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के घर में पाये जाते है। एक परिवार में जितने भी विवाहित व्यfä होते हैं, सबका अलग–अलग गोहाल होता है। मतलब होता है, एक बाप के अगर सात भाईयों में अलग होने से सबका गोहाल सात जगह अलग होते हैं। गोहाल (गोवाँ) में पुराने जमाने से आस्था और विश्वास के साथ 'गोवर्धन पूजा' (गोवाँ वोंगा) सम्पन्न करते आ रहे हैं। इस गोहाल पूजा (गोवाँ वोंगा) में तीन मुर्गा–मुर्गियों की बलि चढ़ाने का रिवाज माना जाता है। गोहाल में प्रत्येक वर्ष एक बार ही पूजा होती है। आरवा चावल की घुण्डी से पाँच खण्ड बनाया जाता है। इस पाँचों खण्ड (कोओंड) में उष्णा चावल (तिकि चउलि) का प्रसाद अर्पण किया जाता है। और उसमें लाल मुर्गा को चुभा कर बलि (हड् करसा) करने का रिवाज है। जैसे (जेमोन):–

(क) एक लाल मुर्गा को 'माङ बुरु' एवं 'देषाउलि' के लिए उष्णा चावल में चुभाकर 'जभ्हे' (करसा) करने का पवित्र रिवाज होता है।

(ख) फिर उसके Åपर आरवा चावल का प्रसाद अर्पण किया जाता है। एक उजला या सफेद मुर्गा को श्रृष्टिकŸाा भगवान (षिळ्ह्बोंगा) के लिए आरवा चावल में चुभा कर 'बलि' (हड् बण्डि:) चढ़ाने का रिवाज है। उसी प्रकार से हो' समुदाय में 'बलि' दो प्रकार से दिया जाता है। अर्थ होता है, एक 'बलि' (हड् करसा) होता है, तो दूसरा भी 'बलि' (हड् बण्डि:) करने का रिवाज पवित्र माना जाता है। ये दोनों अलग–अलग प्रकार से बलि देने का रिवाज होते हैं।

(ग) वन देव (बगिया) के लिए हल्दी की घुण्डी से एक खण्ड बनाया जाता है। और उसमें आरवा चावल का प्रसाद अर्पण किया जाता है। एक काली मुर्गी को वन देव (बगिया) के लिए आरवा चावल में चुभाकर 'बलि' (हड् बण्डि:) चढ़ाने का रिवाज है।

इस गोहाल (गोवाँ) में अपने समुदाय के दूसरे लोगों को भी प्रवेश करना वर्जनीय माना जाता है। क्योंकि, इस स्थान में अपने आदि गउ महरा 'गोवाँ वोंगा' का पवित्र निवास स्थान माना जाता है। इस गोहाल (गोवाँ) में अन्य लोगों के प्रवेश करने पर गोहाल (गोवाँ) को प्रायश्चित करना अनिवार्य माना जाता है। और वह भी 'हल्दी पानी' का झींटा मार कर ही प्रायश्चित करना शुभ माना जाता है। इस गोहाल में अन्य दूसरे समुदाय के लोगों के प्रवेश करने पर एक 'लाल मुर्गा' की 'बलि' (हड् करसा) चढ़ा कर प्रायश्चित करना अनिवार्य माना जाता है। इस गोहाल (गोवाँ) में वर्ष में एक बार मगे पर्व के एक दिन पहले पूजा–पाठ किया जाता है। हो' समुदाय के अनुसार गोवाँ वोंगा को 'गुरि: लोयो' के दिन मनाने का प्रचलन है। हो' जनजाति समुदाय में मुख्य पाँच प्रकार के ही पर्व–त्योहार होते हैं। इन पाँच प्रकार के त्योहारों के उपलक्ष में 'पवित्र अदिङ' में प्रसादी के रूप में भात–दाल, मांस एवं हाँड़िया का भोग चढ़ाया जाता है। गोहाल पूजा नहीं करने पर जंगल, झाड़ियों में चरते समय गायों के खो जाने, मर जाने या रोग– व्याधि से ग्रस्त होने का डर बना रहता है।

(13) गोबर गड्ढा स्थान (गुरि: दुबि टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'गोबर गड्ढा' (गुरि: दुबि) एक परिवार का छठवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट प्रायश्चित स्थान' माना जाता है। हो' समुदाय के सभी परिवारों में अपना अलग गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) व्यfäगत पूजा–पाठ के बाद प्रायश्चित करने के लिए होता है। घर के पिछवाड़े में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित प्रायश्चित करने का स्थान होता है। यह गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के घर में पाये जाते है। गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) में पुराने जमाने से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। इस गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) पाँच प्रकार के पर्व–त्योहारों का 'जूठे पŸाों' को विसर्जन किया जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार पूजा –पाठ के बाद 'जूठे पŸाों' को किसी तालाब या नदी के पानी में विसर्जन करने का रिवाज नहीं है। गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) में प्रत्येक वर्ष 'बड्ताउलि पोरोब्' में 'षाल या सखुआ की डाली' को गाड़ने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(क) प्रत्येक वर्ष 'मगे पोरोब्' के 'जूठे पŸाों' को इसी गोबर गड्ढा (गुरि: दुबि) में फेंक कर 'विसर्जन' करने का पवित्र रिवाज माना जाता है।

(ख) 'बहा पोरोब्' के 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का पवित्र रिवाज माना जाता है।

(ग) 'हेरो् पोरोब्' के 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(घ) 'बड्ताउलि पोरोब्' के 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ङ) 'जोमनमा पोरोब्' के 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(च) नये बच्चों के 'जन्म छूत संस्कार' में 'नोरता' के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(छ) नये बच्चों के 'जन्म छूत संस्कार' में 'एकषिया्' के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ज) किसी के 'विवाह छूत संस्कार' के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(झ) किसी के 'मृत छूत संस्कार' में 'लाश दफन' के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ञ) किसी के 'मृत छूत संस्कार' में 'आत्मा पुकार' के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ट) किसी के 'मृत छूत संस्कार' में 'श्रा) कर्म' (दिरि दुल सुनुम) के समय 'खान–पान' के बाद 'जूठे पŸोंं' को भी इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ठ) हो' समुदाय में इस प्रकार से प्रत्येक 'अशिष्ट छूत संस्कार' के 'जूठे पŸोंं' को भी अपने गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(ड) हो' समुदाय में इस प्रकार से प्रत्येक 'प्रायश्चित संस्कार' के 'जूठे पŸोंं' को भी अपने गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

इस प्रकार से हो' समुदाय में वार्षिक पाँच बार सब 'पर्व–त्योहारों' के 'जूठे पŸोंं' को इसी गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में ही फेंक कर 'विसर्जन' करने का रिवाज पवित्र माना जाता है। अपने ही समाज के किसी भी दूसरे लोगों को 'पर्व–त्योहारों' के 'जूठे पŸोंं' को इस गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में फेंकना या 'विसर्जन' करना वर्जनीय है। क्योंकि, इस स्थान में अपने आदि गउ महरा 'गोवाँ वोंगा' का 'मुख्य स्थान' माना जाता है। इस गोबर गड्ढा (गुरि् दुबि) में अन्य लोगों का अधिकार नहीं है।

(14) स्वाभाविक मत्यु Normal death (सदयय् गोनोए)

(1) हो' समुदाय में बुढ़ापा आने पर मृत्यु होने को स्वाभाविक मृत्यु कहा जाता है। 'स्वाभाविक मृत्यु' की लाश को अपने 'गोत्र के कब्रस्थान' (उकु षासन) में ही 'दफन' (तोपा) करने का पवित्र रिवाज होता है। किसी अन्य गोत्र के कब्रस्थान में दफन करने का रिवाज नहीं है। क्योंकि, अपना और अन्य गोत्र का 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' अलग होते हैं।

(2) उसकी आत्मा को 'पवित्र अदिङ' में 'आत्मा पुकार कर गृह प्रवेश' (रोवाँ केया अदेर) एवं 'प्रायश्चित पूजा प्रवेश' (वोङा अदेर) करने का पवित्र रिवाज होता है।

(3) अन्त में 'कब्र' (षासन) के Åपर में एक पत्थर की जाँताई कर 'श्रा)कर्म तैल नहान' (दिरि दुल सुनुम) करने का पवित्र रिवाज होता है। हो' समुदाय में इस प्रकार से तीन बार में 'मृत छूत संस्कार' को प्रायश्चित करने का रिवाज है।

(15) कबस्थान (उकु षासन)

हो' जनजाति समुदाय में 'कब्रस्थान' (उकु षासन) एक परिवार का सातवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'दफन स्थान' होता है। हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्र (किलि) का अपना अलग–अलग कब्रस्थान होता है। क्योंकि, एक गोत्र के लाश को दूसरे गोत्र के कब्रस्थान में दफनाना वर्जनीय है। क्योंकि, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्र का 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) अलग–अलग होते हैं। उदाहरण के लिए 'देयोगम' एक गोत्र (किलि) होता है। उसी प्रकार से 'बाण्डरा' दूसरा गोत्र (किलि) होता है। 'देयोगम' गोत्र (किलि) के 'कब्रस्थान' में 'बाण्डरा' गोत्र (किलि) के लाश को दफनाना वर्जनीय होता है। क्योंकि, इन दोनों गोत्रों के 'इष्ट गोत्रदेव' (दुपुब दिषुम मरं वोंगा) अलग–अलग होते हैं। 'देयोगम' गोत्र (किलि) के 'कब्रस्थान' में 'बाण्डरा' गोत्र (किलि) के लाश को दफनाने से 'देयोगम' गोत्र (किलि) को 'इष्ट गोत्रदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) दण्ड (दण्डे) करता है। और 'बाण्डरा' गोत्र (किलि) को 'इष्ट गोत्रदेवी' (चनलः दिषुम मरं वोंगा) दण्ड (दण्डे) करती है। अर्थ होता है, जिस गोत्र का लाश होता है, उसे 'इष्ट गोत्रदेवी' (चनलः दिषुम मरं वोंगा) दण्ड (दण्डे) करती है। और जिस गोत्र के 'कब्रस्थान' में दफनाया जाता है, उसे 'इष्ट गोत्रदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) दण्ड (दण्डे) करता है। हो' समुदाय में दो प्रकार के 'कब्रस्थान' (उकु षासन) के प्रचलन होते हैं। जैसेः–

(1) 'स्वाभाविक मृत्यु' का कब्रस्थान और
(2) 'अस्वाभाविक मृत्यु' का कब्रस्थान।

(16) स्वाभाविक मृत्यु का कबस्थान

'कब्रस्थान' (उकु षासन) आदि काल या पुराने जमाने से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' समुदाय के सभी गोत्रों (किलियों) में अपना अलग 'कब्रस्थान' (उकु षासन) व्यf‌ãगत दफन के लिए होता है। हो' समुदाय में एक गोत्र का 'कब्रस्थान' (उकु षासन) अलग से एक होता है। यानि एक गोत्र के 'कब्रस्थान' (उकु षासन) में दूसरे गोत्रों को दफनाना वर्जनीय होता है। क्योंकि, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्रों एवं प्रत्येक परिवार के 'अदिङ' भी अलग–अलग होते हैं। एक गोत्र के अदिङ में उसी गोत्र के लोग पूजा–पाठ कर सकते हैं। एक गोत्र के अदिङ में दूसरे गोत्र के लोग पूजा–पाठ नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार से एक गोत्र के 'कब्रस्थान' (उकु षासन) में उसी गोत्र के लोगों को ही 'दफनाने' का अधिकार है। एक गोत्र के 'कब्रस्थान' (उकु षासन) में दूसरे गोत्र के लोगों को 'दफनाने' का अधिकार नहीं है। प्रत्येक हो' समुदाय के घर के पिछवाड़े में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित स्थान होता है। इसलिए, प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के हर गोत्रों में 'कब्रस्थान' (उकु षासन) अलग पाये जाते है। उसी प्रकार से हो' समुदाय में 'दाह संस्कार' का नियम भी अलग ही होते हैं। हो' समुदाय में 'मृत्यु' को तीन प्रकार से माना जाता है।

हो' समुदाय में प्रकृति (पुदगा्ल) को ही 'भगवान' (षिळ्ह्बोंगा) माना जाता है। इसलिए, 'मृत्यु' को भी प्रकृति के नियम ही माना जाता है। अतः हो' समुदाय के अनुसार 'मृत्यु' भी तीन प्रकार से होने की मान्यता रखते हैं। जैसे (जेमोन)ः–

(अ) 'स्वाभाविक मृत्यु' या 'प्राकृतिक मृत्यु' या 'साधारण मृत्यु' (सदययः गोनोए) Normal death or Natural death or Incidential death.
(आ) 'अप्राकृतिक मृत्यु' (बगइति यन गोनोए) Abnormal death or In-natural death or Accidential death.
(इ) 'जन्म छूत मृत्यु या मृत छूत मृत्यु' (बिषिः–बिट्ल'न गोनोए) – दूसरे अन्य समुदाय में इस प्रकार की मान्यता नहीं होते है।

(17) अस्वाभाविक मृत्यु एवं जन्म छूत मृत्यु का कबस्थान

(1) 'अस्वाभाविक मृत्यु' की लाश को सबसे पहले 'प्रायश्चित' करना आवश्यक होता है। एक लोटा हल्दी पानी से 9 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से 9 बार झींटा जाता है। इसे ही हो' समुदाय में पवित्र प्रायश्चित समझा जाता है।
(2) 'अस्वाभाविक मृत्यु' की लाश को अपने 'कब्रस्थान के बाहर' (उकु षासन अयते तनगा) में 'दफन' (तोपा) करने का पवित्र रिवाज होता है। क्योंकि, 'अस्वाभाविक मृत्यु' की आत्मा को 'कुआत्मा' के नाम से जाना जाता और माना जाता है।
(3) उसकी आत्मा को 'किसी पत्थर या पेड़ के नीचे' (सिङ सुबा, दिरि सुबा, दारु सुबा) में 'आत्मा प्रतिष्ठा' (रोवाँ केया जपः) एवं 'वोङा बड़' करने का पवित्र रिवाज होता है। क्योंकि,

'अस्वाभाविक मृत्यु' की आत्मा 'सुआत्माओं' को अपवित्र कर सकता है। इस प्रकार से घर में अशांति फैलाने का डर बना रहता है।

(4) अन्त में 'घर प्रतिष्ठा' (ओव: हुउम–तुउम, जते परचि) करने का रिवाज होता है। इसमें 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) करने का रिवाज नहीं होता है।

अथवा

'अस्वाभाविक मृत्यु' की लाश को अपने 'कब्रस्थान के बाहर' (उकु षासन अयते तनगा) में ही 'दहन' (उरुब्) करने का पवित्र रिवाज होता है। और उसकी 'अस्थि' (जं) को 'किसी पत्थर या पेड़ के नीचे' (सिळ सुबा्, दिरि सुबा्, दारु सुबा्) में 'दफन' (तोपा) एवं 'बोङा बड्' करने का पवित्र रिवाज होता है।

(5) अन्त में 'घर प्रतिष्ठा' (ओव: हुउम–तुउम, जते परचि) करने का पवित्र रिवाज होता है। इसमें भी स्वाभाविक मौत की तरह 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) करने का रिवाज नहीं होता है।

(18) जन्म छूत मृत्यु (बिषि:–बिट्ल'न गोनोए)

(1) 'जन्म छूत मृत्यु' की लाश को सबसे पहले 'प्रायश्चित' करना आवश्यक होता है। एक लोटा हल्दी पानी में 9 आम की पŸाी एवं 3 धूब घास से 9 बार झींटा जाता है। इसे ही हो' समुदाय में जन्म छूत में मृत्यु छूत का पवित्र प्रायश्चित समझा जाता है।

(2) 'जन्म छूत मृत्यु' की लाश को अपने 'कब्रस्थान के बाहर' (उकु षासन अयते तनगा) में 'दफन' (तोपा) करने का पवित्र रिवाज होता है। कब्र में लाश के साथ एक 'काली मुर्गी का चूज्जा' को भी दफना दिये जाने का पवित्र प्रचलन होता है।

(3) उसकी आत्मा को भी 'किसी पत्थर या पेड़ के नीचे' (सिङ सुबा्, दिरि सुबा्, दारु सुबा्) में ही 'आत्मा प्रतिष्ठा' (रोवाँ केया जप:) एवं 'वोङा बड्' करने का पवित्र रिवाज होता है।

(4) अन्त में 'घर प्रतिष्ठा' (ओव: हुउम–तुउम, जते परचि) करने का पवित्र रिवाज होता है। इसमें 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) करने का रिवाज नहीं होता है।

अथवा

'जन्म छूत मृत्यु' की लाश को अपने 'कब्रस्थान के बाहर' (उकु षासन अयते तनगा) में 'दहन' (उरुब्) करने का पवित्र रिवाज होता है। 'श्मशान' में लाश के साथ एक 'काली मुर्गी का चूज्जा' को भी 'जला' दिये जाने का पवित्र प्रचलन होता है।

(5) उसकी 'अस्थि' (जं) को 'किसी पत्थर या पेड़ के नीचे' (सिङ सुबा्, दिरि सुबा्, दारु सुबा्) में 'दफन' (तोपा) एवं 'बोङा बड्' करने का रिवाज होता है।

(6) अन्त में 'घर प्रतिष्ठा' (ओव: हुउम–तुउम, जते परचि) करने का रिवाज होता है। इसमें भी 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) करने का रिवाज नहीं होता है।

इस प्रकार से खासकर हो' समुदाय में 'कब्रस्थान' दो प्रकार के होते हैं। एक 'स्वाभाविक मृत्यु' का 'कब्र– स्थान' एवं दूसरा 'अस्वाभाविक मृत्यु' संग 'जन्म छूत मृत्यु' का 'कब्रस्थान'। हो' समुदाय में 'स्वाभाविक मृत्यु' की लाश को 'अस्वाभाविक मृत्यु' के 'कब्रस्थान' में दफनाने का रिवाज नहीं होता है। उसी प्रकार से 'अस्वाभाविक मृत्यु' की लाश को भी 'स्वाभाविक मृत्यु' के 'कब्रस्थान' में दफनाने का रिवाज नहीं होता है।

(19) खलिहान पूजा स्थान (कोलोम वोङा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'खलिहान' (कोलोम) एक परिवार का आठवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट लक्ष्मी पूजा स्थान' होता है। 'खलिहान' (कोलोम) आदि काल या पुराने जमाने से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' समुदाय के सभी परिवारों (हगेयां) में अपना अलग 'खलिहान' (कोलोम) व्यäगत 'धान झड़ाई' के लिए होता है। हो' समुदाय में एक गोत्र का 'खलिहान' (कोलोम) एक हो सकता है। परन्तु, अलग परिवार (हगेया) होने से 'खलिहान' (कोलोम) भी अलग हो जाता है। यानि एक गोत्र के 'खलिहान' (कोलोम) में दूसरे गोत्रों

को 'धान झड़ाई' करना वर्जनीय होता है। क्योंकि, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्रों एवं प्रत्येक परिवार के 'अदिङ' भी अलग–अलग होते हैं। एक गोत्र के अदिङ में उसी गोत्र के लोग ही पूजा–पाठ कर सकते हैं। लेकिन, एक गोत्र के अदिङ में दूसरे गोत्र के लोग पूजा–पाठ नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार से एक गोत्र के 'खलिहान' (कोलोम) में उसी गोत्र के लोगों को ही 'धान झड़ाइ करने' का अधिकार है। एक गोत्र के 'खलिहान' (कोलोम) में दूसरे गोत्र के लोगों को 'धान झड़ाई करने' का अधिकार नहीं है। प्रत्येक हो' समुदाय के घर के बगल में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित स्थान होता है। इसलिए, प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के हर गोत्रों में 'खलिहान' (कोलोम) अलग–अलग पाये जाते है।

हो' समुदाय के प्रत्येक परिवार के 'खलिहान' (कोलोम) में दो बार पूजा–पाठ करने का पवित्र रिवाज होता है। पहली बार 'खलिहान' (कोलोम) में इष्ट देवी–देवताओं को प्रायश्चित आह्वान (कोलोम जते–पनरचि) किये जाने का प्रचलन है। और प्रतिदिन सुबह 'खलिहान' (कोलोम) में 'सोम रस' (अदोवा राषि द:अ) अर्पित किया जाता है। 'सोम रस' (अदोवा राषि द:अ) अर्पित करने के बाद ही 'खलिहान' (कोलोम) में कोई काम शुरु किया जाता है। जब तक धान की झड़ाई खत्म न हो जाये तब तक 'खलिहान' (कोलोम) में 'सोम रस' (अदोवा राषि द:अ) अर्पित किया जाता है। अन्त में फसल की झड़ाई खत्म होने पर 'खलिहान विसर्जन' (कोलोम उटा्णि) करने का पवित्र रिवाज होता है। इस 'खलिहान' (कोलोम) पूजा में तीन 'मुर्गा–मुर्गियों' की बलि चढ़ाया जाता है। इस 'खलिहान' (कोलोम) में 'माँ लक्ष्मी' (बाबा एंगा लुकुमि) की पूजा होती है। इस पूजा में पुजारी, पण्डित का स्थान नहीं होता है। साथ में पहाड़, पर्वत, नदी, नाला, तालाब, पोखरे, झील आदि के 'पउँड़ि' (पउइँ), वन देव (बगिया्) एवं देवी–देवताओं की बिदाई पूजा होती है। इस प्रकार से हो' समुदाय में 'खलिहान' (कोलोम) को 'लक्ष्मी मन्दिर' की तरह पवित्र माना जाता है। हो' समुदाय के किसी परिवार के कोई छूत जैसेः– जन्म छूत, मृत छूत होने पर 'खलिहान' (कोलोम) में प्रवेश करना वर्जनीय माना जाता है। और जन्म में जिसके सिर में 'दो चोटी' वालों को, 'षे्ता दाटा' वालों को, 'अमावस्या' के दिन जन्म लेने वालों को, जिसके जन्म में 'नाभी' से लपेटा हुआ होने से, पैर के बल जन्म लेने वालों को खलिहान के अन्दर जाना मना है। किसी औरत के मासिक दौरान, किसी बच्चे के जन्म छूत होने पर, किसी के घर में मृत छूत होने पर बिना प्रायश्चित हुए 'खलिहान' (कोलोम) के अन्दर जाना वर्जनीय माना जाता है।

(20) वंशज महादेव पूजा स्थान (मरं वोंगा टयेङ)

हो' जनजाति समुदाय में 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) एक परिवार का नवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट वंशज पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ एक 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' समुदाय के सभी गोत्रों (किलियों) में अपना अलग 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान व्यäिगत गोत्र के 'पूजा–पाठ' के लिए होता है। इस स्थान में 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) का निवास स्थान माना जाता है। हो' समुदाय में एक गोत्र का 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान एक हो सकता है। परन्तु, अलग गोत्र (किलि) होने से 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान भी अलग हो जाता है। यानि एक गोत्र के 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान में दूसरे गोत्रों को 'पूजा–पाठ' करना वर्जनीय माना जाता है। क्योंकि, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्रों एवं प्रत्येक परिवार के 'अदिङ' भी अलग–अलग होते हैं। एक गोत्र के अदिङ में उसी गोत्र के लोग ही पूजा–पाठ कर सकते हैं। लेकिन, एक गोत्र के अदिङ में दूसरे गोत्र के लोग पूजा–पाठ नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार से एक गोत्र के 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान में उसी गोत्र के लोगों को ही 'पूजा–पाठ करने' का अधिकार है। एक गोत्र के 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान में दूसरे गोत्र के लोगों को 'पूजा–पाठ करने' का अधिकार नहीं है। प्रत्येक हो' जनजाति समुदाय के घर के बगल में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) स्थान होता है। इसलिए, प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के हर गोत्रों में 'वंशज इष्टदेव' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) का स्थान अलग–अलग ही पाये जाते है।

(21) जल देवी पूजा स्थान (नगे एराको अ: वोङा टयेङ)

हो' जनजाति समुदाय में 'जल देवी' (नगे एरा सुउँड्) एक परिवार का दसवाँ अति पवित्र एवं महÿवपूर्ण 'इष्ट गंगा देवी का पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ एक अलग 'जल देवी' स्थान (नगे एरा टयेड्) को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' समुदाय के सभी गोत्रों (किलियों) में अपना अलग 'जल देवी' स्थान (नगे एरा सुउँड्) व्यãगत 'मान्यता' के अनुसार होता है। इस स्थान में 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) का निवास स्थान माना जाता है। हो' समुदाय में एक गोत्र का 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान एक हो सकता है। परन्तु, अलग गोत्र (किलि) होने से 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान भी अलग हो जाता है। यानि एक गोत्र के 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान में दूसरे गोत्रों को 'पूजा–पाठ' करना वर्जनीय होता है। क्योंकि, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्रों एवं प्रत्येक परिवार के 'अदिङ' भी अलग–अलग होते हैं। एक गोत्र के अदिङ में उसी गोत्र के लोग ही पूजा–पाठ कर सकते हैं। लेकिन, एक गोत्र के अदिङ में दूसरे गोत्र के लोग पूजा–पाठ नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार से एक गोत्र के 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान में उसी गोत्र के लोगों को ही 'पूजा–पाठ करने' का अधिकार है। एक गोत्र के 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान में दूसरे गोत्र के लोगों को 'पूजा–पाठ करने' का अधिकार नहीं है। प्रत्येक हो' जनजाति समुदाय के घर या गाँव के बगल में यह एक पवित्र एवं सुरक्षित 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान होता है। इसलिए, प्रत्येक आदिवासी हो' जनजाति के हर गोत्रों में 'जल देवी' (नगे एरा, बिंदि एरा) स्थान अलग ही पाये जाते है।

(22) गाम गइँश्री स्थान (हातु गइँषिरि टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) एक ग्राम का पहला अति पवित्र एवं महÿवपूर्ण 'इष्ट पूजा स्थान' होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) की पूजा–अर्चना गाँव के 'देहरी' (दियुरि) द्वारा सामूहिक रूप से पूजा होती है। इस स्थान को सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है। 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) की पूजा–अर्चना गाँव के 'देहरी' (दियुरि) द्वारा वर्ष में एक बार होती है। जैसेः– शादी–विवाह के समय,

(अ) 'साराती' (ओर एराको) के लोगों के स्वागत (दनारोम) हेतु 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) स्थान में बाजा बजाना अनिवार्य माना जाता है। यह कार्यØम 'दूल्हन के मामा की ओर से' दूल्हन के गाँव के किनारे मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का पवित्र रिवाज होता है। यहाँ 'साराती' (ओर एराको) के स्वागत का बाजा ताल अलग होता है।

(आ) 'साराती' (ओर एराको) एवं 'नयीं दूल्हन' के लोगों के स्वागत (दनारोम) हेतु 'दूल्हा' (बोहोर) के 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) स्थान में बाजा बजाना अनिवार्य है। यह कार्यØम 'दूल्हा के मामा की ओर से' गाँव के किनारे मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का रिवाज होता है। यहाँ 'साराती' (ओर एराको) एवं 'नयीं दूल्हन' के स्वागत का बाजा ताल अलग होता है।

(इ) 'दूल्हा के मामा' (बोहोर अ: कुमा् या मामु) तथा 'दूल्हन के मामा' (कुनिया् अ: कुमा् या मामु) की ओर से दोनों पक्ष से 'दूल्हा' (बोहोर) के घर के आँगन में बेदी के बाहर 'सात फेरा' लगाते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाना अनिवार्य होता है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का ताल बिलकुल अलग ही होता है।

(ई) 'दूल्हा' (बोहोर) तथा 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'श्रीश्री श्रृंगार' (षरिया्ओ षिंगा्र) के समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाना अनिवार्य होता है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का ताल बिलकुल अलग होता है।

(उ) 'दूल्हा' (बोहोर) तथा 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'उपवास एवं व्रत' (काटब् अण्डो: तुरुब्) तोड़ने के समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाना अनिवार्य होता है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का ताल बिलकुल अलग होते हैं।

हो' समुदाय में 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) के लिए 'सोम रस' (अदोवा चउलि रेय: काटब् डिया्ङ राषि द:अ) अर्पण करने का पवित्र रिवाज होता है। इस प्रकार से 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) का 'मान–सम्मान' बड़े आदर के साथ सत्कार करने का पवित्र रिवाज होता है।

(23) जाहेर थान (देषाउलि अण्डो: जयरा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'जाहेर थान' (देषाउलि अण्डो: जयेरा) एक ग्राम का दूसरा अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'आदि श्रृष्टिदेव' (देषाउलि) एवं 'आदि श्रृष्टिदेवी' (जयेरा) का पूजा स्थान होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'जाहेर थान' (देषाउलि अण्डो: जयेरा) में 'आदि श्रृष्टिदेव' (देषाउलि) के रहने के लिए एक 'मन्दिर' (मोण्डोको) होता है। एवं 'आदि श्रृष्टिदेवी' (जयेरा) के रहने के लिए भी एक दूसरा 'मन्दिर' (मोण्डोको) होता है। 'आदि श्रृष्टिदेव' (देषाउलि) के रहने के लिए 'मन्दिर' (मोण्डोको) को जंगल के 'कंटीले सावई घास' से छाँवनी करने का पवित्र रिवाज होता है। इस 'मन्दिर' (मोण्डोको) में चार खूंटा गाड़ कर बनाया जाता है। और वह भी कुवाँरा लड़कों के द्वारा छाँवनी करना पवित्र माना जाता है। चार खूंटा में पूरब की ओर वाला दो खूंटा एक हाथ लम्बा होता है। इसकी लम्बाई और चौड़ाई 3 हाथ 1 बिŸाा 1 Åँगली होती हैं। और बीच में एक खूंटा गाड़ा जाता है। इस 'मन्दिर' (मोण्डोको) में पश्चिम की ओर छाँचा (चाँदाइ) होता है। उसी प्रकार से 'आदि श्रृष्टिदेवी' (जयेरा) के रहने के लिए भी एक दूसरा 'मन्दिर' (मोण्डोको) बनाया जाता है। इस 'मन्दिर' (मोण्डोको) में सात खूंटा गाड़ कर बनाया जाता है। सात खूंटा में बीच वाला एक खूंटा एक हाथ लम्बा होता है। उŸार–दक्षिण से प्रत्येक 60^0 (60 डिग्री) के नाप से 6 खूंटा गाड़ कर 'मन्दिर' के आकार का (चाँदाइ ओड़:) बनाया जाता है। इस मण्डप को भी 'कंटीले सावई घास' से ही छाँवनी करने का पवित्र रिवाज होता है। और वह भी कुवाँरा लड़कों के द्वारा छाँवनी करना ही पवित्र माना जाता है। 'आदि श्रृष्टिदेव' (देषाउलि) एवं 'आदि श्रृष्टिदेवी' (जयेरा) को गाँव के 'देहरी' (हातु दियुरि) के द्वारा सामूहिक रूप से पूजा होती है। इस स्थान को सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है। 'जाहेर थान' (देषाउलि अण्डो: जयेरा) की पूजा–अर्चना गाँव के 'देहरी' (दियुरि) द्वारा वर्ष में एक बार होती है। हो' समुदाय में यहाँ पर पाँच बार पूजा होती हैं। जैसे:–

(1) माँगे पोरोब् में,
(2) बहा पोरोब् में,
(3) हेरो: पोरोब् में,
(4) बड्ताउलि पोरोब् में तथा
(5) जोमनमा पोरोब् के उपलक्ष में।

हो' समुदाय के मतानुसार 'देषाउलि' को एक श्रृष्टि देवता माना जाता है। उसी प्रकार से 'जयेरा' को भी एक श्रृष्टि देवी के रूप में माना जाता है। ये दोनों श्रृष्टि देवी एवं श्रृष्टि देवता को गाँव के अगल–बगल एक सुरक्षित जगह पर पवित्र 'जाहेर थान' रखा जाता है। यहाँ पर प्रत्येक पर्व–त्योहार में गाँव के 'देहरी' (हातु दियुरि) के द्वारा व्रत एवं उपवास के साथ पूजा अर्पण किया जाता है। इन दोनों की खुशीयाली होने से ही ग्रामीण भी खुशीयाली मनाते हैं।

(24) गोट पूजा स्थान (गोहोट वोङा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'गोट पूजा' (गोहोट वोङा) एक ग्राम का तीसरा अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट गोवर्धन पूजा स्थान' होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'गोट पूजा' (गोहोट वोङा) में 'गोव)न' (गउ महरा गोहोट वोंगा) की पूजा–अर्चना गाँव के 'देहरी' (हातु दियुरि) द्वारा सामूहिक रूप से पूजा होती है। इस स्थान को सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है। 'गोव)न' (गउ महरा गोहोट वोंगा) की पूजा–अर्चना गाँव के 'देहरी' (दियुरि) द्वारा वर्ष में एक बार होती है। 'गोट पूजा' (गोहोट वोंगा) एक जंगल का देवता होता है, जो जंगल के जंगली जानवरों से गाँव के पालतू पशुओं की रक्षा एवं देखभाल के लिए होता है। गोहोट वोंगा के नाराज होने या नाखुश होने पर जंगली जानवर जैसे शेर या लकड़बाघ के द्वारा पालतू पशुओं का मारा जाना होता है। इस प्रकार से पालतू पशुओं की रक्षा करने के लिए ही 'गोहोट वोंगा' मानने का प्रचलन हुआ। इसलिए, हो' समुदाय में अति पवित्र उपवास एवं व्रत के साथ 'गोहोट वोंगा' को पूजा करने का पवित्र रिवाज हुआ।

(25) बड़ाम बोंगा हण्डोर एड़: टयेड्

हो' जनजाति समुदाय में 'बड़ाम बोंगा हण्डोर एड़:' एक ग्राम का चौथा अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट बड़ाम पूजा स्थान' होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'बड़ाम बोंगा हण्डोर एड़:' स्थल में

'बड़ाम बोंगा' को गाँव के 'देहरी' (दियुरि) द्वारा सामूहिक रूप से 'बिदाई' होती है। इस स्थान को सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है। 'बड़ाम बोंगा' की पूजा–अर्चना एवं बिदाई गाँव के 'देहरी' (हातु दियुरि) के द्वारा वर्ष में एक बार होती है। हो' समाज में मान्यता है, कि आदि काल में 'रहन–सहन' एवं 'खान–पान' में गलती करने के फलस्वरूप 'बड़ाम बोंगा' ने 'हैजा' जैसा महामारी फैलाना शुरु किया। कई लोग रातों–रात मर भी गये। तब गाँव के देहरी के द्वारा 'झूँपार कर' (रुम नम) के द्वारा पाया गया कि 'बड़ाम बोंगा' ने ही नाराज होकर 'हैजा' जैसा महामारी को फैलाना शुरु किया। इसलिए, इसे खुश कराने के लिए ही प्रत्येक वर्ष 'बड़ाम बोंगा' की पूजा करना शुरु हो गया। आज भी इसे अति पवित्र उपवास एवं व्रत के साथ पूजा–पाठ करने का प्रचलन हुआ। बड़ाम वोंगा के नाराज होने पर ही गाँव में किसी को 'चेचक' (मारि), 'कोढ़ी बीमारी' (तुण्डु बाण्डिया) या 'मिर्गी' (अम्बारि रोगा) जैसे बीमारी होने पर विश्वास करते हैं।

(26) मंत्र पाठशाला स्थान (मोनतोर अकाड़ा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'मंत्र पाठशाला' (मोनतोर अकाड़ा) एक ग्राम का पाँचवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट मनसा एवं मुनि पूजा स्थान' होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'मंत्र पाठशाला' (मोनतोर अकाड़ा) स्थल में '_षि–मुनियों के मंत्र' को गाँव के 'गुरूदेव' (जापन गुरु) द्वारा ग्रामीण चेलाओं या शिष्यों को 'यंत्र–मंत्र–तंत्र' की शिक्षा दी जाती है। इस स्थान को सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है। 'मंत्र पाठशाला' (मोनतोर अकाड़ा) में '_षि–मुनियों' की पूजा–उपासना की जाती है। साथ में 'माँ मनसा' (मोन षहाय माइ) की पूजा–उपासना की जाती है। और गाँव के 'गुरूदेव' (जापन गुरु) द्वारा वर्ष में एक बार बिदाई होती है। प्रत्येक वर्ष इस 'मंत्र पाठशाला' में मंत्र शिक्षा दान के लिए 'रोहिणी' का आयोजन होता है। इस संस्थान में 'मंत्र पाठ' की शिक्षा ग्रहण करना 'माँ दूर्गा पूजा' के दिन अन्त किया जाता है। इस संस्थान में ही 'पवित्र दासाँय' नाच का आयोजन किया जाता है। और 'मंत्र पाठशाला' (मोनतोर अकाड़ा) के आखरी कार्यØम को 'डाक मनसा' में अन्त किया जाता है।

(27) नाच–गान अखाड़ा (षुसुन अकाड़ा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'नाच–गान अखाड़ा' (अकाड़ा) एक ग्राम का छठवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'मनोरंजन स्थान' होता है। इस स्थान को आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'नाच–गान अखाड़ा' (अकाड़ा) में ही पाँचों त्योहारों की नाच–गान का आयोजन होता है। इस अखाड़ा में ही 'मगे पोरोब्' के उपलक्ष में 'मगे नाच–गान' का आयोजन होता है। फिर इस अखाड़ा मे ही 'बहा पोरोब्' के उपलक्ष में भी 'बहा नाच–गान' का आयोजन होता है। इस अखाड़ा मे ही 'हेरो: पोरोब्' के उपलक्ष में भी 'हेरो: नाच–गान' का आयोजन होता है। और इसी अखाड़ा मे ही 'बड्ताउलि पोरोब्' के उपलक्ष में 'बड्ताउलि नाच–गान' का आयोजन होता है। फिर इस अखाड़ा में ही 'जोमनमा पोरोब्' के उपलक्ष में भी 'जोमनमा नाच–गान' का भी आयोजन होता है।

हो' समुदाय की परम्परा के मतानुसार 'शादी–विवाह' रचाना बारह महीनों में दस महीना शुभ माना जाता है। सिर्फ दो महीने ही 'शादी–विवाह' रचाना अशुभ माना जाता है। हो' समुदाय में 'पौष मास' तथा 'भादो मास' को 'शादी–विवाह' रचाना 'अति अशुभ' माना गया है। क्योंकि, 'पौष मास' को 'शादी–विवाह' रचाने पर 'धन हानि' का दोष माना गया है। फिर 'भादो मास' को 'शादी –विवाह' रचाने पर 'मान हानि' का दोष माना गया है। 'शादी–विवाह' के उपलक्ष में भी 'शादी–विवाह' की नाच एक महीना पहले से सीखा जाता है। क्योंकि, 'शादी–विवाह' की नाच अनेक प्रकार की होती हैं। 'शादी–विवाह' के उपलक्ष में 'शादी–विवाह' की नाच प्रकृति के कार्यकलाप के अनुकूल होती हैं। क्योंकि, 'शादी–विवाह' की नाच 'खेती गृहस्थी' से सम्बन्धित होती हैं। इस नाच में तीनों प्रकार के संस्कारों को दर्शाता है। गाँव में किसी परिवार के 'झगड़ा–झंझट' होने पर इस 'नाच–गान अखाड़ा' में ही 'ग्रामीण पंच' द्वारा फैसला सुनाया जाता है। इसलिए 'नाच–गान अखाड़ा' को 'ग्रामीण न्यायालय' का दर्जा भी दिया गया है। इसलिए इस स्थान को आदि काल से सार्वजनिक रूप से अति पवित्र एवं सुरक्षित रखा जाता है।

(28) खेल का मैदान (इनुङ गोड़ा)

हो' जनजाति समुदाय के प्रत्येक गाँव में एक सुरक्षित सातवाँ स्थान होता है। बच्चों को खेलने के लिए आदि काल से एक मैदान को सुरक्षित रखा जाता है। इस मैदान में तरह–तरह के खेलों का आयोजन होता है। हो' जनजाति में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं। जैसेः– फुटबॉल (चिण्डु इनुङ) का खेल, सेकोर इनुङ, कबड्डी (किड्किड् इनुङ), चुउर इनुङ, काति इनुङ, मिण्डि रोपो:, कुण्टाओ चि सुरद्, कच: चि कब:, स्पोर्ट्स खेल (लपापह: इनुङ) आदि खेले जाते हैं। हो' समुदाय में विभिन्न _तुओं में विभिन्न प्रकार के खेल खेले जाते हैं। लड़कों के लिए अलग खेल खेले जाते हैं। उसी प्रकार से लड़कियों के लिए भी अनेक प्रकार के खेल खेले जाते हैं। इस प्रकार के आयोजनों से आपसी समरसता एवं भाईचारा बढ़ता है। विभिन्न प्रकार के खेलों का लोग आनन्द उठाते हैं। इस खेलों में प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है।

(29) आषाढ़ी पूजा स्थान (अषाड़िया् वाङा टयेङ्)

हो' जनजाति समुदाय में 'आषाढ़ी पूजा' (अषाड़िया् वोङा) एक ग्राम सीमा स्तर का आठवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट वर्षा देव पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'आषाढ़ी पूजा' (अषाड़िया् वोङा) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। चूँकि, हो' समुदाय खेती का काम करते हैं, खेती करने के लिए अच्छी वर्षा होना अनिवार्य होता है। प्रत्येक ग्राम स्तर पर अच्छी वर्षा होने के लिए 'ग्राम गइँश्री' एवं 'वनदेव' पउँड़ि को खुश कराना होता है। इसलिए, 'ग्राम गइँश्री' एवं 'वनदेव' पउँड़ि की पूजा होती है। इस पूजा में एक बकरे या भेंड़ की बलि चढ़ाकर पूजा की जाती है। इस पूजा में बकरा या भेंड़ का मांस सिर्फ मर्द लोग ही बाहर गाँव के सीमा में खाते–पीते हैं। यह स्थान भी अति पवित्र एवं सुरक्षित माना जाता है। इस पूजा में गर्भधारण औरत के पति को भी मांस खाना वर्जनीय होता है। प्रत्येक वर्ष आषाढ़ महीने में यह पूजा निश्चित रूप से होती है। समय पर वर्षा न होने पर आषाढ़ी पूजा के देहरी को एक पेड़ में उल्टा बाँध दिया जाता है। लोगों में मान्यता है कि ऐसे देहरी को एक पेड़ में उल्टा कर बाँध देने से वर्षा निश्चित रूप से होती है। यह पूजा प्रत्येक ग्राम में सम्पन्न करने का रिवाज है। इस स्थान में 'जंगल के पउँड़ि' का अस्थायी निवास स्थान माना जाता है।

(30) जन्ताल पूजा स्थान (जनताड़ा वोङा टयेङ्)

हो' जनजाति समुदाय में 'जन्ताल पूजा' (जनताड़ा वोङा) एक ग्राम पंचायत स्तर का नवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट पउणि देव पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'जन्ताल पूजा' (जनताड़ा वोङा) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। चूँकि, हो' समुदाय एवं अन्य समुदाय खेती का काम करते हैं, खेती करने के लिए अच्छी वर्षा होना अनिवार्य होता है। प्रत्येक पंचायत स्तर पर अच्छी वर्षा होने के लिए प्रत्येक 'ग्राम गइँश्री' एवं 'वनदेव' पउँड़ि को खुश कराना होता है। इसलिए, सामूहिक 'ग्राम गइँश्री' एवं 'वनदेव' पउँड़ि की पूजा होती है। इस पूजा में प्रत्येक ग्राम से एक बकरे या भेंड़ की बलि चढ़ाकर पूजा की जाती है। साथ ही सामूहिक रूप से एक भैंसा की बलि भी चढ़ाया जाता है। इस पूजा में भी बकरा या भेंड़ का मांस सिर्फ मर्द लोग ही बाहर जंगल के सीमा में खाते–पीते हैं। यह स्थान भी अति पवित्र एवं सुरक्षित माना जाता है। इस पूजा में गर्भधारण औरत के पति को भी मांस खाना वर्जनीय होता है। प्रत्येक वर्ष आषाढ़ महीने में यह पूजा निश्चित रूप से होती है। समय पर वर्षा न होने पर जन्ताल (जनतड़ा) पूजा के देहरी को एक पेड़ में उल्टा बाँध दिया जाता है। लोगों में मान्यता है कि ऐसे देहरी को एक पेड़ में उल्टा कर बाँध देने से वर्षा निश्चित रूप से होती है। यह पूजा प्रत्येक पंचायत में सम्पन्न करने का रिवाज है। इस स्थान में 'जंगल के पउँड़ि' का स्थायी निवास स्थान माना जाता है।

(31) हर जाण्टा बोङा टयेङ्

हो' जनजाति समुदाय में 'हर जाण्टा बोङा' एक 'ग्राम' का दसवाँ अति महŸवपूर्ण 'इष्ट शनिदेव पूजा स्थान' होता है। हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार 'हर जाण्टा बोगा' की पूजा प्रत्येक गाँव के बाहर चौराहों में सम्पन्न करने का रिवाज होता है। क्योंकि, हो' जनजाति समुदाय का कोई दूसरे 'मन्दिर' भी नहीं होते हैं। आदि काल से प्रकृति में आस्था और विश्वास के साथ एक 'हर जाण्टा बोङा' के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हर जाण्टा बोङा प्रत्येक गाँव के किनारे या बाहर चौराहों

में ही होता है। क्योंकि, गाँव के अन्दर दूबारा प्रवेश न कर जाये। दूबारा इस गाँव में प्रवेश करने पर किसी दूसरों को भी फिर आØमण करते हैं। और उनलोगों को भी सतात रहता है। क्योंकि, यह एक शैतान आत्मा ही होती है।

(32) असगुन पूजा स्थान (एरे बोङा एड़: टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'असगुन पूजा' (एरे बोङा एड़:) एक हो' जनजातियों का ग्यारहवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट ग्रह–नक्षत्र पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'असगुन पूजा' (एरे बोङा एड़:) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' जनजाति समुदाय में शादी–विवाह के पूर्व दूल्हा एवं दूल्हन के घर आने–जाने में जो अशुभ या असगुन देखा जाता है, उसे पूजा कराना आवश्यक माना गया है। हो' समुदाय के मतानुसार दोनों पक्षों के बीच जो गाँव पड़ता है, वहाँ 'असगुन पूजा' (एरे बोङा एड़:) का आयोजन होता है। हो' समुदाय के प्रत्येक गाँव में गाँव के किनारे चौराहों में सम्पन्न करने का रिवाज है। क्योंकि, हो' जनजाति समुदाय का कोई 'मन्दिर' नहीं होते हैं। यह 'असगुन पूजा' (एरे बोङा एड़:) आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ चली आ रही है।

(33) वनभोज स्थान (बोड़ोबुळ्जि टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'वनभोज' (बोड़ोबुळ्जि) एक विभिन्न सामाजिक संगठन का बारहवाँ अति पवित्र एवं महŸवपूर्ण 'इष्ट रोग–व्याधि पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'वनभोज' (बोड़ोबुळ्जि) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। 'आकस्मिक दुर्घटना से मृत आत्माओं के निवास स्थान' में ही प्रत्येक गाँव में 'वनभोज' (बोड़ोबुळ्जि) करने का रिवाज है। चूँकि, हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार गाँव में किसी के 'आकस्मिक दुर्घटना से मृत होने पर लाश को 'कब्रस्थान' से अलग जगह दफनाने का रिवाज है। और उसकी आत्मा को अपने 'अदिङ' में केया अदेर नहीं किया जाता है। उन सबों की आत्माएँ इस 'वनभोज' (बोड़ोबुळ्जि) स्थान में निवास करते हैं। यदि वर्ष में 'वनभोज' (बोड़ोबुळ्जि) नहीं किया जाये तो ये आत्माएँ हमें सताती रहेगी। और अन्त में तरह–तरह की कष्ट एवं पीड़ाएँ पैदा करेंगी। इस प्रकार से रोग–व्याधि आदि होने की आशंका होगी। इस स्थान को गाँव के लोग 'झूँपार' (रुम नम) के द्वारा चयन किया जाता है।

(34) छाता मेला स्थान (चाता पोरोब् टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'छाता मेला' (चाता पोरोब्) एक विभिन्न सामाजिक संगठन का तेरहवाँ अति पवित्र, महŸवपूर्ण एवं 'इष्ट कुबेर पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ एक 'छाता मेला' (चाता पोरोब्) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' समुदाय के मतानुसार, 'चोनदोन पाट' एक पवित्र नारी पउँड़ि (पउँणि या पउइँ) होती हैं। आदि काल में यही पउणि मनुष्यों को पहनने के लिए तसर के कपड़े आदि दी थी। खाने–पीने के लिए काँसा के वर्तन, औरतों के लिए सोना और चाँदी के गहने आदि दी थी। 'बड्ताउलि पोरोब्' में गलती होने और औरतों के 'पउँड़ि स्थान' में छूत होने से 'पउँड़ि' ने दण्ड दिया। इस छूत के दण्डस्वरूप औरतों के सारे वर्तन एवं सोना–चाँदी के गहने आदि ओझल हो गये। तब गाँव में बैठकी हुई, बैठकी में निर्णय हुआ कि 'झूपार' के द्वारा खोजा जाये। अन्त में झूँपार किया गया। झूँपार के द्वारा तय हुआ कि सारे श्रृंगार आदि 'चोनदोन बुरु' की 'चोनदोन पाट' वापस ले ली है। उसे खुश कराना अनिवार्य होगा, उनके खुश होने से सारे सोना–चाँदी के गहने लौटा देगी। तब उनलोगों ने छाता मेला का आयोजन करने का फैसला हुआ। 'छाता मेला' का आयोजन करने से औरतों के सारे सोना–चाँदी के गहने लौटा दी। तब से आज तक 'छाता मेला' का आयोजन अति उत्साह एवं उमंग के साथ किया जाने का रिवाज हुआ। इसलिए, इस छाता मेला में औरत लोग सोना और चाँदी के पूरे गहने सज–धज कर मेला जाती हैं। बहुत से लोग इस छाता मेला के रस्म को आजकल भूल सा गये, इसे सिर्फ आमोद–प्रमोद का जरिया मानने लगे है। इसलिए, इस छाता मेला में हाथ से हाथ मिलाकर 'नाच–गान' करने का रिवाज हुआ। इस छाता मेला में बाजा का बाजा ताल इस प्रकार बजाया जाता है। जैसेः–

(1) हुजु: त्नको हुजु: त्न, सेनो: तनको सेनो: तन!
तिसिङ गेचाको नपम तन, गपा सेत्:को सेनो: चं!!
(2) हुजु:कोदो हुजु:पे, सेनो:कोदो सेनो:पे!

तिसिङ निंदा् तइनपे, गपा सेत: सेनो:पे!!

(35) करमा पूजा स्थान (कारम वोङा टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'करमा पूजा' (कारम वोङा) एक विभिन्न सामाजिक संगठन का चौदहवाँ अति पवित्र, महŸवपूर्ण एवं 'इष्ट बीजांकुर पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'करमा पूजा' (कारम वोङा) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। इस स्थान में ही 'करमा देवता' की पूजा होती है। इस स्थान में ही रात को जागरण होता है। रात भर 'करमा देवता' की कहानी सुनाया जाता है। कहीं–कहीं पर पवित्र 'करमा देवता' का 'जतरा पाठ' भी किया जाता है। इस 'जतरा पाठ' में करम देवता को खुश करने के लिए तरह–तरह के आयोजन भी किया जाता है। इस जतरा पाठ में अलग–अलग समुदाय के लोग बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। इस तरह से हमारे समुदाय में दूसरे समुदाय से आपसी सद्भावना के साथ रहते हैं।

(36) शैतान की बिदाई स्थान (बगिया् हण्डोर एड़:् टयेड्)

हो' जनजाति समुदाय में 'शैतान की बिदाई' (बगिया् हण्डोर एड़:) एक विभिन्न सामाजिक संगठन का पन्द्रहवाँ अति पवित्र, महŸवपूर्ण एवं 'इष्ट शैतान पूजा स्थान' होता है। आदि काल से आस्था और विश्वास के साथ 'शैतान की बिदाई' (बगिया् हण्डोर एड़:) के लिए एक स्थान को सुरक्षित रखते आ रहे हैं। हो' जनजाति समुदाय के मतानुसार, 'शैतान की बिदाई' (बगिया् हण्डोर एड़:) का कार्यØम वर्ष में एक बार किया जाता है। और वह 'मगे पोरोब्' के आखरी दिन यानि 'हर मगेया' के दिन ही मनाया जाता है। हो' समुदाय के अनुसार, शैतान को 'बगिया्' कहा जाता है। इसकी बिदाई इसलिए किया जाता है, कि ग्राम में अनिष्ट घटना न हो। इस शैतान के मौजूद होने पर ग्राम में तरह –तरह की कठिनाईयाँ होती हैं। तरह–तरह की पीड़ा, रोग, व्याधि, अनिष्ट एवं आकस्मिक दुर्घटनाएँ आदि होते हैं।

इसलिए, हो' समुदाय के मतानुसार 'हर मगेया' के दिन ही 'कुक्कुर दाँत' यानि 'अभिशाप दाँत' (ष्ता दाटा) के बच्चों को 'कुक्कुर विवाह' (ष्ता अणादि) करने का रिवाज हुआ। ऐसे बच्चों को अगर 'कुक्कुर विवाह' (ष्ता अणादि) नहीं किया जाए तो 'अभिशाप के शिकार' होते हैं। और वह अभिशाप के शिकार में 'अनिष्ट', 'अशिष्ट', 'व्यभिचार', 'दुष्ट' एवं 'चोरी–डकैती' जैसे कुकर्म में परिवर्तन हो जाता है। जैसेः–किसी धोखा में फँसना, कोई आत्मीय चीज ही खो जाना, आकस्मिक दुर्घटना होना, सर्पदंश होना, बाघहरण होना, वज्रपात से घायल होना या मरना, पानी में डूबना या डूब कर मरना, आत्म हत्या करना, जहर खाकर मरना, आग में जल कर घायल होना या मरना, किसी की माँ–बहन की इज्जत लूटना, किसी का सामान लूटना, चोरी करना, छिनतई करना आदि इनके अनेक उदाहरण हैं।

(37) सामूहिक माँगे पोरोब्

हो' जनजाति समुदाय में सबसे बड़ा 'पर्व' (पोरोब्) माँगे पोरोब् होता है। 'माँगे पोरोब्' कुल आठ दिनों के मनाये जाते हैं। इन 'माँगे पोरोब्' पर्व–त्योहारों को आठ दिन में आठ चरण के रूप में सम्पन्न किया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) अनादेर,
(2) गउ महरा,
(3) ओते इलि,
(4) हे:् साकम,
(5) गुरि्् लोयो,
(6) माँगे मरं पोरोब्
(7) जतारा पोरोब् तथा
(8) हर माँगेया आदि के नाम से प्रसि) हैं।

हो' समुदाय में माँगे पोरोब् एक सामूहिक पर्व–त्योहार माना जाता है। हो' समुदाय में इसे 'श्रृष्टि का त्योहार' के नाम से जाने और माने जाते हैं। मगर, प्रत्येक घर में (उ) गुरि्् लोयो एवं (Å) मरं पोरोब् के दिन ही 'अदिङ' में पूजा का भोग चढ़ाने का रिवाज है। हो' समुदाय में एक खासियत है, कि 'रुउङ साकम' में ही भोग चढ़ाने का रिवाज होता है। इस त्योहार में सखुआ या साल के पŸाों में भोग नहीं चढ़ाया जाता है। इन दो दिनों को हो' समुदाय के प्रत्येक घर में परिवार के कोई एक व्यæ 'अदिङ' में भोग चढ़ाने का रिवाज अनिवार्य है। इसमें कोई ओझा, गुनि,

पण्डित, दियुरि, एण, देयोवाँ का होना जरूरी नहीं होता है। इस उपलक्ष में कुम्हार का नया भात हण्डी को 'अदिङ' में चढ़ाया जाता है। 'अदिङ' में भात–दाल एवं हाँड़िया का भोग अनिवार्य रूप से चढ़ाया जाता है। माँगे पोरोब् के उपलक्ष में दाल में 'नइ रम्बाह' (जंगली बरबटी) को बिना हल्दी, तैल, मशाला, नमक से बनाया जाता है। इस दाल को भात एवं हाँड़िया के साथ 'अदिङ' में इष्ट देवी–देवताओं के लिए अर्पित किया जाता है। माँगे पोरोब् के उपलक्ष में 'रुउङ साकम' के बिना 'त्योहार' मनाना बेकार माना जाता है। उसी प्रकार से दाल में भी 'नइ रम्बाह' (जंगली बरबटी) के बिना 'त्योहार' मनाना बेकार माना जाता है। इस त्योहार में सादा 'रुउङ साकम' का तीन कोण वाला दोना (कालगि) का प्रचलन होता है। भात को इसी दोना (कालगि) में ही पूजा के लिए 'अदिङ' में सजाया जाता है। उसी तरह से दाल के लिए भी दो सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) वाला एक दोना (चुकदि) का प्रचलन होता है। सिझा हुआ दाल को इसी दोना (चुकदि) में ही पूजा के लिए 'अदिङ' में सजाया जाता है। दो सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में चार–चार जगह भात–दाल का भोग चढ़ाने का पवित्र रिवाज है। पहला एक सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में चार जगह जीवित पउँड़ि (जिइड् पउइँ) के लिए भोग चढ़ाने का रिवाज है। इन चार जीवित पउँड़ि (जिइड् पउइँ) के नाम इस प्रकार हैं। जैसे (जेमोन):–

(1) राँगा पाट,
(2) चोनदोन पाट,
(3) आ':् वोंगा एवं बिर वोंगा तथा
(4) षुक्न जतारा के लिए भोग चढ़ाया जाता है।

दूसरा एक सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में चार जगह 'वंशज देवी–देवताओं' के लिए भोग चढ़ाने का रिवाज है। इन चार 'वंशज देवी–देवताओं' के नाम इस प्रकार हैं। जैसे (जेमोन):–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा,
(2) चनल:् दिषुम मरं वोंगा,
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को तथा
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को एवं चनल:् दिषुम दुउम हो'को के लिए भोग चढ़ाने का रिवाज हुआ।

(38) अदिङ में माँगे पोरोब्

हो' समुदाय के मतानुसार 'माँगे पोरोब्' के उपलक्ष में 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में भोग चढ़ाना अनिवार्य है। एवं दाल में 'जंगली बरबटी' (नइ रम्बाह उतु) का भोग या प्रसाद चढ़ाना अनिवार्य है। कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और नया हण्डी में ही 'जंगली बरबटी' (नइ रम्बाह) को सिझाया जाता है। इसमें हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि नहीं दिया जाता है। क्योंकि, 'अदिङ' के भोग में हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि वर्जनीय है। 'अदिङ' में सादा दो 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में 4–4 जगह कुल 8 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज है। पहला एक सादा 'सियाली पŸाा' में 4 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज है। पहला सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) का भोग पाँच श्रृष्टि 'पउँड़ि' देवी–देवताओं (पउइँ वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) राँगा पाट (श्रृष्टि देवता),
(2) चोनदोन पाट (श्रृष्टि देवी),
(3) आ':् वोंगा (श्रृष्टि देवता) तथा बिर वोंगा (श्रृष्टि देवता) और
(4) षुक्न जतारा (श्रृष्टि देवता)।

दूसरा एक सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में भी 4 जगह ही भोग चढ़ाने का रिवाज है। दूसरा सादा 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) का भोग चार इष्ट वंशज देवी–देवताओं (दुपुब् बोंषो वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा (आदि वंशज देवता),
(2) चनल:् दिषुम मरं वोंगा (आदि वंशज देवी),
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को (आदि वंशज देवता पुत्र) और
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को (आदि वंशज देवता पुत्री) तथा चनल:् दिषुम दुउम हो'को (आदि वंशज देवी पुत्री)।

साथ में पेय के लिए तीन 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) का सादा दोना (मुलि पुउ:्) बनाया जाता है। पहला एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवताओं के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। दूसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवियों के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। और तीसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में धोने के लिए पानी अर्पित किया जाता है।

(39) अनादेर

'अनादेर' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'पहला चरण' होता है। 'अनादेर' शब्द 'अदेर' fØया से बना 'संज्ञा' शब्द होता है। 'अदेर' का सरल अर्थ होता है 'प्रवेश करना' या 'अन्दर आना'। इस प्रकार से 'अनादेर' का तात्पर्य होता है, 'माँगे पोरोब्' के 'बिषय प्रवेश'। हो' समुदाय के मतानुसार 'माँगे पोरोब्' के 'बिषय प्रवेश' को ही 'अनादेर' के नाम से जाना जाता है। चूँकि, हो' समुदाय में 'जाहेर थान' (देषाउलि अण्डो: जयेरा) में ही देवी–देवताओं को गाँव के दियुरि पूजते हैं। 'जाहेर थान' में दो प्रकार के मन्दिर (मोण्डोको) घर स्थान होते हैं। एक 'देवता' (कोवा वोंगा) के रहने के लिए तथा दूसरा 'देवी' (कुइ वोंगा) के रहने के लिए होते हैं। 'देवता' (कोवा वोंगा) के रहने के लिए घर स्थान को 'देषाउलि' टयेड् कहा जाता है। उसी प्रकार से 'देवी' (कुइ वोंगा) के रहने के लिए घर स्थान को 'जयेरा' टयेड् कहा जाता है। उन दोनों के लिए रहने के स्थान को सामूहिक रूप से 'जाहेर थान' के नाम से प्रसि) है। 'देषाउलि' के रहने के लिए घर को जंगली 'काँटेदार सावई घास' (सायुउ बुसु:) से छाँवनी करने का रिवाज है। उसी प्रकार से 'जयेरा' के रहने के लिए घर को भी जंगली 'काँटेदार सावई घास' (सायुउ बुसु:) से ही छावनी करने का रिवाज है। और वह भी 'कुवाँरा' व्यfã के द्वारा ही छाँवनी करने का रिवाज है।

हो' समुदाय के मतानुसार प्रत्येक वर्ष 'अनादेर' के दिन 'देषाउलि' एवं 'जयेरा' स्थान को साफ–सफाई किया जाने का रिवाज है। इस दिन से 'देषाउलि' एवं 'जयेरा' वोंगा की पूजा–पाठ के लिए तैयारी किया जाता है। 'जाहेर थान' स्थान की साफ–सफाई एवं उनके निवास स्थान के घर की छाँवनी आदि करना ही 'अनादेर' के नाम से प्रसि) है। इसलिए, हो' समुदाय में मान्यता के अनुसार 'अनादेर' के दिन नयीं चीजे लाना या खरीदना 'अति शुभ' माना जाता है। इस दिन कोई नयीं चीजें खरीदने से 'जयेरा एवं देषाउलि' अति खुश होते हैं। साथ में इष्ट पाँचों देवी–देवताएँ भी खुशी पाते हैं। इसलिए, हो' समुदाय में 'अनादेर' के दिन औरत लोग अपने साड़ी, गहने, कपड़े, खाने के वर्तन आदि खरीदने का रिवाज है। और मर्दाना लोग अपने लिए, गाड़ी, हल–बैल, शिकार खेलने का सामान, तीर, धनुष, जाल, जिम्बिरि, पासे, काति आदि खरीदने का रिवाज है। इस दिन को अगर कोई भी अपने लिए जरूरत की चीजें खरीदते एवं बनाते हैं। तो इसे हो' समुदाय के लिए शुभ माना जाता है।

(40) गउ महरा

'गउ महरा' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'दूसरा चरण' होता है। चूँकि, हो' समुदाय की पेशा खेतीवारी करना होता है। इस समुदाय में खेती के समय अपने पशुओं की देखभाल के लिए 'गोप' (गउ) लोगों को रखा गया है। 'गोचरण' एवं 'गोपालन' के लिए एक विशेष 'गोप' (गउ) सम्प्रदाय के साथ आपसी सम्बन्ध बनाये रखा है। हो' समुदाय के 'शादी–विवाह' के उपलक्ष में 'गोप' (गउ) औरतों के द्वारा 'हल्दी बाँटना' एवं 'हल्दी लेपन' में इन सबका सहयोग रहा है। पवित्र गोबर से लिपाई–पोताई करना, होलोङ से 'अल्पना बनाना' आदि इन सबका सहयोग रहा है। अन्य 'दिरि दुल सुनुम' के उपलक्ष में भी 'गोप' (गउ) मर्दों का सहयोग रहा है। इसलिए, हो' समुदाय में 'गोप' (गउ) सम्प्रदाय को पहला स्थान देने के लिए उनको 'आदर–सत्कार' किये जाने का प्रचलन हुआ। चूँकि, हो' समुदाय के 'शादी–विवाह' एवं 'दिरि दुल सुनुम' आदि में इनके बिना अधूरा लगता है। 'शादी–विवाह' के उपलक्ष में 'गोनोङ हाड़ा' हर के समय 'गोप' (गउ) मर्द लोगों का हाथ होता है। इसलिए, इनके आदर सत्कार के लिहाज से 'तिरिल सोटा' एवं एक 'हेन्दे कटुलि' मुर्गी देने का रिवाज है।

'गउ महरा' एक सघन जंगल के 'वनदेव' (बुरु बगिया) होता है। इस 'वनदेव' (बुरु बगिया) को खुश कराने के लिए ही 'गउ महरा' का आयोजन होता है। चूँकि, हो' समुदाय में इसका लिखित शास्त्र नहीं है। सिर्फ मौखिक रूप से इसकी कहानियाँ बुजुर्ग लोगों से सुनने को मिलता है। गाँव के बाहर एक टीले में हर वर्ष 'गउ महरा पोरोब्' का आयोजन होता है। इस आयोजन में गाय चराने वाला 'गउ' को 'वनदेव' (बुरु बगिया) के सवारी माना जाता है। और 'वनदेव' (बुरु बगिया) को खुश कराने के लिए टीले के चारों ओर 'गउ' को घुमाया जाता है। इस प्रकार से 'गउ' उस टीले को गाय की तीन बार हुंकार के साथ अपने सींग से धूँसते हुए तोड़ता है। ऐसे सात चक्कर वामावŸर्ी दिशा काटना और उस टीले को गाय की तीन बार हुंकार के साथ अपने सींग से तोड़ते हुए दियुरि के आंगन आ जाता है। इस प्रकार से ऐसे सात चक्कर

में कुल इक्कीस बार हुंकार करता है। वहाँ गाय की इक्कीस बार हुंकार आवाज के साथ गायों के 'गोहाल' (गोवाँ) में प्रवेश करता है। तब 'दियुरि एरा' उस 'गउ' को लोटा में पानी लेकर हल्दी पानी से झींटकर प्रायश्चित करता है। अन्त में उसे और उनकी पत्नी को नया कपड़ा देकर पहनाती है। और खाने–पीने के लिए भोजन देती है। बिदाई के समय उनको एक हण्डी हाँड़िया, चावल–दाल आदि देकर बिदाई करते हैं।

लोगों में मान्यता है कि 'गउ' जो वर्ष भर 'पशुओं' को वन या जंगल–झाड़ी आदि में चराया करते हैं, हमारे पशुओं को जंगल के कोई जंगली पशु से 'वनदेव' (बुरु बगिया्) ही बचाते हैं। इस 'वनदेव' (बुरु बगिया्) के नाखुश होने से जंगली पशु आदि शिकार करते हैं। इस प्रकार से हमारे पालतु पशुओं को जंगली पशुओं से 'वनदेव' (बुरु बगिया्) हमेशा रक्षा करते है। इसलिए, हो' समुदाय में प्रत्येक वर्ष 'गउ महरा पोरोब्' मनाने का रिवाज हुआ।

(41) ओते इलि

'ओते इलि' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'तीसरा चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'ओते इलि' का अर्थ इस प्रकार होता है। 'ओते' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'जमीन या पृथ्वी'। और 'इलि' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'उपवास एवं व्रत के साथ नया हण्डी में बना हुआ आरवा चावल का पवित्र हाँड़िया जो हाथ से चिपा हुआ।' इसलिए, 'ओते इलि' का अर्थ होता है, इस पृथ्वी या धरती माता को हाँड़िया अर्पण करना।

हो' समुदाय के मतानुसार आदि काल में इस संसार में सिर्फ आत्मा रूप से पाँच देवी–देवताएँ ही मौजूद थे। इस संसार में एक सघन 'पवित्र लुकु पर्वत' (पुनुर'न लुकु बुरु) मौजूद था। यहाँ इस पर्वत में अनेक प्रकार के जंगली जानवर रहते थे। 'पवित्र लुकु बुरु' में आदि मानव 'पवित्र लुकु कोड़ा' का 'अवतार' (उंदुब्) हुआ था। हो' समुदाय के मतानुसार यह एक 'पवित्र आदि नर मानव' था। इनकी देख–रेख एवं पालन–पोषण करने का दायित्व उन पाँच आत्मा देवी–देवताओं के Åपर था। आदि काल के उन पाँच आत्मा रूपी देवी–देवताओं के नाम इस प्रकार माना जाता है। जैसेः–

(1) माङ बुरु,
(2) देषाउलि,
(3) पउइँ,
(4) जयेरा तथा
(5) गोवाँ वोंगा आदि।

इस प्रकृति में आत्मा रूपी भगवान (षिळ्ह्बोंगा) की असीम अनुकम्पा से 'पवित्र लुकु कुड़ि' का 'प्रायश्चित' (जतेन) हुआ था। हो' समुदाय के मतानुसार यह एक 'पवित्र आदि नारी मानव' थी। इनकी देख–रेख एवं पालन–पोषण करने का दायित्व भी उन पाँच आत्मा देवी–देवताओं के Åपर ही था। इन दोनों आदि मानव (नर–नारी) की देख–भाल एवं पालन–पोषण करना इन पाँचों देवी –देवताओं ने अति ध्यानपूर्वक करते थे। उस समय पहनने के लिए कोई वस्त्र एवं कपड़े आदि नहीं थे। इसलिए, वे दोनों नंगे बदन ही रहते थे। समय के अनुकूल 'मार्गशीर्ष' (षुक्न) माह में पवित्र नारी 'लुकु कुड़ि' का 'मासिक _तु' श्राव का प्रारम्भ हुआ था। उस काल में अन्य कोई भी मनुष्य जन्म नाम के नहीं थे। अपने शरीर से 'मासिक _तु' का श्राव होना आश्चर्य एवं भयावह बिषय था। पवित्र 'लुकु कुड़ि' का ज्ञान इस बिषय में नहीं था। इसलिए, वह एक जंगली लत 'सियाली लत' (रुउङ नाइ) की झाड़ी में सो गई थी। उसे सपने में 'माता जाहिरा' (जयेरा मा) का दर्शन हुआ। माता जाहिरा ने ही 'सियाली लत' (रुउङ नाइ) के पŸोंं से अपना बदन ढाँकने के लिए बतायी। और 'सियाली लत' (रुउङ नाइ) की डोरी के इस्तेमाल करने के लिए बतायी। तब से पवित्र लुकु कोड़ा और पवित्र लुकु कुड़ि के द्वारा चिथड़ा पहनना (मुलि बोतोए् चि डुडु बोतोए्) प्रारम्भ हुआ। 'माता जाहिरा' (जयेरा मा) ने ही जिस स्थान में मासिक श्राव का खून गिरा उसको गोबर से लेपने का पवित्र ज्ञान बतायी। और उस स्थान में हाँड़िया अर्पण करने का और हाँड़िया पीने का भी पवित्र ज्ञान बतायी। अगले वर्ष से 'सियाली लत' (रुउङ नाइ) के पŸोंं का दोना (मुलि पुउ:) बनाकर हाँड़िया अर्पण करने का भी पवित्र आदेश दी। अगले वर्ष उस दिन से हो' समुदाय में हाँडिया पूजा करने का रिवाज शुरू हुआ। इसलिए, प्रत्येक वर्ष उस अवसर पर **ओते इलि** मनाने का रिवाज हुआ।

हो' समुदाय में 'ओते इलि' के दिन 'देहरी' (दियुरि) के हाथ में 'सियाली लत' (रुउङ नाइ) के पŸाों का दोना (मुलि पुउ:) बनाकर हाँड़िया अर्पण करता है। प्रत्येक घर से हाँड़िया लाकर 'देहरी' (दियुरि) के हाथ में पकड़ा दोना में हाँड़िया डाला जाता है। यह हाँड़िया देहरी पीता नहीं है, बल्कि हाँड़िया डालकर जमीन पर गिराता है। 'ओते' का अर्थ होता है, यह 'पृथ्वी या जमीन' और 'इलि' का अर्थ होता है, आरवा चावल से बना पवित्र हाँड़िया (इलि)।

(42) हे: साकम

'हे: साकम' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'चौथा चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'हे: साकम' का अर्थ इस प्रकार होता है। 'हे:' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'तोड़ना'। और 'साकम' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'पŸाा'। 'हे: साकम' का सही अर्थ होता है, 'माँगे पोरोब्' के आयोजन के लिए 'पŸाा तोड़ना'। हो' समुदाय में अपने उपयोग के लिए पŸाा तोड़ने पर कोई दोष नहीं होता है। मगर, 'पूजा–पाठ' या अन्य अनुष्ठानों में पŸाा तोड़ने पर दोष माना जाता है। इसलिए, 'हे: साकम' में पŸाा तोड़ने के लिए जब औरत लोग जंगल जाती हैं, तो गाँव के किनारे 'गइँश्री' (गइँषिरि) में 'हाँड़िया का मेयाँ' (डिया्ङ माया) अर्पण करने का रिवाज है। और जंगल के किनारे 'वनदेव' (बुरु बगिया)' को कोई 'पत्थर या पŸाा' आदि देना अनिवार्य माना जाता है। ऐसा नहीं करने पर 'गइँश्री' (गइँषिरि) और 'वनदेव' (बुरु बगिया)' का उल्लंघन माना जाता है। गइँश्री एवं वनदेव को उल्लंघन करने पर जंगल में कोई अनहोनी होने की आशंका पैदा होती है। क्योंकि, 'माँगे पोरोब्' के उपलक्ष में नये–नये मेहमान आते हैं। उन सबको आदर–सत्कार करना, खिलाना–पिलाना अति जरूरी होता है। खिलाने–पिलाने के लिए उतने पात्र या बर्तन आदि मौजूद नहीं होते हैं। खाने–पीने के लिए पŸाा होना अति आवश्यकता होती हैं। इसलिए, पŸाा तोड़ने के लिए जंगल जाना जरूरी होता है। इन सब में थोड़ी सी भी असावधानी होने से बड़ी–बड़ी घटनाएँ आदि होती हैं। इन सारे विपŸिायों से बचने के लिए ही 'हे: साकम' का कार्यØम सम्पन्न किया जाता है। हे: साकम में गाँव के 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) एवं 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) को आदर एवं सम्मान देने का रिवाज है। गाँव के किनारे 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) को 'हाँड़िया का मेयाँ' (मायाँ) अर्पण करने का रिवाज है। उसी प्रकार से 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) को 'कोई पेड़ की डाली' या 'पत्थर' आदि अर्पण करने का रिवाज है।

(43) गुरि: लोयो

'गुरि: लोयो' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'पाँचवाँ चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'गुरि: लोयो' का अर्थ इस प्रकार होता है। 'गुरि:' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'गोबर का लेपना'। और 'लोयो' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'गोबर लेपन के रात का शुभशुभ वाणी'। 'गुरि: लोयो' का सही अर्थ होता है, 'माँगे पोरोब्' के आयोजन के लिए 'माँगे पोरोब् के पूर्व संध्या का शुभाशुभ संकेत वाणी' जानना। इस रात को विशेषकर 'देहरी' (दियुरि), 'देहरी पत्नी' (दियुरि एरा), 'जोम षुइम', (ओरोङ षकोवाँ), (ल: गुरि:), (गो: बहरि), (डकुवा्) आदि निशिपालन या व्रत (तुरुब्) करते हैं।

निशिपालन या व्रत (तुरुब्) का सरल अर्थ होता है। गुरि: लोयो की पवित्र रात को खटिया में सोना वर्जनीय माना जाता है। और उनलोगों को अपनी पत्नी के साथ भी सोना मना है। उनलोग रात को किसी 'जंगली खजूर की चटाई' (किंदड् किता् रेय: जाटि) में ही सोते हैं। हो' समुदाय में उसके पहले 'दियुरि लोग' ही 'गुरि: लोयो' की रात को निशिपालन या व्रत (तुरुब्) नहीं किया। ऐसा करने पर 'मगे मरं पोरोब्' के दिन 'लाल मुर्गा–मुर्गी' चारा नहीं खोंपे। जाहेर थान में उस समय 'खराब गाली' (मगेय तेय:) बकना शुरू हुआ। तब जाकर 'लाल मुर्गा–मुर्गी' चारा खोंपना शुरू किया। उस समय से 'दियुरि लोग' निशिपालन या व्रत (तुरुब्) करना बन्द कर दिया। इसलिए, उस समय से अभी तक 'खराब गाली' (मगेय तेय:) बकना शुरू हुआ। इस त्योहार में मर्द लोग जब औरत लोगों के जनन अंग के बारे में 'खराब गाली' (मगेय तेय:) बकना शुरू हुआ। औरत लोग भी मर्द लोगों के जनन अंग के बारे में 'खराब गाली' (मगेय तेय:) बकना शुरू हुआ। इस प्रकार से 'पवित्र माँगे पोरोब्' को अब् बदनामी होने का शिकार हुआ।

(44) मरं पोरोब्

'मरं पोरोब्' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'छठवाँ चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'मरं पोरोब्' का अर्थ इस प्रकार होता है। 'माँगे' का शब्दार्थ एवं सरल अर्थ होता है, 'माँ ही' यानि 'माता ही' यानि 'धरती माता ही'। मुझे जन्म देने वाली मेरी माँ होती है। तुझे जन्म देने वाली तेरी माँ होती है। उसको जन्म देने वाली उसकी माँ होती है। लेकिन, प्रकृति में हम सबको जन्म देने वाली धरती माँ या धरती माता ही होती है। हो' समुदाय के मतानुसार इस धरती में दो शãयाँ होती हैं। एक नर शã gksrh gS vkSj दूसरी नारी शã gksrh gSaA gks* leqnk; esa नर शã dks ^ns"kkmfy* ds uke ls ekus tkus dk fjokt gSaA mlh izdkj ls ukjh शã dks ^t;sjk* ds uke ls ekus tkus dk fjokt gSaA blfy, gks* leqnk; esa ^ns"kkmfy* ,oa ^t;sjk* dks ^firk ,oa ekrk* ds lerqY; ekuk tkrk gSA blfy,] firk rqY; ^ns"kkmfy* dks ^yky eqxkZ* dh cfy ¼gM~ djlk½ p<+kdj iwtk fd;k tkrk gSA mlh izdkj ls ekrk rqY; ^t;sjk* dks ^yky eqxhZ* dh cfy ¼gM~ djlk½ p<+kdj iwtk fd;k tkrk gSA

चूँकि, 'माँगे मरं पोरोब्' श्रृष्टि का पर्व–त्योहार है। हम मानव का जन्म स्थान अपनी माँ का गर्भाशय होता है। और 'गर्भाशय' की परत संख्या भी सात होती हैं। जिस 'गर्भाशय' में हम नौ माह सात दिन में जीवन दान पाते हैं। माँ का 'गर्भाशय' की परत संख्या का जय–जयकार करना अनुचित नहीं होगा। इसलिए, मुर्गा एवं मुर्गी की बलि चढ़ाते समय 'जय–जयकार आह्वान' करने का रिवाज हुआ। जैसेः–

''कुइहोनको अ: मगेदो अइया् बंगाला दलोबो: अ! अउ मगे!!''
''कोवाहोनको अ: मगेदो अइया् कुण्टु बिड़ो: अ! अउ मगे!!''

इस प्रकार के 'जय–जयकार आह्वान' करने का रिवाज सिर्फ और सिर्फ 'जाहेर थान' (जयेरा–देषाउलि) में ही होता है। देषाउलि के बाहर, रास्ते में एवं घर में नहीं। इस प्रकार से इस 'जय–जयकार आह्वान' को आजकल दूसरे अर्थ के रूप में प्रचलन होने लगा है। जो 'खराब गाली' (मगेय तेय:) बकने के रूप में प्रचलन शुरू हुआ। यह एक गंभीर सा बिषय होने लगा है। अब हमें अपनी संस्कृति को पहचानना होगा। इस पर संस्कार रूप से शोध करना जरूरी होगा। उचित एवं अनुचित को समझना होगा, जो उचित होगा इस पर ठोस कदम रखना होगा। यह एक साम्प्रदायिक एवं सामाजिक दायित्व होता है। हो' समुदाय के मतानुसार इस संसार में पाँच प्रकार के ही 'जीव–जन्तुएँ' होते हैं। जो पिछले अध्याय में स्पष्ट रूप से बताया गया है। इसलिए, हो' समुदाय के मतानुसार सब मनुष्य एवं सारे जीव–जन्तुओं की श्रृष्टि, पोषण एवं उ)ार के लिए ही 'माँगे पोरोब्' के त्योहार मनाये जाने का रिवाज हैं। इस त्योहार में आरवा चावल की घुण्डी से बारह खण्ड बनाये जाने का रिवाज है। इन बारह खण्डों में बारह राशियों (रइषको) के लिए ऐसा प्रचलन हुआ। बारह राशियों के नाम इस प्रकार हैं। जैसेः–

(1) मेष राशि (बोड़ो: रइष),
(2) वृष राशि (सेरोम रइष),
(3) मिथुन राशि (दाबि रइष),
(4) कर्क राशि (कुवा्म रइष),
(5) सिंह राशि (सुपु रइष),
(6) कन्या राशि (लइइः रइष),
(7) तुला राशि (तिह रइष),
(8) वृश्चिक राशि (बुलिड् रइष),
(9) धनु राशि (बुलु रइष),
(10) मकर राशि (मुकुइ रइष),
(11) कुम्भ राशि (कुरचु काटा रइष),
(12) मीन राशि (काटा तलका रइष),

हो' समुदाय के मतानुसार, इन सबके लिए ही 'सोम रस' (नमा चाटु रे काटब्–तुरुब् ते अदोवा चउलि रेय: डियाङ राषि द:अ दोड़ोमे तेय:) का 12 कोचोम्बा में अर्पण करने का रिवाज है।

(45) जतारा पोरोब्

'जतारा पोरोब्' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'सातवाँ चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'जतारा पोरोब्' का अर्थ इस प्रकार होता है। हो' समुदाय में 'माँगे पोरोब्' के उपलक्ष में पूजा करने वाला वंशज की पूजा को 'जतारा पोरोब्' कहा जाता है। वंशज यानि पूर्वज से 'देहरी' (दियुरि) का काम किया। किसी

कारणवश 'माँगे पोरोब्' के उपलक्ष में पूजा करना बन्द कर दिया हो। जैसेः–

(1) प्रथम ग्राम देहरी (हातु दियुरि) के आकस्मिक निधन होने से 'रुम नम' करने का रिवाज होता है। 'रुम नम' में जो चयन होता है, वह ग्राम देहरी (हातु दियुरि) का काम करता है। और उनके परिवार में कोई एक या अपनी सन्तान को 'जतारा पोरोब्' करने का रिवाज होता है। मगर पूजा–पाठ बन्द नहीं कर सकता है। जतारा पोरोब् में ग्रामवासी कोई चन्दा या सहयोग नहीं करता है। क्योंकि, जतारा पोरोब् एक वंशज पूजा सम्पन्न करने का रिवाज हैं

(2) ग्राम देहरी (हातु दियुरि) यदि निःसन्तान होकर मरने पर 'रुम नम' के द्वारा दूसरा ग्राम देहरी (हातु दियुरि) का चयन करने का रिवाज होता है। यदि उनके सगे भाईयों में 'देषाउलि' एवं 'जयेरा' की अनुकम्पा हो जाये तो वह परिवार 'जतारा पोरोब्' करता है। उनको भी ग्रामवासी कोई चन्दा या सहयोग नहीं करता है। क्योंकि, जतारा पोरोब् एक वंशज पूजा सम्पन्न करने का रिवाज हैं

(3) ग्राम देहरी (हातु दियुरि) के मरने के पश्चात् अगर उसका पुत्र को ग्राम देहरी (हातु दियुरि) काम पसन्द न करने से दूसरे ग्राम देहरी (हातु दियुरि) को 'रुम नम' के द्वारा चयन किया जाता है। दूसरा ग्राम देहरी (हातु दियुरि) 'माँगे पोरोब्' की पूजा करता है, और पहला ग्राम देहरी (हातु दियुरि) का पुत्र को 'जतारा पोरोब्' पूजा करना अनिवार्य होता है।

हो' समुदाय में इस प्रकार से देहरी दो प्रकार के होते हैं। एक 'माँगे पोरोब् के देहरी' (माँगे दियुरि) तथा दूसरा 'जतारा पोरोब् के देहरी' (जतारा दियुरि)। इन दोनों प्रकार के दियुरि में जतारा दियुरि 'वंशज' माना जाता है।

(46) हर मगेया या हर बगिया्

'हर मगेया या हर बगिया्' एक 'पवित्र माँगे पोरोब्' का 'आठवाँ' और 'आखरी चरण' होता है। हो' समुदाय के मतानुसार 'हे: साकम' के रोज 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) को निमन्त्रण के रूप में अपने गाँव बुलाया गया था। उस बुरु बगिया् को बिदाई करना अति आवश्यक है। 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) का निवास स्थान सघन जंगल होता है। इसलिए, जतारा पोरोब् खत्म होने पर उसे बिदाई देना आवश्यक होता है। क्योंकि, औरत लोग 'हे: साकम' के रोज कोई 'पेड़ की डाली' या 'पत्थर रख कर' 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) को अपने गाँव आने के लिए निमन्त्रण दिये थे। उन्हें जंगल से पŸा एवं 'लम: फल' लाने के लिए और सुरक्षित घर वापस आने के लिए उनसे वादा किये थे। औरतों को जंगल के जंगली पशुओं, बाघ–भालूओं से 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) ने बचाव का काम किया एवं सुरक्षित घर वापस भेजा। इसलिए, उनके लिए ही लौटती एवं बिदाई के समय एक 'काली मुर्गी' एवं 'बीरी' अर्पण करने का रिवाज है। 'हर मगेया' के दिन 'मगे' (खराब गाली) अन्त हो जाता है, और 'वनदेवता' (बुरु बगिया्) को बिदाई किया जाता है। बनदेवता को अगले वर्ष ऐसे समय के इन्तजार का वादा किया जाता है। उसके बाद 'मुनगा शाग के डंडे' से उनके रास्ते को बन्द कर दिया जाता है। आज भी देखने को मिलता है, किसी व्यfä को 'मुनगा शाग के डंडे' से पीटने से वह व्यfä 'नामर्द' या 'बाँझपन' का शिकार होता है। और पका हुआ 'लम: फल' (रुउङ जोह) के फटने से उसके बीज से जिस किसी को भी शरीर में लगने से उसे जंगल का बाघ या शेर का शिकार होता है। अतः जानकारों के मुताबिक, उस व्यfä को 'बल एड़:' करना अनिवार्य होता है। 'बल एड़:' का कार्यØम नहीं कराने पर आकस्मिक दुर्घटना आदि होना समझा जाता है। 'बगइति' या अन्य 'बिरळ्जि' से मौत होना समझा जाता है।

इसलिए, जन्म दोष में 'कुक्कुर दाँत' (षेता दाटा) वाले व्यfäयों को 'हर मगेया' के दिन ही 'कुक्कुर विवाह' (षेता आँ'दि) कराने का रिवाज हुआ। 'कुक्कुर विवाह' (षेता आँ'दि) में जो गीत गाया जाता है, वह एक 'अचूक मन्त्र' होता है।

(अ) लड़की या बच्ची के 'कुक्कुर विवाह' (षेता आँ'दि) के समय का 'सगुन मन्त्र गीत' (मोनतोर दुरा्ङ) इस प्रकार होते हैं। जैसेः–

(1) माइ तलेदो, अले तलेदो! –2
ताणि रेए जोम केन! –2
ताणि मेङ–मेङ! –2
बाबु तपेदो, अपे तपेदो! –2
केचो: रेए जोम केन! –2
केचो: केंदोलं! –2

(2) माइ तलेदो, अले तलेदो! –2
साल–साल तेए हुजुः लेन!
बेड़ा–बेड़ा तेए रकब् लेन!
साल ओते लेकोए–चेण्डोए!
बेड़ा ओते बड़ार–बुडुर!

बाबु तपेदो, अपे तपेदो! –2
गाड़ा–गाड़ा तेए हुजुः लेन!
बुरु–बुरु तेए रकब् लेन!
गाड़ा कुदा् रेण्डो–चेण्डो!
बुरु कुला् लेमके–लेण्डोङ!

(आ) लड़का या बच्चा के 'कुक्कुर विवाह' (षे्ता आँ'दि) के समय का मन्त्र गीत (मोनतोर दुरा्ङ) इस प्रकार हैं। जैसेः–

(1) बाबु तलेदो, अले तलेदो! –2
ताणि रेए जोम केन! –2
ताणि मेङ–मेङ! –2

माइ तपेदो, अपे तपेदो! –2
केचोः रेए जोम केन! –2
केचोः केंदोलं! –2

(2) बाबु तलेदो, अले तलेदो! –2
साल–साल तेए हुजुः लेन!
बेड़ा–बेड़ा तेए रकब् लेन!
साल ओते लेकोए–चेण्डोए!
बेड़ा ओते बड़ार–बुडुर!

माइ तपेदो, अपे तपेदो! –2
गाड़ा–गाड़ा तेए हुजुः लेन!
बुरु–बुरु तेए रकब् लेन!
गाड़ा कुदा् रेण्डो–चेण्डो!
बुरु कुला् लेमके–लेण्डोङ!

(47) अदिङ में बहा पोरोब्

हो' समुदाय में 'बहा पोरोब्' 'दूसरा पवित्र त्योहार' माना जाता है। 'बहा पोरोब्' के उपलक्ष में 'अदिङ' में 'सखुआ पŸाा' (षरजोम साकम) एवं दाल में 'गोटा मसूर दाल' (गोटा मसुरि उतु) का भोग या प्रसाद होना अनिवार्य है। कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और नया हण्डी में ही 'गोटा मसूर दाल' (गोटा मसुरि उतु) को भी सिझाया जाता है। इसमें हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि नहीं दिया जाता है। 'अदिङ' में सादा दो 'सखुआ पŸाा' (रुउङ साकम) में 4–4 जगह कुल 8 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज पवित्र माना जाता है। पहला एक सादा 'सखुआ पŸाा' में 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। पहला एक सादा 'सखुआ पŸाा' का भोग पाँच श्रृष्टि 'पउँड़ि' देवी–देवताओं (पउइँ वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन)ः–

(1) राँगा पाट (श्रृष्टि देवता),
(2) चोनदोन पाट (श्रृष्टि देवी),
(3) आ':् वोंगा (श्रृष्टि देवता) तथा बिर वोंगा (श्रृष्टि देवता) और
(4) षुक्न जतारा (श्रृष्टि देवता)।

दूसरा एक सादा 'सखुआ पŸाा' में भी 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। दूसरा सादा 'सखुआ पŸाा' का भोग चार इष्ट कूलदेवी–देवताओं (दुपुब् बोंषो वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन)ः–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवता),
(2) चनल्ः दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवी),
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को (आदि कूलदेवता पुत्र) और
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को तथा चनल्ः दिषुम दुउम हो'को (आदि कूलदेवी पुत्री)।

साथ में पेय के लिए तीन 'सखुआ पŸाा' (षरजोम साकम) का सादा दोना (मुलि पुउः) बनाया जाता है। पहला एक सादा दोना (मुलि पुउः) में इन देवताओं के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। दूसरा एक सादा दोना (मुलि पुउः) में इन देवियों के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। और तीसरा एक सादा दोना (मुलि पुउः) में धोने के लिए पानी अर्पित किया जाता है।

(48) अदिङ में हेरोः पोरोब्

हो' समुदाय में 'हेरोः पोरोब्' 'तीसरा पवित्र त्योहार' माना जाता है। 'हेरोः पोरोब्' के उपलक्ष में 'अदिङ' में 'सियाली पŸाा'

(रुउङ साकम) एवं दाल में 'गोटा बीरी या उड़द' (गोटा रम्बाह उतु) का भोग या प्रसाद होना अनिवार्य है। कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और नया हण्डी में ही 'गोटा बीरी' (गोटा रम्बाह उतु) सिझाया जाता है। इसमें हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि नहीं दिया जाता है। 'अदिङ' में सादा दो 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) में 4–4 जगह कुल 8 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज है। पहला एक सादा 'सियाली पŸाा' में 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। पहला सादा 'सियाली पŸाा' का भोग पाँच श्रृष्टि 'पउँड़ि' देवी–देवताओं (पउइँ वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) राँगा पाट (श्रृष्टि देवता),
(2) चोनदोन पाट (श्रृष्टि देवी),
(3) आ':् वोंगा (श्रृष्टि देवता) तथा बिर वोंगा (श्रृष्टि देवता) और
(4) षुक्न जतारा (श्रृष्टि देवता)।

दूसरा एक सादा 'सियाली पŸाा' में भी 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। दूसरा सादा 'सियाली पŸाा' का भोग चार इष्ट कूलदेवी–देवताओं (दुपुब् बोंषो वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवता),
(2) चनल:् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवी),
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को (आदि कूलदेवता पुत्र) और
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को तथा चनल:् दिषुम दुउम हो'को (आदि कूलदेवी पुत्री)।

साथ में पेय के लिए तीन 'सियाली पŸाा' (रुउङ साकम) का सादा दोना (मुलि पुउ:्) बनाया जाता है। पहला एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवताओं के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। दूसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवियों के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। और तीसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में धोने के लिए पानी अर्पित किया जाता है।

(49) अदिङ में बड्ताउलि पोरोब्

हो' समुदाय में 'बड्ताउलि पोरोब्' 'चौथा पवित्र त्योहार' माना जाता है। 'बड्ताउलि पोरोब्' के उपलक्ष में 'अदिङ' में 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) एवं 'पŸाा में बना जंगली मड्डुआ रोटी' (साकम रे रप:् तेय:् गुँदुलि लड्) का भोग या प्रसाद होना अनिवार्य है। कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और 'पŸाा में लपेट कर जलाया जंगली मड्डुआ' (साकम रे रप:् तेय:् गुँदुलि लड्) अर्पण किया जाता है। इसमें हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि नहीं दिया जाता है। 'अदिङ' में सादा दो 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) में 4–4 जगह कुल 8 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज है। पहला एक सादा 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) में 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। पहला सादा 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) का भोग पाँच श्रृष्टि 'पउँड़ि' देवी–देवताओं (पउइँ वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) राँगा पाट (श्रृष्टि देवता),
(2) चोनदोन पाट (श्रृष्टि देवी),
(3) आ':् वोंगा (श्रृष्टि देवता) तथा बिर वोंगा (श्रृष्टि देवता) और
(4) षुक्न जतारा (श्रृष्टि देवता)।

दूसरा एक सादा 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) में भी 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। दूसरा सादा 'कोरकोटा पŸाा' (कोरकोटा साकम) का भोग चार इष्ट कूलदेवी–देवताओं (दुपुब् बोंषो वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवता),
(2) चनल:् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवी),
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को (आदि कूलदेवता पुत्र) और
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को तथा चनल:् दिषुम दुउम हो'को (आदि कूलदेवी पुत्री)।

साथ में पेय के लिए तीन 'सखुआ पŸाा' (षरजोम साकम) का सादा दोना (मुलि पुउ:्) बनाया जाता है। पहला एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवताओं के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। दूसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में इन देवियों के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। और तीसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:्) में धोने के लिए पानी अर्पित किया जाता है।

(50) अदिङ में जोमनमा पोरोब्

हो' समुदाय में 'जोमनमा पोरोब्' 'पाँचवाँ पवित्र त्योहार' माना जाता है। 'जोमनमा पोरोब्' के उपलक्ष में 'अदिङ' में 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) एवं दाल में 'गोटा मूँग दाल' (गोटा मुंगि उतु) का भोग या प्रसाद होना अनिवार्य है। कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और नया हण्डी में ही 'गोटा मूँग दाल' (गोटा मुंगि उतु) सिझाया जाता है। इसमें हल्दी, तैल, मशाला, नमक आदि नहीं दिया जाता है। 'अदिङ' में सादा दो 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) में 4–4 जगह कुल 8 जगह भोग चढ़ाने का रिवाज है। पहला एक सादा 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) में 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। पहला सादा 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) का भोग पाँच श्रृष्टि 'पउँड़ि' देवी–देवताओं (पउइँ वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) राँगा पाट (श्रृष्टि देवता),
(2) चोनदोन पाट (श्रृष्टि देवी),
(3) आ': वोंगा (श्रृष्टि देवता) तथा बिर वोंगा (श्रृष्टि देवता) और
(4) षुक्न जतारा (श्रृष्टि देवता)।

दूसरा एक सादा 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) में भी 4 जगह भोग चढ़ाया जाता है। दूसरा सादा 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) का भोग चार इष्ट कूलदेवी–देवताओं (दुपुब् बोंषो वोंगा–बुरुको) के लिए चढ़ाया जाता है। जैसे (जेमोन):–

(1) दुपुब् दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवता),
(2) चनल: दिषुम मरं वोंगा (आदि कूलदेवी),
(3) दुपुब् दिषुम हा'म हो'को (आदि कूलदेवता पुत्र) और
(4) दुपुब् दिषुम दुउम हो'को तथा चनल: दिषुम दुउम हो'को (आदि कूलदेवी पुत्री)।

साथ में पेय के लिए तीन 'भेलिया पŸाा' (षोसो साकम) का सादा दोना (मुलि पुउ:) बनाया जाता है। पहला एक सादा दोना (मुलि पुउ:) में इन देवताओं के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। दूसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:) में इन देवियों के लिए 'हाँड़िया' अर्पित किया जाता है। और तीसरा एक सादा दोना (मुलि पुउ:) में धोने के लिए पानी अर्पित किया जाता है।

(51) स्वाभाविक मृत्यु (सदय': गोनोए) Normal death

हो' समुदायों में 'दफन' (तोपा) करने का पवित्र रिवाज को 'प्राकृतिक' Natural माना जाता है। और 'दहन' (उरुब्) करने का रिवाज को 'अप्राकृतिक' या कृत्रिम Abnormal (Arti-ficial) माना जाता है। इसलिए, हो' समाज में 'स्वाभाविक मृत्यु' होने पर अपने ही 'कव्रस्थान' (उकु षासन) में दफन किया जाता है। अपने 'कव्रस्थान' (उकु षासन) में 'उŸार–दक्षिण दिशा' (काँदुवा्–जाँबारा जना) पैर–सिर कर दफनाने का रिवाज पवित्र माना जाता है। और बाद में उसकी आत्मा को अपने ही 'पवित्र वंशदेव इष्ट पूजा स्थान' (पुनुर अदिङ) में 'आत्मा–पुकार' (केया अदेर तथा बोङा अदेर) किया जाता है। लाश को 'उŸार–दक्षिण दिशा' North-South pole (काँदुवा्–जाँबारा जना) पैर–सिर कर दफन करने का रिवाज इसलिए हुआ, कि 'उŸार–दक्षिण दिशा' चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का 'धनात्मक–_णात्मक आवेश' (पोर्र–ओब् योङ) Positive-Negative charge को प्राप्त करता है। मनुष्य के 'जीवित शरीर' में सिर में चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) का 'धनात्मक आवेश' (पोर्र योङ) होता है, और पैर में चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) का '_णात्मक आवेश' (ओब् योङ) होता है। इसलिए, मनुष्य के मृत शरीर में सिर में चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) का '_णात्मक आवेश' (ओब् योङ) होता है, और पैर में चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) का 'धनात्मक आवेश' (पोर्र योङ) होता है। इसलिए, हो' समुदाय में 'उŸार– दक्षिण दिशा' (काँदुवा्–जाँबारा जना) पैर–सिर कर दफनाने का रिवाज को पवित्र माना जाता है।

हो' समुदाय में स्वर्ग–नरक पर आस्था नहीं है। इसलिए, स्वाभाविक मौत Normal death होने पर उनकी 'आत्मा' को 'पवित्र अदिङ' में पुकार कर प्रवेश कराये जाने का प्रचलन हुआ। उसके उपरान्त 'पवित्र अदिङ' में एक मुर्गी की बलि (हड् करसा) चढ़ा कर 'वोङा अदेर' करने का रिवाज है। और अन्त में 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) करने का रिवाह है। इस प्रकार के प्रचलन को हो' समुदाय में पवित्र माना जाता है।

(52) अस्वाभाविक मृत्यु Ab-normal death or Accidential death

हो' समुदाय के मतानुसार, अस्वाभाविक मौत इन सबको कहा जाता है। जैसेः–

(1) बज्रपात से मरना, आग से जल कर मरना, बिजली के करण्ट से मरना, विस्फोट से मरना, भूकम्प से मरना, गोली–बन्दूक आदि से मरना।
(2) आकस्मिक दुर्घटना से मरना, छूरी, तलवार आदि से मरना, पेड़ से गिर कर मरना, ऑपरेशन के दौरान मरना, Post-mortem का लाश।
(3) पानी में डूब कर मरना।
(4) जंगली जानवरों के द्वारा मारा जाना, किसी पेड़ से गिर कर मरना, साँप कटी से मरना, जहर खाने से मरना, आत्म–हत्या कर मरना, जल कर आत्म–हत्या करना।
(5) कोढ़ी बीमारी (तुण्डु बाँडिया्) से मरना, मिरगी बीमारी (आँबारि) से मरना, पागल (बाया–तुता्) व्यäियों का मरना।
(6) एक ही परिवार के मृत छूत में दूसरा मृत छूत होना।
(7) अन्तर्विवाह होने के बाद दूल्हा का मरना, दूल्हन का मरना।
(8) नया शिशु का जन्म छूत में शिशु का मरना, नया शिशु का जन्म छूत में माँ का मरना।
(9) शादी के तुरन्त बाद और जोम इसिङ के पूर्व दूल्हन का मरना, शादी के तुरन्त बाद और जोम इसिङ के पूर्व दूल्हा का मरना आदि।

(53) हो' जनजाति समुदाय में वेद (बेएद)

परिभाषा (पोरताड़) Definitionः– ब्रह्माण्ड में प्रकृति (पुदगा्ल) के सिद्धान्त (सिड्तुण्डु) के अनुकूल मानव एवं सभी जीव –जन्तुओं के हित के लिए ऋषि–मुनियों की मंगल वाणी या वचन (बोचोन) को 'वेद' कहलाता है।

पोरताड़ (परिभाषा) Definitionः– ओŸा–ताल (संसार) रे मानमिको (मानव) अण्डोः सबिन जिउ–जुनतुको अः नापय (भलाई) नं पुदगा्ल (प्रकृति) रेयः चोलोन षेसेन लेकाते रिषि–मुनिको (ऋषि–मुनियों) अः षहार सगुनन षेयाँ' बोचोनको (ज्ञान वचन, ज्ञान वाणी) गे हो' हयाम ते 'बेएद' मेनतेबु मेतः।

एटः काजि रेदो 'ओŸा–ताल' (संसार) रे मानमिको अण्डोः सबिन जिउ–जुनतुको अः नापय नं रिषि–मुनिको अः बनइ अण्डोः गनइ षहार सगुनन (लाभ शुभ) षेयाँ' बोचोन गे हो' हयाम ते 'बेएद' मेनतेबु मेतः।'अण्डोः टुटका् काजि रेदो 'रिषि–मुनिको अः बेः–दःअ रेयः बनइ बुदिको अण्डोः गनइ बुदिको गे बेएद मेनतेबु मेतः।'

हो' जनजाति समुदाय में 'आस्था और विश्वास' के मतानुसार 'वेद' (बेएद) की संख्या निम्नलिखित मुख्य पाँच प्रकार के माने जाते है। जैसे (जेमोन):–

(अ) साम वेद (नुउम बेएद),
(1) यजुर्वेद (कउँरि बेएद),
(2) अथर्व वेद (ओŸा–रउइ बेएद),
(3) ऋग्वेद (दियुरि बेएद) और
(4) षिशु वेद (षिशु बेएद) हिन्दी एवं अन्य आर्य भाषाओं में मान्यता नहीं है)।

(54) शिशु वेद (षिशु बेएद)

पोरताड़ (परिभाषा) Definitionः– एंगा अः 'गोरोब्' रे तइ य्न रे अण्डोः एन अयते डेले–डुला् षिशु सिटिया् अः जोनोम, अणादि अण्डोः गोनोए–गेरं रेयः दोषतुर ओतोङको रेयः षेयाँ' सगुनन बोचोनको गे 'षिशु बेएद' मेनतेबु मेतः।

परिभाषा (पोरताड़) Definitionः– माता के 'गर्भ' में ठहरना एवं उनसे नव–जात शिशु का जन्म होना, शादी–विवाह एवं मृत्यु के संस्कारों में हित वचन को 'शिशु वेद' कहलाता है।

शिशु वेद में ही बाजा बजाने के ताल, गीत या संगीत का लय एवं नाचने के तन्त्र विधि एवं विधान पाये जाते हैं। बाजा बजाने के ताल की ध्वनि में 'वाकवर्णन मन्त्र' आदि पाये जाते हैं। नाचने के विधि–विधान में पैर के मिलान पाये जाते है। उसी प्रकार से हाथ पकड़ने के तन्त्र भी पाये जाते हैं। इसलिए, प्रत्येक पर्व–त्योहार में बाजा बजाने के ताल अलग होते है। उसी प्रकार से गीत के लय भी अलग पाये जाते हैं। और नाचने में पैर के

मिलान भी अलग होते हैं। लेकिन नाचने की प्रØया सभी जगह समान रूप से 'वामावर्ती दिशा' में ही नाचा जाता है।

हो' जनजाति समुदाय में 'दियुरि व्यवस्था' का प्रचलन होता है। हो' समुदाय में 'वर्ण व्यवस्था' का प्रचलन नहीं है। शादी –विवाह को एक प्राकृतिक रूप से पवित्र संस्कार माने जाते हैं। शादी–विवाह के बाद सभी स्त्रियों में गर्भ ठहरना भी एक प्राकृतिक रूप से पवित्र संस्कार माने जाते हैं। और माँ के गर्भकाल का अंतिम समय में शिशु (बच्चा या बच्ची) का जन्म होना भी एक प्राकृतिक रूप से पवित्र संस्कार माने जाते हैं। उसी प्रकार से बुढ़ापा होने पर 'स्त्री या पुरूष' सबों को 'मरना' भी एक प्राकृतिक रूप से पवित्र संस्कार माने जाते हैं। इन पवित्र संस्कारों में तीन प्रकार के संस्कार का होना एक प्राकृतिक नियम होते हैं। इसलिए, शादी–विवाह के बाद होने वाली 'माँ' के गर्भ ठहरने पर 'माँ एवं बाप' को 'विशेष वर्जनीय कर्म' करना होता है।

(55) औरतों के गर्भकाल के समय

(1) होने वाले 'माँ एवं बाप' को किसी 'जीव का शिकार करना एवं उसकी हत्या करना' मना है।
(2) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'अण्डा फोड़ना और पका कर खाना' मना है।
(3) होने वाली 'माँ' को 'चूल्हा बनाना' मना है।
(4) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'सूर्यग्रहण' देखना मना है।
(5) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'चन्द्रग्रहण' देखना मना है।
(6) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'मछली पकड़ना' मना है।
(7) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'मूŸर्ि पूजा' एवं 'पूजा का प्रसादी खाना' मना है।
(8) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'मूŸर्ि देखना' एवं 'जोहार करना' मना है।
(9) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'चोरी करना' और 'झूठ बोलना' मना है।
(10) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'केला लगाना और तोड़ना या काटना' मना है।
(11) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'आलती (सारु) लगाना और कोड़ना' मना है।
(12) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'आलू लगाना और कोड़ना' मना है।
(13) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'हल्दी लगाना और कोड़ना' मना है।
(14) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'अदरख लगाना और कोड़ना' मना है।
(15) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'प्याज लगाना और कोड़ना' मना है।
(16) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'लसहून लगाना और कोड़ना' मना है।
(17) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'शकरकन्द लगाना और कोड़ना' मना है।
(18) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'बाँस लगाना और तोड़ना एवं काटना' आदि मना है।
(19) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'कपड़ा' एवं 'कागज जलाना' मना है।
(20) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'अस्वाभाविक मृत्यु का लाश देखना' एवं 'उसका कब्र खोदना' या 'लाश जलाना' मना है।
(21) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'किसी रस्सी में गाँठ बाँधना' एवं 'कपड़ा का गठरी बाँधना' मना है। निज बक्सा में भी ताला लगाना मना है।
(22) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'आधा बिनाई वाला खटिया में बैठना' एवं 'सोना' मना है।
(23) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'झाड़ू के Åपर से आर–पार होना' मना है।
(24) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'ढेंकी के Åपर से आर–पार होना' एवं 'उस पर बैठना' मना है।
(25) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'कुŸkk ds Åij ls vkj&ikj gksuk' मना है।
(26) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'जूठे पŸkksa ds Åij ls vkj&ikj gksuk' मना है।
(27) होने वाले 'माँ एवं बाप' को 'किसी रस्सी या बो'ड़ के Åपर से आर–पार होना' एवं 'उस पर बैठना' मना है।

(56) शिशु बच्चा जन्म के समय

(1) हो' समुदाय में बच्चा जन्म के बाद 'नाभी नाल के फूल' को तीन कोण वाला 'सियाली पŸाा की खली' (कालगि) में घर के 'पिछवाड़े में दफनाना' अनिवार्य होता है। क्योंकि, यह 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का शुभ प्रतीक माना जाता है। इसे किसी अन्य जगह फेंकना या दफनाना अशुभ एवं अपवित्र माना जाता है।

(2) जब तक शिशु बच्चा का 'एकषिया्' नहीं होता है, तब तक उसके सिर की ओर बगल में 'तीर' (षर) सिदुब् करना अनिवार्य है। क्योंकि, लड़का बच्चा को आगे चल कर जंगल में शिकार खेलने का पवित्र रिवाज माना जाता है।

(3) जब तक शिशु बच्ची का 'एकषिया्' नहीं होता है, तब तक उसके सिर के बगल में 'दाउ' (दतारोम) होरसोड् करना अनिवार्य है। क्योंकि, लड़की बच्ची को आगे चल कर जंगल से झाड़ू बनाने वाला 'कड़ जोनो:' एवं 'किंद्ड् किता्' से 'जोनो: गलं' अण्डो: 'जाटि गलं' करने का पवित्र रिवाज है।

(4) शिशु बच्चे के पिता को हल्दी से 'स्नान घाट' के पानी में 'नियर एड़:' (काटा–तिह षरसर हड् एड़:) करना अनिवार्य होता है। क्योंकि, जल देवियों (नगे एरा एवं बिंदि एराको) को हल्दी अधिक पसन्द होता है। हो' समुदाय में इसे ही अति उŸाम एवं पुण्य 'गंगा–स्नान' के रूप में पवित्र रिवाज माना जाता है।

(5) शिशु बच्चे का नाभी झड़ने पर नाभी के टुकड़े को 'नाभी नाल के फूल' के साथ ही 'पिछवाड़े में दफनाना' अनिवार्य है। करीब नौ दिन में 'नोरता एड़:' (षिशु होन अ: बोहो: बाले अण्डो: काटा–तिह षरसर हड् एड़:) करना अनिवार्य होता है। शिशु बच्चे का छूत प्रायश्चित करना समझा जाता है। क्योंकि, यह 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का शुभ प्रतीक के रूप में माना जाता है।

(6) शिशु बच्चे का 'नोरता एड़:' के दिन से करीब 'एक्कीस दिन' में 'तिकि एड़:' (षिशु होन अ: बोहो: बाले अण्डो: काटा –तिह रेय: षरसर हड् एड़: सोंगे ते एंगा अ: काटा–तिह रेय: षरसर हड् एड़:) करना अनिवार्य होता है। क्योंकि, यह 'चनल: दिषुम मरं वोंगा' का शुभ प्रतीक के रूप में माना जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार, इस दिन शिशु बच्चे को इष्ट पूजा स्थान 'पवित्र अदिङ' में 'हेबे अदेर एवं वोङा अदेर' करने का पवित्र रिवाज होता है।

(7) चूँकि, हो' समुदाय में छोटे भाईयों की स्त्री को एवं डेड़सास को नाम पुकारना या छूना वर्जनीय माना जाता है। उसी प्रकार से छोटे भाईयों की स्त्री एवं डेड़सास भी उनके नाम को पुकारना या छूना वर्जनीय माना गया है। क्योंकि, यह एक प्रकार से इज्जत या मान–सम्मान देने के लिए माना जाता है। मान–सम्मान एक प्रकार का 'पवित्र शिष्टाचार' माना जाता है। मान–सम्मान के अपमान करने से भविष्य में अपने बच्चों में भी 'शिष्टाचार' खोने का शिकार होता है। इसलिए, हो' समुदाय में शिशु बच्चा को तीन प्रकार से नामकरण रखने का रिवाज हुआ। जैसेः– (अ) जन्म दिन के नाम पर, (आ) अपने सगे दादाजी या नानाजी के नाम पर तथा (इ) तिथि एवं नक्षत्र के अनुसार।

(8) (अ) जन्म दिन के नाम पर रखने का उौश्य था, कि कौन–सा दिन है। इसके अनुसार, यह नाम पुकारु नाम या बुलावा नाम होने का प्रचलन हुआ। चूँकि, यह पुकारु नाम या बुलावा नाम होता है। इसलिए, इस नाम को लिया जा सकता है। ऐसे नाम के बुलाने या पुकारने से कोई दोष होना नहीं समझा जाता है। इसलिए ही सात वर्ष तक हो' समुदाय में 'जन्म दिन' (जोनोम उलं) Birth day मनाने का पवित्र रिवाज हुआ। आजकल देखा जाता है, कि 'जन्म दिन' (जोनोम उलं) Birth day मनाने का रिवाज गलत हो रहा है। किसी अन्य समुदाय में 'जन्म दिन' (जोनोम उलं) के नाम पर 'जन्म तारीख' (जोनोम दिलं) Birth date को मनाने का रिवाज है। हो' समुदाय में 'जन्म दिन' (जोनोम उलं) Birth day मनाने का पवित्र रिवाज होता है।

(9) (आ) के अनुसार, यह नाम 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' एवं 'दुपुब् दिषुम हा'म हो'को' के सम्मान में होने का प्रचलन हुआ। हो' समुदाय के अनुसार, यह नाम असली नाम होता है। इसलिए, इस नाम को बिल्कुल नहीं लिया जा सकता है। ऐसे नाम के बुलाने या पुकारने से 'शिष्टाचार' खोने का दोष होना समझा जाता है। इस दोष को प्रायश्चित करने के लिए एक लाल मुर्गा, एक सफेद मुर्गा तथा एक काली मुर्गी को दण्ड स्वरूप अदायी किया जाता है।

(10) (इ) तिथि एवं नक्षत्र के अनुसार जो नाम रखा जाता है, यह भी असली नाम होता है। ऐसे नाम के बुलाने या पुकारने से भी 'शिष्टाचार' खोने का दोष होना समझा जाता है। इस दोष को प्रायश्चित करने के लिए भी एक लाल मुर्गा, एक सफेद मुर्गा तथा एक काली मुर्गी को दण्ड स्वरूप अदायी किया जाता है। इन सबकी पूजा गाँव के 'दियुरि' या इलाके के कोई 'पाण्डाइत' के द्वारा ही सम्पन्न कराने का रिवाज होता है।

(11) में सोमबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– सोमा, सोंगाह, सामु, । मंगलबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– मोंगा, मोंगोल, मोंगोला, मंगाता, माँगु, माँगोल। बुधबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– बुदु, बुदुन, बुदुरा्य, बुदुरा्म, बुदा्न। गुरुबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– गुरा्, गुरबा्, गोरा, गोरका, लगोरा। शुØबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– षुकुरा्, षुक्न, षुकुला्ल, षुप्य। शनिबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– षोना, षोनाराम, षोनेया, षान्दे, षुनद्र। रविबार को जन्म लेने वाला शिशु का नामः– रोबिन, रोयबु, रसिका्, रोलं, रुइया्। उसी प्रकार से

(12) 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' (मर्दाना) का काम हल बनाना, हल से खेत जोतना, धान बुनाई, खेती करने एवं फूस घर छाँवनी करने का अधिकार दिया गया। उसी प्रकार से 'चनल: दिषुम मरं वोंगा' (औरतों) का काम खेत में गोबर झींटना, धान रोपाई, धान सिझाई, झाड़ू बुनाई, चटाई बुनाई, घर का लेसन–पोतन एवं रसोई–बसाई आदि का दिया गया। इसलिए, हो' समुदाय में औरतों को हल जोतने का अधिकार नहीं दिया गया है। और औरतों को अचल सम्पÿा जैसे 'जमीन–जायदाद' बाँटवारे का अधिकार भी नहीं दिया गया है। औरतों के किसी कारणवश 'हल छूने' एवं 'फूस का घर के Åपर चढ़ने' मात्र से दण्ड के भागी माने जाते हैं। और उसे 'प्रायश्चित' होने के लिए एक लाल मुर्गा, एक सफेद मुर्गा तथा एक काली मुर्गी दण्ड किया जाने का रिवाज है। हो' समुदाय में कहावत भी कहा गया हैः– 'कोवाहोनकोदो जाण्टा सेता अण्डो: कुइहोनकोदो अदिङ बिला्य।'

(13) इस दिन सारे घर–आँगन को गोबर का लेपन कर साफ–सुथरा किये जाते हैं। सारे घर को एक लोटा हल्दी पानी में 5 आम की पÿिायों एवं 3 धूब घास से प्रायश्चित करने का पवित्र रिवाज माना जाता है। इस दिन 'पवित्र अदिङ' में एक लाल मुर्गी की बलि (हड् करसा) चढ़ा कर पूरे घर को 'प्रायश्चित' करने का पवित्र रिवाज है। 'पवित्र अदिङ' में कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और इसे अपने 'पूर्वज आत्माओं' को इष्ट प्रसादी चढ़ाने का पवित्र रिवाज माना जाता है। इस दिन नव शिशु को माँ के द्वारा 'पवित्र अदिङ' के अन्दर सात बार 'गोदी कर गृह प्रवेश' कराने का पवित्र रिवाज है। इसे ही हो' समुदाय में 'कोयोङ अदेर' एवं 'वोङा अदेर' के नाम से जाना जाता है।

(57) शादी–विवाह के समय

(1) हो' समुदाय में 'शादी–विवाह' का 'अशुभ मुहूÿर्त' 'दूल्हा का जन्म दिन या दिवस' और 'दूल्हन का जन्म दिन या दिवस' होता है। क्योंकि, इन दो दिन या दिवस को 'जन्म छूत' माना जाता है। एक वर्ष यानि बारह माह या मास में दो माह या मास अशुभ माना जाता है। एक होता है, 'पौष मास' और दूसरा 'भादो मास' को अशुभ माना जाता है। 'पौष मास' को शादी–विवाह रचाने पर 'धन–दौलत' की हानि होती है। और दूसरा 'भादो मास' को शादी–विवाह रचाने पर 'मान–सम्मान' की हानि होती है।

(2) हो' समुदाय में दूल्हा का 'हल्दी लेपन' के समय अपने आँगन में पूरब की ओर मुँह करके दाहिनी ओर बैठने का पवित्र प्रचलन है। और अपनी 'फूफी या मामी' के द्वारा ही श्रीगणेश करने का रिवाज होता है। फिर, उसके शरीर के अंगों में सात बार लगाने का प्रचलन है। यह इसलिए, कि 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का साक्षी होता है। और 'सौर Åर्जा का धनात्मक आवेश' को प्राप्त करने का शुभ प्रतीक माना जाता है।

(3) हो' समुदाय में दूल्हन का 'हल्दी लेपन' के समय अपने आँगन में पूरब की ओर मुँह करके दाहिनी ओर बैठने का पवित्र प्रचलन है। और अपनी 'फूफी या मामी' के द्वारा ही 'हल्दीलेपन' का श्रीगणेश करने का रिवाज होता है। फिर,

उसके शरीर के अंगों में सात बार लगाने का प्रचलन है। यह इसलिए, कि 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का साक्षी माना जाता है। और 'सौर Åर्जा का धनात्मक आवेश' को प्राप्त करने का शुभ प्रतीक माना जाता है।

(4) हो' समुदाय में 'शादी–विवाह' के पूर्व 'घर देखा' होने का प्रचलन होता है। 'घर देखा' दोनों पक्षों में होने का प्रचलन होता है। इसके बाद ही 'बपाला' होना अनिवार्य माना जाता है। यह प्रØया भी दोनों पक्षों में होने का प्रचलन होता है। 'बपाला' होना दूल्हा के घर में पहले आयोजन होता है। उसके बाद दूल्हन के घर में आयोजन होने का प्रचलन है। इसी दिन ही दूल्हन के आँगन में 'गोनोङ सिड्' करने का पवित्र रिवाज होता है। 'गोनोङ सिड्' के समय चटाई को 'पूरब–पश्चिम' दिशा में ही बिछाने का पवित्र रिवाज होता है। 'पूरब' दिशा में दूल्हा पार्टी को बैठने का पवित्र रिवाज होता है। और 'पश्चिम' दिशा में दूल्हन पार्टी को बैठने का पवित्र रिवाज होता है। क्योंकि, दूल्हा पार्टी को 'सूरज' का प्रतीक माना जाता है। और दूल्हन पार्टी को 'चाँद' का प्रतीक माना जाता है।

(5) इन दोनों पक्षों में आते–जाते समय रास्ते में जो 'अशुभ कृतियाँ' दिखाई देता है, उन 'अशुभ कृतियों' को चुना जाता है। कोई भी 'अशुभ कृतियाँ' दिखाई दे, तो किसी अच्छे पण्डित (पाण्डाइत) के द्वारा बीच रास्ते में पूजा–पाठ कराने का पवित्र रिवाज है। और इसी दिन ही 'शादी विवाह' का दिन एवं तिथि तय किया जाता है।

(6) हो' समुदाय में 'शादी–विवाह' का आयोजन लड़का के घर में होने का रिवाज 'पवित्र' माना जाता है। क्योंकि, लड़का को 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है। और लड़की को 'चनल् दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है। क्योंकि, 'शादी–विवाह' के बाद भी लड़का (दूल्हा) का गोत्र (किलि) जैसे का तैसा रहता है। मगर, 'शादी–विवाह' के बाद लड़की (दूल्हन) का गोत्र (किलि) लोप हो जाता है। और लड़की का गोत्र (किलि) लड़का का गोत्र (किलि) में परिवर्तन या विस्थापन हो जाता है। लड़का की शादी को 'कोड़ाँदि' कहा जाता है।

(7) हो' समुदाय में लड़की की पवित्र 'शादी–विवाह' को 'गोङ' कहा जाता है। इसलिए, सामर्थ्य के अनुसार उपहार के रूप में 'गोनोङ' लेन–देन करने का पवित्र रिवाज हुआ। और 'अजि हनर' के लिए 'चिण्डि षिम, चिण्डि–मेरोम' लेन–देन का पवित्र रिवाज हुआ। हो' समुदाय में 'दहेज प्रथा' का प्रचलन नहीं होता है। अजि हनर के साथ उपुरुम–चिपिनब् के लिए ही 'चिण्डि षिम' का पवित्र प्रचलन हुआ। और हातोम हनर के साथ उपुरुम–चिपिनब् के लिए ही 'चिण्डि मेरोम' का पवित्र प्रचलन हुआ।

(8) हो' समुदाय में लड़का के आँगन में 'बेदी मण्डप' बनाने का पवित्र रिवाज होता है। 'बेदी मण्डप' बनाने के लिए 'दूल्हा' के 'देषाउलि' चौहाी की मिट्टी लाने का प्रचलन होता है। वहाँ पर 'देषाउलि' को एक लाल मुर्गा की बलि (हड् करसा) चढ़ाया जाता है। और सात कोचोम्बा में 'सोम रस' अर्पित करने का पवित्र रिवाज होता है।

(9) हो' समुदाय में लड़की की बिदाई के समय लड़की के पवित्र 'गइँश्री' स्थान में सात फेरा 'साकि सुता्म' बाँधने का पवित्र रिवाज होता है। पवित्र 'गइँश्री' स्थान में 'आम के पेड़' में सात फेरा 'साकि सुता्म' बाँधने के साथ ही सात कोचोम्बा में 'सोम रस' अर्पण करने का पवित्र रिवाज होता है। अपनी बेटी और दामाद को भी पवित्र 'गइँश्री' स्थान से ही बिदाई दिया जाता है।

(10) दूल्हन के पवित्र 'गइँश्री' स्थान में ही 'सारातियों' (ओर एराको) को 'दूल्हन' के मामा की ओर से स्वागत करने का पवित्र रिवाज माना जाता है। शादी–विवाह के उपलक्ष में इस पवित्र 'गइँश्री' स्थान से ही सभी 'बालाओं' को भी बिदाई देने का प्रचलन शुभ माना जाता है।

(11) 'दूल्हा' के 'गइँश्री' स्थान में ही 'सारातियों' (ओर एराको) एवं 'दूल्हन' को 'दूल्हा' के मामा की ओर से स्वागत करने का पवित्र रिवाज होता है। यहाँ पर 'आ' दाटा' के लिए एक काली मुर्गी को बलि चढाया जाता है।

(12) 'दूल्हा' के आँगन में 'दूल्हन' को प्रायश्चित करने के लिए एक लाल मुर्गी की बलि (हड् करसा) चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है। और 'दूल्हन' को 'बेदी मण्डप' की चारों ओर सात फेरा लगाने का भी पवित्र रिवाज होता है। यह इसलिए कि आज से वह 'दूल्हन' उस घर आँगन की 'बहू' के रुप में मान्यता दिया जाता है।

(13) 'दूल्हन' को 'दूल्हा' के मामा की ओर से 'श्रीश्री श्रृंगार' करना अनिवार्य माना जाता है। और वह भी 'सखुआ पŸाा के डण्ठल' से 'होलोङ' से पहले कपाल की बायीं ओर बिन्दी चढ़ाना पवित्र माना जाता है। उसके बाद दायीं ओर भी बिन्दी चढ़ाना पवित्र माना जाता है। क्योंकि, इसे अपने 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' से परिचित कराने का रिवाज है। उसी प्रकार से होलोङ के बीच में 'सिंदूर' से पहले कपाल की बायीं ओर बिन्दी चढ़ाना पवित्र माना जाता है। उसके बाद होलोङ के बीच में दायीं ओर भी बिन्दी चढ़ाना पवित्र माना जाता है।

(14) 'दूल्हन' को आरवा चावल का चूर्ण की गुण्डी (होलोङ) एवं सिंदूर से कपाल में बिन्दी चढ़ाने का पवित्र रिवाज अनिवार्य होता है। पहले आरवा चावल का चूर्ण की गुण्डी (होलोङ) से तथा बाद में सिंदूर से बिन्दी चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है। इसकी आकृति 'बाहर' की ओर होती हैं। क्योंकि, यह 'चनल: दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है।

(15) 'दूल्हा' को 'दूल्हन' के मामा की ओर से 'श्रीश्री श्रृंगार' करना अनिवार्य माना जाता है। और वह भी 'सियाली पŸाा के डण्ठल' से पहले कपाल की बायीं ओर बाद में दायीं ओर बिन्दी चढ़ाना पवित्र माना जाता है। क्योंकि, इसे अपने 'चनल: दिषुम मरं वोंगा' से परिचित कराने का रिवाज है।

(16) 'दूल्हा' को आरवा चावल का चूर्ण की गुण्डी (होलोङ) एवं सिंदूर से कपाल में बिन्दी चढ़ाने का पवित्र रिवाज अनिवार्य होता है। पहले आरवा चावल का चूर्ण की गुण्डी (होलोङ) से तथा बाद में सिंदूर से बिन्दी चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है। इसकी आकृति 'अन्दर' की ओर होती हैं। क्योंकि, यह 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है।

(17) 'दूल्हा' को बेदी के अन्दर 'पूरब दिशा' में और उŸार की ओर मुँह करके आसन करना शुभ माना जाता है। क्योंकि, 'दूल्हा' को 'सूरज' का साक्षी माना जाता है। और उŸार दिशा को चुम्बकीय Åर्जा का 'धनात्मक आवेश' माना जाता है। हो' समुदाय में 'सुपारी एवं पान पŸाा' का स्थान नहीं होता है।

(18) 'दूल्हन' को बेदी के अन्दर 'पश्चिम दिशा' में और उŸार की ओर मुँह करके आसन करना शुभ माना जाता है। क्योंकि, 'दूल्हन' को 'चाँद' का साक्षी माना जाता है। और उŸार दिशा को चुम्बकीय Åर्जा का 'धनात्मक आवेश' माना जाता है। हो' समुदाय में 'सुपारी एवं पान पŸाा' का स्थान नहीं होता है।

(19) 'दूल्हा' को बेदी के अन्दर 'हवन कुण्ड' की चारों ओर एक–एक कर 'रोला' से सात फेरा चक्कर लगाना शुभ एवं पवित्र माना जाता है। क्योंकि, 'रोला' को 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है। यह प्रØिया 'वामावŸाी दिशा' (एतोम कुटि यते कोळे कुटि ते) Anti-clockwise में ही चक्कर लगाना शुभ माना जाता है। क्योंकि, 'दूल्हा' यानि लड़का को हल जोतना, माण्डा घुमाना भी 'वामावŸाी दिशा' (एतोम कुटि यते कोळे कुटि ते) Anti-clockwise में ही घुमने का पवित्र प्रचलन होता है।

(20) 'दूल्हन' को भी बेदी के अन्दर 'हवन कुण्ड' की चारों ओर एक–एक कर 'लुपुङ' से सात फेरा चक्कर लगाना शुभ एवं पवित्र माना जाता है। क्योंकि, 'लुपुङ' को 'चनल: दिषुम मरं वोंगा' का प्रतीक माना जाता है। यह प्रØिया भी 'वामावŸाी दिशा' में ही चक्कर लगाना शुभ माना जाता है। क्योंकि, 'दूल्हन' यानि लड़की को भी किसी 'पर्व–त्योहारों' में नाचना 'वामावŸाी दिशा' (एतोम कुटि यते कोळे कुटि ते) Anti-clockwise में ही घुमने का पवित्र प्रचलन होता है।

(21) सिंदूर दान के समय 'दूल्हा' पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके खड़ा होता है। 'दूल्हा' अपने 'अंगूठे Åंगली' से 'दूल्हन' को सात बार सिंदूर दान करता है। और 'दूल्हन' का नाक से Åपर की ओर यानी कपाल की ओर लगाने का संकेत शुभ माना जाता है। यह प्रचलन इसलिए, कि 'अंगूठे Åंगली' का तात्पर्य 'पवित्र माङ बुरु' को साक्षी माना जाने का पवित्र प्रचलन है।

(22) सिंदूर दान के समय 'दूल्हन' पूरब दिशा की ओर मुँह करके खड़ी होती है। 'दूल्हन' अपने 'तर्जनी Åंगली' से 'दूल्हा' को सात बार सिंदूर दान करती है। और 'दूल्हा' का कपाल से uhps की ओर यानी नाक की ओर लगाने का संकेत शुभ माना जाता है। यह प्रचलन इसलिए, कि 'तर्जनी Åंगली' का तात्पर्य 'पवित्र देषाउलि' को साक्षी माना जाता है।

(23) सिंदूर दान के बाद 'दूल्हन' को 'दूल्हा' के द्वारा लोहा का चूड़ी पहनाना अनिवार्य माना जाता है। और वह भी बायें हाथ में ही पहनाने का पवित्र रिवाज है। क्योंकि, 'दूल्हन' उसकी 'अ)ांगिनी' के रूप में स्वीकार करता है।

(24) इस लोहा का चूड़ी को 'व्रत एवं उपवास' में ही लोहार के द्वारा बनवाया जाता है। उस लोहा का चूड़ी में 9 जगह रेखाएँ होती हैं। और प्रत्येक जगह 3–3 करके रेखांकित किये जाने का पवित्र रिवाज होता है। इस प्रकार से कुल रेखाओं की संख्या 27 होती हैं। 9 जगह रेखा करने का अर्थ होता है, 9–ग्रहों को शांत करना और कुल 27 रेखाओं का अर्थ होता है, 27 नक्षत्रों का आभार एवं मान–सम्मान करना होता है।

(25) हो' समुदाय में 'मंगल सूत्र का माला' भी अलग प्रकार के ही होते हैं। 'दूल्हा' के द्वारा 'दूल्हन' को जो 'मंगल सूत्र का माला' पहनाया जाता है, उसमें 'कोराट का फूल' (गोलाचि बहा) की संख्या 27 होती हैं। यह इसलिए होता है, कि 27 नक्षत्रों का आभार एवं सम्मान करना होता है। उसी प्रकार से 'दूल्हन' के द्वारा 'दूल्हा' को जो 'मंगल सूत्र का माला' पहनाया जाता है, उसमें 'कोराट का फूल' (गोलाचि बहा) की संख्या 28 होती हैं। यह इसलिए होता है, कि 28 संख्या पति की दीर्घायु का सम्मान करना होता है।

(26) अंत में 'दूल्हा एवं दूल्हन' को बेदी शाल से घर के अन्दर और घर के अन्दर से बाहर सात बार 'कमर में गोदी करके' (हेबे अदेर) प्रवेश कराने का पवित्र रिवाज होता है। यह इसलिए, कि सात जन्म तक के जीवन साथी के रूप में आनन्द एवं सुखी जीवन व्यतीत करने का प्रतीक माना जाता है।

(27) हो' समुदाय में अपने 'पवित्र अदिङ' में 'नयीं दूल्हन' को 'रसोई खान–पान' (जोम इसिङ) करने का पवित्र रिवाज होता है। इस दिन सारे घर–आँगन को गोबर का लेपन कर साफ–सुथरा किये जाते हैं। सारे घर को एक लोटा हल्दी पानी में 7 आम की पÿीयों एवं 3 धूब घास से प्रायश्चित करने का पवित्र रिवाज है। 'पवित्र अदिङ' में कुम्हार का नया हण्डी में 'नयी दूल्हन' के द्वारा भात पकाया जाता है। और इसे अपने 'पूर्वज आत्माओं' को इष्ट प्रसादी चढ़ाने का पवित्र रिवाज माना जाता है। सामर्थ्य के अनुसार 'नयी दूल्हन' को अपने 'पवित्र अदिङ' में लाल मुर्गी का बलि (हड् करसा) चढ़ा कर 'जोम इसिङ' करने का रिवाज होता है। हो' समुदाय में अनजानों को 'पवित्र अदिङ' में प्रवेश करना वर्जनीय माना जाता है। क्योंकि, हो' समुदाय में 'पवित्र अदिङ' को 'वंशज गोत्र मन्दिर' के रूप में जाना एवं माना जाता है।

(28) हो' समुदाय में अपने 'पवित्र अदिङ' में 'नयीं दूल्हन' को दो बार 'रसोई खान–पान' (जोम इसिङ) करने का पवित्र रिवाज होता है। जैसेः – (क) शादी–विवाह के बाद सामान्य 'रसोई खान–पान' (जोम इसिङ अण्डो: वोङा अदेर) तथा (ख) पर्व–त्योहार में 'रसोई प्रसादी ग्रहण' (जोम सुट्म अण्डो: वोङा अदेर)।

(29) हो' समुदाय के अनुसार 'नयी दूल्हन' को सिर्फ दो उपलक्षों में ही 'रसोई प्रसादी ग्रहण' (जोम सुट्म अण्डो: वोङा अदेर) करने का पवित्र रिवाज होता है। एक उपलक्ष 'बहा पोरोब्' के बहा गुरि: उल् (दिन) और दूसरा 'हेरो: पोरोब्' के हेरो: गुरि: उल् (दिन) होता है। क्योंकि, बहा गुरि: उल् 'प्रकृति में शãि' का अंकुर दिन माना जाता है। और हेरो: गुरि: उल् 'प्राकृतिक शãि' का विश्राम दिन माना जाता है। इसलिए, हो' समुदाय में 'बहा पोरोब्' के बाद 'शिकार खेलने' का प्रचलन हआ। और हेरो: गुरि: की संध्या को हल में 'होलोङ' चढ़ाने का रिवाज हुआ।

(30) 'बहा पोरोब्' के उपलक्ष में 'बहा गुरि:' के दिन ही 'नयी दूल्हन' को अपने 'पवित्र अदिङ' में लाल मुर्गी का बलि (हड् करसा) चढ़ा कर 'रसोई खान–पान' (जोम इसिङ) करने का पवित्र रिवाज है। बहा पोरोब् के पश्चात् शादी–विवाह होने पर 'हेरो: पोरोब्' के उपलक्ष में भी 'जोम इसिङ' करने का पवित्र रिवाज होता है। उस दिन से 'पवित्र अदिङ' में प्रत्येक पर्व–त्योहारों में पूजा प्रसादी के लिए भोजन पकाने और ग्रहण करने का अधिकार माना जाता है।

(31) हो' समुदाय में 'हेरो: पोरोब्' के उपलक्ष में भी 'हेरो: गुरि:' के दिन ही 'नयी दूल्हन' को अपने 'पवित्र अदिङ' में लाल मुर्गी का बलि (हड् करसा) चढ़ा कर 'जोम इसिङ' करने का पवित्र रिवाज होता है। यह शादी–विवाह संस्कार का अन्तिम पवित्र चरण माना जाता है। और उस दिन से 'पवित्र अदिङ' में प्रत्येक पर्व–त्योहारों में पूजा के लिए भोजन

पकाने, प्रसादी चढ़ाने तथा प्रसादी ग्रहण करने का अधिकार माना जाता है।

(58) बपाला के बाद समधि बिदाई के समय

चूँकि हो' समुदाय में लड़का के घर में पहले 'बपाला' का आयोजन होने का रिवाज है। जिस दिन लड़की घर वाले लड़का के यहाँ आते हैं, उन 'कुटुम्ब बन्धुओं' (बाला) को लड़का के गाँव के किनारे 'गइँश्री स्थान' में स्वागत करने का रिवाज है। लड़का वाले अगर गलती से वहाँ स्वागत नहीं किये, तो लड़की वाले नाराज होकर शादी–विवाह को टालने का आनाकानी करेंगे। और सही रूप से स्वागत होने पर घर के आँगन में लोटा पानी से धुलाने का रिवाज होता है। यदि किसी कारणवश लोटा पानी धोवन में भी थोड़ा–सा चूक होने पर शादी–विवाह को टालने का आनाकानी करेंगे। खाने–पीने में भी यदि असुविधा होने पर शादी–विवाह को टालने का आनाकानी करेंगे। इसलिए, उनलोगों को सही समय पर और सही तरीके से खिलाने–पिलाने का प्रयास किया जाता है। खान–पान खत्म होने के बाद यदि शादी–विवाह के लिए निर्णय में 'हाँ' में जवाब हो जाये तो 'हल्दी का तैल' लगाने का प्रचलन है। और नये कुटुम्ब–बन्धुओं को 'बपाला की पहचान' के लिए कुछ 'फूल एवं फल का माला' पहनाने का रिवाज है। लड़का के आँगन में चटाई (किंद्ड् किता् जाटि) बिछाया जाता है। और वह भी 'जाटि' को पूरब–पश्चिम दिशा ही बिछाने का पवित्र रिवाज होता है। हल्दी का तैल लगाने के बाद तुरन्त 'फूल एवं फल का माला' पहना दिया जाता है। हल्दी का तैल लगाने के बाद पेय के लिए हाँड़िया का व्यवहार अनिवार्य होता है। फिर अन्त में गाँव के किनारे 'गइँश्री स्थान' में ही बिदाई देने का रिवाज होता है। वहाँ पर बिदाई का गीत दोनों पक्षों की ओर से गाये जाने का रिवाज होता है। पहले लड़का पक्ष वाले गीत गाती हैं। वह गीत इस प्रकार हैः–

चारि: मुटि चबा यना, बाला!
साकम डेम्ब: चबा यना, बाला!!
मरं बुरु केरेयड़को बाला!
हुउ केनको उट् यना बाला!!

तब लड़की पक्ष वाले भी खुशी से उस गीत का जवाब गीत में ही गाती हैं। वह गीत इस प्रकार हैः–

जोम केडाले, नुउ केडाले बाला!
सब् केडाले, सोलोङ केडाले बाला!!
बुटि लातर चाड़ं हलइ बाला!
कागे रेपे नेमड़ले या बाला!!

तब 'गइँश्री स्थान' पर विपरीत दिशा की ओर मुँह कर 'जोपोअर' किया जाता है। कहने का तात्पर्य होता है, लड़का वाले अपने गाँव की ओर मुँह करते हैं। उसी प्रकार से लड़की वाले भी अपने ही गाँव की ओर मुँह करते हैं। इस प्रकार से हो' समुदाय में आपसी समरसता के साथ 'बपाला' का आयोजन किया जाता है। बपाला में लड़का वाले सर्वप्रथम 'लड़का का मामा' का उपस्थित होना अनिवार्य माना जाता है। 'लड़का का मामा' का उपस्थित के बिना कोई काम सम्पन्न नहीं हो सकता है।

(59) मृत्यु के समय

(1) हो' समुदाय में किसी व्यÃ (पुरूष या स्त्री) की मृत्यु होने पर लाश को सीधा करने का पवित्र रिवाज होता है। यानि लाश को 'उŸार–दक्षिण दिशा' करने का रिवाज पुण्य एवं पवित्र माना जाता है। 'उŸार दिशा' की ओर पैर करना एवं 'दक्षिण दिशा' की ओर 'सिर' करना पुण्य एवं पवित्र माना जाता है।

(2) लाश के पैर को 'उŸार दिशा' की ओर सीधा करना पुण्य एवं पवित्र माना जाता है। और 'सिर' को 'दक्षिण दिशा' की ओर सीधा करना पुण्य एवं पवित्र माना जाता है। चूँकि, प्रकृति में 'उŸार दिशा' चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का 'धनात्मक आवेश' (पोर्र योङ) Positive Charge होता है। और 'दक्षिण दिशा' चुम्बकीय Åर्जा (ओŸा रोयोङ) Magnetic Energy का '_णात्मक आवेश' (ओब् योङ) Negative Charge होता है। यह प्राकृतिक सत्य एवं सर्वव्यापी सत्य को पालन करना होता है। चूँकि, पृथ्वी में चुम्बकीय Åर्जा दिन–रात हमेशा चलते रहता है। और यह मृत शरीर को Neutral बनाये रखता है।

(3) लाश के सिर की ओर 'जंगली खजूर की डाली' (किंद्ड् किता्) को रखा जाने का पवित्र प्रचलन है। और पैर की ओर एक 'कुदाल एवं हल का फाल' को रखा जाने का पवित्र प्रचलन है। क्योंकि, 'जंगली खजूर की डाली' (किंद्ड् किता्) से मक्खियों एवं मच्छरों को भगाने के लिए यह रिवाज हुआ। और कुदाल एवं हल का फाल से 'आत्मा पुकार' करने के समय घंटी बजाने के लिए रिवाज हुआ।

(4) मर्दाना लाश का हाथ–पैर का नाखून काटने एवं दाढ़ी हजामत करने का रिवाज है। उसे गर्म पानी से अच्छी तरह से नहला–धोकर साफ किया जाता है। उसे हल्दी का लेपन किया जाता है। और औरतों के लाश का सिर्फ हाथ–पैर का नाखून काटने का रिवाज है। हो' समुदाय में 'बाल या नाखून' काटने का काम 'मामा–मामी' या 'फूफा–फूफी' का होता है। मर्दों के लिए 'मामा' या 'फूफा' के द्वारा काम होता है। और औरतों के लिए 'मामी' या 'फूफी' के द्वारा काम होता है। उसे भी गर्म पानी से अच्छी तरह से नहला–धोकर साफ किया जाता है। लाश के सारे बदन में हल्दी–तैल का लेपन किया जाता है।

(5) हल्दी–लेपन के बाद सात बार 'लाभ–शुभ पुकार' (षहार–सगुन तेला उरा्) करने का पवित्र रिवाज होता है। इस पुकार में 5 आवश्यक चीजें होती हैं। जैसेः–

(अ) गोबर की गोली (गुरि् डुइ),
(आ) धूब घास (दुबि तासड्),
(इ) आरवा धान (अदोवा बाबा),
(ई) सीझा हुआ चावल (तिकि चउलि) तथा
(उ) गोटा बीरी (गोटा रम्बाह)।

चूँकि, हो' समुदाय में किसी लाश को अपने आँगन के आस–पास ही दफन करने का रिवाज है। इसलिए, लाश में कपड़ा देने का पवित्र रिवाज होता है। क्योंकि, अपने आँगन के आस–पास कब्र में भी महिलाओं को आखरी दर्शन करने की मान्यता है। मान्यता के अनुसार, उसे खाने एवं पीने के लिए दो पात्र या वर्तन दिया जाता है।

(6) इसमें तीन चीजों में गोबर की गोली (गुरि् डुइ), धूब घास (दुबि तासड्) तथा आरवा धान (अदोवा बाबा) मर्दाना का हिस्सा बनता है। अगले 'धान मुट्ठी' (बाबा मुउट) में धान बुनने के लिए 'लाभ–शुभ' (षहार–सगुन) रिवाज का प्रचलन हुआ। और दो चीजों में सीझा चावल (तिकि चउलि) तथा गोटा बीरी (गोटा रम्बाह) औरतों का हिस्सा बनता है। 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन इसे पवित्र अदिङ में खाना एवं दाल पकाकर पूजा प्रसादी चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है।

(7) लाश को अपने गोत्र के कब्रस्थान में ही दफनाने का पवित्र रिवाज होता है। लाश को जलाने से भी अपने गोत्र के कब्रस्थान में ही 'दहन' करने का पवित्र रिवाज होता है। अन्य किसी गोत्र के 'कब्रस्थान' में 'दहन या दफन' करने का रिवाज नहीं होता है। क्योंकि, ऐसे करने पर लाश दफनाने वाले गोत्रों को 'इष्ट वंशज देवता' (दुपुब् दिषुम मरं वोंगा) दण्ड करता है। और जहाँ लाश दफन किया जाता है उन गोत्रों को 'इष्ट वंशज देवी' (चनल् दिषुम मरं वोंगा) दण्ड करती है। इस प्रकार से उन दोनों पक्षों में अलग– अलग पीड़ाएँ आदि होते हैं। इसलिए, हो' समुदाय में प्रत्येक गोत्रों में अलग–अलग 'कब्रस्थान' होने का प्रचलन हुआ।

(8) अगले दूसरे दिन सुबह सारे घर–आँगन को गोबर का लेपन किया जाता है। इस दिन 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के लिए 'आत्मा निमन्त्रण' (रोवाँ दिलि) किया जाता है। 'आत्मा निमन्त्रण' (रोवाँ दिलि) में 'धान का खोई' (कुइ आता) होना आवश्यक है। 'पीपल' की तीन टहनियों के Åपर दोना में खोई रख कर सात बार 'आत्मा निमन्त्रण' (रोवाँ दिलि) करने का रिवाज होता है। साथ में एक दातून एवं एक दोना में साफ पानी धोने के लिए दिया जाता है।

(9) उस दिन कुटुम्ब–बन्धू लोग ही हाँड़िया बनाती है। हाँड़िया पकने के दिन यानि करीब तीन दिन में हाँड़िया पक जाता है। इस दिन 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) करने का रिवाज होता है। क्योंकि, 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन अपने गोत्रों में सबों को 'हल्दी–तैल नहान' करना पवित्र माना जाता है। बिना 'हल्दी–तैल नहान' से छूत होना समझा जाता है। 'हल्दी–तैल नहान' के बिना तैल लगाना एवं तैल–मशाला आदि खाना अपवित्र माना जाता है।

(10) 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन ही सारे घरों को गोबर से लेपन किया जाता है। इस दिन मर्दाना लोग हजामत करते हैं। पैर और हाथ के नाखून कटवाते हैं। बाल काटना एवं नाखून काटना 'मामा' लोगों का काम होता है।

हो' समुदाय में 'नाई या भण्डारी' का स्थान नहीं होता है। औरत लोगों को 'फूफी' के द्वारा सिर्फ हाथ एवं पैर के नाखून कटवाती हैं। इस दिन सभी लोग इकट्ठे या समूह में नहाते हैं। बालों में मिट्टी (नहका एड़:) चढ़ाते हैं, और बदन में हल्दी–तैल लगाते हैं। सारे घर को एक लोटा हल्दी पानी में 9 आम की पÿायों एवं 3 धूब घास से प्रायश्चित करने का रिवाज पवित्र माना जाता है। इस दिन से तैल–मशाला आदि खाना पवित्र माना जाता है।

(11) चूँकि, हो' समुदाय में 'दफन' करने का ही रिवाज पवित्र माना जाता है। इसलिए, अपने गोत्रों के साथ–साथ अपने निजी कुटुम्ब–बन्धुओं को भी 'अमन्त्रण' देना जरूरी हो जाता है। यदि आमन्त्रण में आते समय रास्ते में कोई 'अपसगुन' दिखाई दे तो उन सबको चुनना होता है। इलाके के कोई अच्छे पाण्डाइत से निर्णय लिया जाता है। इस निर्णय में जो सामग्रियाँ लगे, उसे 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन ही पूजा–पाठ करने का रिवाज होता है। हो' समुदाय के अनुसार, 'आकस्मिक दुर्घटना', 'बिरळ्जि', एवं 'छूत से मृत्यु' के लाश को ही 'दहन' करने का रिवाज होता है। और वह भी अपने 'कव्रस्थान' के बाहर ही 'दहन' करने का रिवाज होता है। उनकी आत्मा को अपने पवित्र अदिङ में 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) नहीं किया जाता है। उस आत्मा को किसी पेड़ के नीचे या पत्थर के पास 'केया जप:' करने का रिवाज होता है।

(12) 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन 'पवित्र अदिङ' में कुम्हार का नया हण्डी में भात पकाया जाता है। और इसे अपने 'पूर्वज आत्माओं' को इष्ट प्रसादी चढ़ाने का पवित्र रिवाज माना जाता है। इस दिन शाम को पवित्र अदिङ में राख के भस्म को अच्छी तरह से झींटा जाता है। यह काम गाँव के कुटुम्ब–बन्धुओं के द्वारा सम्पन्न कराया जाता है। शाम को कव्रस्थान से 'आत्मा' (रोवाँ) को पुकार कर घर के दरवाजे तक आह्वान किया जाता है। यह प्रØिया सात बार करने का रिवाज है। सात बार आत्मा पुकार के बाद भी यदि घर में आत्मा प्रवेश नहीं करती है, तो एक लाल मुर्गी की बलि (हड् करसा) चढ़ाने का रिवाज होता है। सात बार के पहले अगर आत्मा अदिङ में प्रवेश कर जाती है, तो सिर्फ दाल–भात का प्रसादी ही चढ़ाने का रिवाज होता है।

(13) 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन का 'आह्वान मन्त्र' इस प्रकार होता है:– 'षुकु य्ना चिइ दुकु य्ना?' जवाब में होता है:– (अ) 'षुकु य्नाए!' (आ) 'दुकु य्नाए!' यह प्रØिया सात बार 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया) करने का रिवाज होता है। यदि सात बार के पहले ही आत्मा अदिङ में प्रवेश कर जाये तो आत्मा पुकार करना अन्त कर दिया जाता है। और पवित्र अदिङ में दाल–भात का ही प्रसादी चढ़ाया जाता है। आज कल इस पवित्र रिवाज का गलत रूप देखने एवं सुनने को मिलता है। 'आत्मा पुकार' (रोवाँ केया अदेर) के दिन का 'आह्वान मन्त्र' में 'षुकुल् चि डुकुइल्?' जवाब में होता है:– (अ) 'षुकुइल्!' (आ) 'डुकुइल्!' जो गलत है।

(14) कव्रस्थान से 'आत्मा' (रोवाँ) घर में प्रवेश करने पर राख के भस्म में उसकी छाप या परछाईं साफ–साफ दिखाई देती है। उसकी आत्मा घर में प्रवेश करने पर उसे पवित्र अदिङ में भात–दाल का ही प्रसादी चढ़ाया जाता है। यदि सात बार आत्मा पुकार के बाद भी आत्मा पवित्र अदिङ में प्रवेश नहीं करती है, तो एक लाल मुर्गी को बलि (हड् करसा) चढ़ाया जाता है। और उस मुर्गी का कलेजा को पकाकर भात के साथ प्रसादी के रूप में चढ़ाने का रिवाज पवित्र माना जाता है।

(15) हो' समुदाय में 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) अपने सामर्थ्य के अनुसार करने का रिवाज होता है। इसलिए, श्रा)कर्म में आमन्त्रित लोगों को खिलाने–पिलाने के लिए 'पारिवारिक काँदा' दिया जाता है। अपने हाथ से सुविधा के अनुसार पकाते और खाते–पीते हैं। जिसका 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) हो' रहा है, उनकी आत्मा की शांति के लिए 'मा'ल' चढ़ाने का पवित्र रिवाज है। और यह 'मा'ल' (हड् करसा मयोम) उनके मामा के हाथों से चढ़ाने का पवित्र रिवाज है। मर्दाना में 'लाल मुर्गी' या 'कसाय पटेया' का 'मा'ल' चढ़ाया जाता है। और औरतों में 'लाल मुर्गी' या 'कसाय पटेया' का ही 'मा'ल' चढ़ाया जाता है।

(15) हो' समुदाय में 'श्रा)कर्म' (दिरि दुल सुनुम) के प्रत्येक 'काँदा चूल्हा' की दिशा पूरब–पश्चिम को शुभ माना जाता हैं। 'काँदा चूल्हा' की दिशा उÿार–दक्षिण को अशुभ माना जाता

हैं। क्योंकि, हो' समुदाय में उŸार–दक्षिण दिशा में ही लाश दफनाने का पवित्र रिवाज माना जाता है।

(60) शिशु वेद (षिशु बेएद) के सिद्धांत

हो' समुदाय के मतानुसार 'शिशु वेद' (षिशु बेएद) के सि)ान्त पर 'आस्था और विश्वास' रखा जाता है। इस समुदाय में 'शिशु वेद' (षिशु बेएद) के सि)ान्त के आधार पर 'संस्कार' (दोषतुर) का उदय हुआ। 'शिशु वेद' (षिशु बेएद) के सि)ान्त के आधार तीन प्रकार के होते हैं। जैसेः–

(1) 'तन्त्र' (ओŸोनतोर) Natural Bylaws
(2) 'मन्त्र' (मोनतोर) Volumetrical Sound तथा
(3) 'यन्त्र' (जोनतोर) Mechanical Apparatus.

हो' समुदाय में इस प्रकार से शिशु वेद के आधार पर तीन प्रकार से आस्था एवं विश्वास के साथ माने जाने का प्रचनलन हुआ।

(1) प्राकृतिक रचना में सत्य पर आस्था (षोयतायेम्)
(2) प्रकृति में प्रकृति की सेवा–अर्चना (षेबायेम्) और
(3) प्रकृति के अनुकूल नाच–गान (षुन–दुर्ंडेम्)।

(61) तन्त्र (ओŸोनतोर) Natural Bylaws

(ओŸोनतोर = ओत्त + ओनतोर)।

इस तन्त्र में प्राकृतिक fØयाकलाप एवं विधि–विधान के तन्त्र, नियम, व्रत–उपवास (काटब्–तुरुब्) आदि होते हैं। जैसेः–

(अ) प्रातः सुबह उठते साथ घर–द्वार की साफ–सफाई करना।
(आ) पूजा स्थान की साफ–सफाई करना।
(इ) सारा घर–द्वार को गोबर से लेपन करना।
(ई) पूजा स्थान को गोबर से लेपन करना।
(उ) पिछली रात को खटिया पर न सोना, जमीन पर चटाई बिछा कर सोना।
(Å) पिछली रात को अपनी औरत के साथ न सोना।
(_) किसी छूत का पूजा के पहले प्रायश्चित कर लेना। अपने गाँव में छूत होने पर पूजा–पाठ न करना।
(ए) आवश्यकतानुसार पूजा सामग्रियों में होलोङ, षासं पीसना। अपने से दोना, चुकदि, कोचोम्बा, चिटकि, कालगि आदि बनाना। समय पर आवश्यक सामग्रियों को 'दाँङ' करना।
(ऐ) आवश्यकतानुसार होलोङ से 'कोओंडो' बनाना।
(ओ) आवश्यकतानुसार बलि में 'हड् करसा' करना।
(औ) आवश्यकतानुसार राषि द:अ 'दाँङ' करना एवं चोड़ोर करना।
(अं) आवश्यकतानुसार बलि में 'हड् बण्डि:' करना एवं राषि द:अ दाँङ करना तथा चोड़ोर करना।
(अः) आवश्यकतानुसार बलि में 'इइंम–सलोम' कच्चा सहित पसिड् करना।
(क) आवश्यकतानुसार बलि का 'बोहो: जिलु' दोहोम करना।
(ख) आवश्यकतानुसार बलि का 'बोहो: जिलु' पसिड् करना, साथ में 'राषि द:अ कोचोम्बा में देना'।
(ग) आवश्यकतानुसार पूजा में 'अगोम करना।
(घ) आवश्यकतानुसार पूजा में 'बल एड़: करना।
(ङ) आवश्यकतानुसार पूजा में 'एरे उइको' बोङा एड़: करना एवं बोहो: जिलु पसिड् करना।
(च) आवश्यकतानुसार पूजा में 'अतु एड़:' करना।
(छ) आवश्यकतानुसार पूजा में होम–योग करना आदि होते हैं।

(62) मन्त्र (मोनतोर) Volumetrical Sound

(मोनतोर = मोन – ओतोर)।

इस मन्त्र में अपनी मंगलकामना, मनोकामना (यानि मन के अन्दर की शुभ वाणी) पूरी करना सीमित होते हैं। साथ में इस प्रकृति के सभी जीव–जन्तुओं के हित की रक्षा करने की क्षमता दर्शाता है। _षि–मुनियों के 'Å' से शुरू होने वाले मन्त्र, मंगल वाणी, वचन आदि होते हैं। पूजा–पाठ के समय का बाजा बजाने के 'वाकवर्णन मन्त्र के ताल' एवं 'मंत्र गीत' आदि होते हैं।

(63) यन्त्र (जोनतोर) Mechanical Apparatus

(जोनतोर = जोह – ओनतोर)।

इस यन्त्र में देवी–देवताओं को मनोरंजन कराने के लिए अनेक वाद्य यन्त्र आदि होते हैं। जैसेः–

(1) नगाड़ा (दामा), मादल (दुमा्ङ), बाँसूरी (रुतु), केन्दरी (बनाम), जंगली सिंह से बना यन्त्र (षकोवाँ), शंख (षोंक), आदि होते हैं।

(2) पूजा के समय आसन करने का यन्त्र में 'चिटकि', 'किंद्ड् किता् की चटाई (जाटि)'

(3) पूजा सामग्री रखने के लिए यन्त्र में 'चुकदि', 'मुलि पुउ:', 'कोचोम्बा', 'कालगि', 'दाटोम पुउ:', 'रुउङ साकम', 'षरजोम साकम', 'कोरकोटा साकम', 'षोसो साकम', 'गंगइ अथवा मड् चारि:', 'सपारुम चारि:', 'रोला', 'लुपुङ', 'होलोङ', 'षासं', 'गिरु सिंदुरि', 'अदोवा चउलि', 'तिकि चउलि', 'दुणा', 'जोड़ा सुड़िता्', 'रमतिया्', 'तिलमिङ', 'मानि जंह', 'अदोवा डिया्ङ', 'मेला डिया्ङ', 'इलि', 'राषि द:अ', 'द:अ', 'पुलि अरकि', 'ओड़ता', 'षर', 'कापि', 'कातु', 'तोनो:', 'करसा कातु' आदि होते हैं।

'सारना धर्म' (षहारन: दोरोम) में ही सभी 'पर्व–त्योहारों' में गाजा–बाजा बजाने के अलग–अलग 'वाक वर्णन मन्त्र का ताल' (ता'ड़) होते हैं। और प्रत्येक पर्व–त्योहारों में गाजा–बाजा बजाने के 'ताल' (ता'ड़) अलग–अलग होते हैं। वैसे ही सभी पर्व–त्योहारों में 'नाच या नृत्य' भी अलग–अलग होते हैं। उसी प्रकार से सभी पर्व–त्योहारों में 'गीत का लय', या 'राग' भी अलग–अलग होते हैं। प्रत्येक पर्व–त्योहारों में गाजा–बाजा बजाने के ताल आदि एक 'वाक वर्णन मन्त्र ताल' होते हैं। पर्व–त्योहारों के गीत एवं संगीत आदि भी 'दैविक मंत्र' के उदाहरण होते हैं। बाजा बजाने की ध्वनि मात्र सुनते ही अन्य लोग समझ सकते हैं, कि कौन से त्योहार का यह बाजा है। पूजा–पाठ में उपयोग होने वाले गाजा–बाजा यानि 'वाद्य यन्त्र' आदि 'यन्त्र' के उदाहरण होते हैं। इस प्रकार से पर्व–त्योहारों के 'नृत्य या नाच' आदि 'तन्त्र' के उदाहरण होते हैं। जैसेः–

(अ) 'देहरी या पुजारी' (दियुरि) के आँगन में ग्राम वासियों के आह्वान एवं स्वागत के लिए मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(आ) 'देहरी या पुजारी' संग 'जोम षुइमको' स्नान करने के लिए रास्ता में जाते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(इ) 'देहरी या पुजारी' संग 'जोम षुइमको' स्नान करते समय नदी, तालाब या पोखरे में मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(ई) 'देहरी या पुजारी' संग 'जोम षुइमको' 'देहरी या पुजारी' (दियुरि) के घर पहुँचने के पूर्व मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(उ) 'देहरी या पुजारी' संग 'जोम षुइमको' 'देहरी या पुजारी' (दियुरि) के घर पहुँचने पर 'पूजा समग्रियों' के पीसते या सजाते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(Å) 'देहरी या पुजारी' संग 'जोम षुइमको जाहेर थान' में 'पूजा–अर्चना' करते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(_) 'देहरी या पुजारी' 'जाहेर थान' में 'सोम रस' (अदोवा चउलि रेय: काटब् डिया्ङ राषि द:अ) अर्पण करते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(ए) 'देहरी या पुजारी' बलि चढ़ाकर लौटते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(ऐ) 'देहरी या पुजारी' के घर से 'नाच–गान अखाड़ा' की ओर नाच–गान करने के लिए जाते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल,

(ओ) 'नाच–गान अखाड़ा' पहुँचने पर नाच–गान के लिए मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का बाजा ताल आदि होते हैं। इस प्रकार से हो' समुदाय में प्रत्येक चरण में बाजा बजाने के ताल अलग–अलग होते हैं।

(64) ग्राम गइँश्री (हातु गइँषिरि)

चूँकि, हो' समुदाय में 'शादी–विवाह' का पवित्र रीति–रिवाज 'दूल्हा के घर' में ही आयोजन होता है। 'शादी–विवाह' के शुभ उपलक्ष में भी अलग–अलग ताल (ता'ड़) बजाने के पवित्र रिवाज होते हैं। और 'शादी–विवाह' के अलग–अलग चरण में बाजा बजाने के ताल भी अलग–अलग ही होते हैं। जैसेः–

(अ) 'साराती' (ओर एराको) के स्वागत (दनारोम) हेतु बाजा 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) स्थान में बजाना अनिवार्य है। यह कार्यØम 'दूल्हन के मामा की ओर

से' गाँव के किनारे मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का रिवाज है। यहाँ 'साराती' (ओर एराको) के स्वागत का बाजा ताल अलग होता है।

(आ) 'साराती' (ओर एराको) एवं 'नयीं दूल्हन' के स्वागत (दनारोम) हेतु 'दूल्हा' (बोहोर) के 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) स्थान में बजाना अनिवार्य है। यह कार्यØम 'दूल्हा के मामा की ओर से' गाँव के किनारे मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का रिवाज है। यहाँ 'साराती' (ओर एराको) एवं 'नयीं दूल्हन' के स्वागत का बाजा ताल अलग होता है।

(इ) 'दूल्हा के मामा' (बोहोर अ: कुमा् या मामु) तथा 'दूल्हन के मामा' (कुनिया् अ: कुमा् या मामु) की ओर से दोनों पक्ष से 'दूल्हा' (बोहोर) के घर के आँगन में बेदी के बाहर 'सात फेरा' लगाते समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाना अनिवार्य है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का ताल अलग होता है।

(ई) 'दूल्हा' (बोहोर) तथा 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'श्रीश्री श्रृंगार' (षरिया्ओ षिंगा्र) के समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाना अनिवार्य है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाने का ताल अलग है।

(उ) 'दूल्हा' (बोहोर) तथा 'दूल्हन' (कुनिया्) के 'उपवास एवं व्रत' (काटब् अण्डो: तुरुब्) तोड़ने के समय मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बाजा बजाना अनिवार्य है। यहाँ मादल (दुमा्ङ), नगाड़ा (दामा) बजाने का ताल अलग होते हैं।

हो' समुदाय में 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) के लिए 'सोम रस' (अदोवा चउलि रेय: काटब् डिया्ङ राषि द:अ) अर्पण करने का रिवाज है। इस प्रकार से 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) का 'मान–सम्मान' बड़े आदर के साथ सत्कार करने का पवित्र रिवाज होता है। 'ग्राम गइँश्री' (हातु गइँषिरि) एक गाँव का रखवाला देवता होता है। जो किसी राक्षस, या कुदेवताओं जैसे भूत–प्रेतों को गाँव के अन्दर जाने नहीं देता है।

(65) आस्था और विश्वास का उदय

इस पृथ्वी या संसार में प्रत्येक व्यáि की आदत अलग हो सकती है। मगर सबको किसी न किसी पर आस्था और विश्वास रखना होता है। उसी प्रकार से हो' समुदाय में भी अलग प्रकार के आस्था और विश्वास रखते हैं। हो' समुदाय में सूरज, चाँद और तारों पर आस्था और विश्वास रखते हैं। दिन को हमें सूरज से प्रकाश मिलते रहता है। और हमें सूरज से ताप भी मिलती हैं। चाँदनी रात को हमें उजियाली मिलती हैं। उसी प्रकार से तारों से भी हमें कुछ अंश तक उजियाली मिलती हैं। ये सब ग्रह एवं तारे प्राकृतिक उपादान के होते हैं। इस प्रकृति (पुदगा्ल) में पेड़–पौधे, लताएँ, पहाड़–पर्वत, जंगल, पठार, नदी, झील, झरने, नाले आदि प्राकृतिक उपादान के होते हैं। पहाड़–पर्वत के जीव–जन्तुएँ, थल के जीव–जन्तुएँ, चिड़ियाँ–पक्षियाँ, नदी–नाले के जल जीव–जन्तुएँ आदि प्राकृतिक उपादान के होते हैं। प्रकृति में जितने भी जीव–जन्तुएँ हैं, सब प्राकृतिक उपादान के होते हैं। इस प्रकृति की रचना भी प्रकृति ने ही प्राकृतिक रचना के अनुसार श्रृष्टि हुई। अतः प्रकृति ही भगवान हो सकता है। इसलिए हो' समुदाय प्रकृति को ही भगवान के रूप में मानते आ रहे हैं। क्योंकि, प्रकृति की गोद में हम जन्म लेते हैं, प्रकृति की गोद में ही हम खेलते–कूदते भी हैं। प्रकृति ही हमें खाने के लिए भोजन देती हैं, और पीने के लिए भी पानी देती हैं। और प्रकृति की गोद में ही हम मरते भी हैं। मरने के बाद भी हमें प्रकृति में ही 'दफना' दिया जाता है। या फिर मरने के बाद भी हमें प्रकृति में ही 'जला' दिया जाता है। इस प्रकृति में ही हम मन्दिर, मस्जिद, गिरजा, गुरूद्वारा, सारना, देषाउलि आदि बनाते हैं। इस प्रकृति में ही हम अपने रहने के लिए अपना घर–द्वार बसाते हैं। इसलिए, हो' समुदाय में 'स्वर्ग' एवं 'नरक' नाम की चीजों पर आस्था और विश्वास नहीं होता है। स्वर्ग एक काल्पनिक नाम होता है। सुख, शान्ति, चैन एवं आनन्द के समय जो 'स्वप्न' देखा गया है, वही 'स्वर्ग' होता है। उसी सुख, उसी शान्ति, उसी चैन एवं उसी आनन्द को पाने के लिए जो 'कर्म' करने का विधि–विधान होता है, वही 'धर्म' होता है। हर धर्म में एक अलग प्रकार का मार्ग होता है। इस संसार में प्रकृति के मालिक यानि सर्वशáिमान 'भगवान' (षिळ्ह्बोंगा) GOD के पास जाने का 'मार्ग' को ही 'धर्म' (दोहोम, दोड़ोम, दोरोम) कहा जाता हैं। इस तरह से हो' समुदाय में 'आस्था और विश्वास' का आधार तीन प्रकार के माने जाते हैं। वे तीन प्रकार के आधार इस प्रकार होते हैं। जैसे (जेमोन):–

(1) षोयतायेम् (प्राकृतिक रचना में सत्य पर आस्था रखना),
(2) षेबायेम् (प्रकृति में प्रकृति की सेवा–अर्चना करना) और
(3) षुन–दुरं्ङेम् (प्रकृति में प्रकृति के अनुकूल नाच–गान करना)।

(66) षोयतायेम् (प्राकृतिक रचना में सत्य पर आस्था रखना)

प्राकृतिक रचना में सत्य पर आस्था रखना, उसकी पूजा–उपासना करना आदि। जैसेः–

(1) इस पृथ्वी में 'सूरज' सुबह उदय होता है, और शाम को 'अस्त' होता है। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक खेत का काम या कर्म करने का सही समय अपने को चुनना पड़ता है। समय के अनुकूल समय के अन्दर ही सही कर्म करना चाहिए। यह सब सही कर्म करना ही 'सारना धर्म' (षहारन्: दोरोम) कहा जाता है। अपने खेत को खाली नहीं छोड़ना चाहिए। उसमें कोई भी फसल उगाना अच्छा होता है। वह आप का ही भलाई होगा, यह 'सारना धर्म' (षहारन्: दोरोम) का सम्मान होता है।

(2) इस पृथ्वी में मनुष्य प्राणी जन्म लेता है, और बुढ़ा होने पर मरता है। जन्म लेने के बाद और मरने से पहले अच्छा काम पूरा करना चाहिए। पहले अपने लिए, परिवार के लिए, कुटुम्ब–बन्धुओं के लिए, समाज के लिए फिर दुनियाँ के लोगों के लिए कर्म करना चाहिए। खाने वाले जीवों को ही मारना चाहिए, और उसे खाना भी चाहिए। नहीं खाने वाले जीवों को जान से नहीं मारना चाहिए, उसे आपको 'पाप' का फल मिलता है।

(3) जिस पर प्राण (जिह) होता है, वह प्राणी (जियोन, जुनतु) होता है। खेत में हल जोतने के पहले पशुओं को भर–पेट चारा दे कर ही जुताई करना चाहिए। पशुओं को भर–पेट चारा दे कर ही जुताई करना 'सारना धर्म' का कर्म होता है। जानवरों को बिना चारा खिलाये जुताई करना 'सारना धर्म' (षहारन्: दोरोम) में 'पाप' कहा जाता है।

(4) हो' समुदाय में 'हेरो: पोरोब्' के 'गुरि: पोरोब्' की शाम को होलोङ से 'रुउङ पŸाा में सिझा इडली' (तिकि सोयोङ लड्) बनाने का रिवाज है। इसे 'पवित्र अदिङ' में कूलदेवों (हा'म–हो'को, दुउम–हो'को) को भोग चढ़ाने का पवित्र रिवाज होता है। इस दिन उस 'पाप' को खण्डन करने के लिए 'मवेशियों' को सींग में तैल लगाने एवं उन्हें खाना खिलाने का रिवाज होता है।

(5) जो जान लेकर आता है, या जिस पर जान है, वह जानवर कहा जाता है। पालतू जानवरों (असुल जुनतुको) को पालना –पोसना किसान का कŸाव्य होता है। और उनकी देख–भाल करना भी अपनी ही भलाई होती है। जिनसे हमें इन्हें बेच कर धन–दौलत की आमदनी होती हैं। जैसे (जेमोन):– मुर्गा–मुर्गी, भेंड़–बकरी, भैंसा–भैसी, सूअर–कबूŸार आदि।

(6) इस संसार में कोई भी चीज या जीव की उत्पŸिk gksrh gS] og ,d fnu u"V gksrh ;k ejrh gSA fQj Hkh jgus ds fy, ?kj] [kkus&ihus ds fy, Hkkstu] lkefxz;kj] oL=] xgus] Hkkstu [kkus ds fy, ik= j[kuk vko';d gSA D;ksafd] le; ds vuqdwy dHkh Hkh dke esa vkrk gSA

¼7½ bl i`Foh esa ftrus Hkh _f"k] eqfu] lk/kw] lU;klh tgkj ls vk;s os lc ogha pys x;sA ge Hkh rks ,d euq"; tho ds :i esa tUe fy, gSaA 'kk;n gesa Hkh rks ,d fnu tkuk gh gksrk gS] ;g lR; gS] gesa ejuk gh gSA tkus ls igys vius ukrh&iksrksa ds fy, dqN&u&dqN /ku&nkSyr] viuk lkfgR;] laLdkj] bfrgkl vkSj /keZ&xzUFk NksM+ dj gh tkuk pkfg,A

¼8½ bl lalkj esa ftrus Hkh egkiq:"k tUe fy,] os lc ej x;sA blfy,] vki Hkh dqN NksM+ dj tk;saA blfy, fd gekjs lekt ds yksx vkidks Hkh igpkusaA vkidk uke ges'kk ds fy, vej rks gksxkA vki ftl egkiq:"k dks tkurs gks] mudh thouh rks de&ls&de vius Mk;jh esa fy[k dj gh tk;saA D;ksafd] vkids ukrh&iksrksa dks mlls t:jh ,oa vkn'kZ Kku izkIr gksxkA

¼9½ e`R;q ,d izdkj dk izkd`frd loZO;kih lR; ekuk tkrk gSA blfy,] vki vius ls cM+ksa dk vknj djas] vius cjkcj ds yksxksa ls nksLrh djas] vki ls NksVksa dks I;kj djasA izd`fr ;kuh Hkxoku Hkh

vki ls [kq'k gksaxsA vkids ejus ls igys vkuUn ds lkFk vki dqN nku ns dj gh tk;sa] rkfd vius lekt ds mRFkku esa lkFk nasA

(67) षेबायेम् (प्रकृति में प्रकृति की सेवा–अर्चना करना)

प्रकृति की रक्षा, संवर्द्धन एवं अनुकरण करना या सेवा–सुश्रुषा करना आदि। जैसेः– जो धान बोता है, वह उसकी देख–रेख करता है। अन्त में चावल पाता है और खाता है। जो धान नहीं बोता है, वह उसकी देख–रेख भी नहीं करता है। अतः उन्हें चावल पाने और खाने का हक भी नहीं है। उन्हें चावल पाने और खाने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से दूसरा मेहनत करना पड़ता है या कुछ देना पड़ता है। इसलिए, वह अपना मेहनत का फल किसान को देना होता है। उसे ही 'कीमत' कहलाता है। बिना कीमत चुकाये अगर पाता है और खाता है, तो वह गलत करता है। उस गलत काम को ही पाप कहलाता है। उस पाप से पुण्य पाने के लिए कुछ पूजा–पाठ करना पड़ता है। देवी–देवताओं की सेवा–सुश्रूषा करना ही पूजा करना कहा जाता है। हो' समुदाय के मतानुसार देवी–देवताओं को प्राकृतिक उपादान के रूप में माने जाते हैं। हो' समुदाय के मतानुसार, 5 प्रकार के ही देवी–देवताओं को मानने का प्रचलन है।

(68) षुन–दुर्ंडेम् (प्रकृति में प्रकृति के अनुकूल नाच–गान करना)

प्रकृति में प्रकृति के अनुकूल नाच–गान के साथ–साथ ही मनोरंजन (मोनरञ्जाओ) भी करना होता है। जैसेः–

(1) प्रकृति के अनुकूल अपने को तैयार होना ही 'उपलक्ष' कहा जाता है। 'माँगे पोरोब्' के उपलक्ष में माँगे पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। माँगे पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। माँगे पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करना या बताना मेरा तुम्हारा और हम सबका फर्ज बनता है। इस गलती को सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(2) 'बहा पोरोब्' के उपलक्ष में बहा पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। बहा पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। बहा पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(3) 'हेरो: पोरोब्' के उपलक्ष में हेरो: पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। हेरो: पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। हेरो: पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(4) 'बड्ताउलि पोरोब्' के उपलक्ष में बड्ताउलि पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। बड्ताउलि पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। बड्ताउलि पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(5) 'जोमनमा पोरोब्' के उपलक्ष में जोमनमा पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। जोमनमा पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। जोमनमा पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(6) 'कारम पोरोब्' के उपलक्ष में कारम पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। कारम पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते

हैं। कारम पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(7) 'दासाँय पोरोब्' के उपलक्ष में दासाँय पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। दासाँय पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। दासाँय पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(8) 'ताण्डि पोरोब्' के उपलक्ष में ताण्डि पोरोब् का ताल ही बजाने का रिवाज होता है। ताण्डि पोरोब् का नाच और गाना ही होते है। अन्य कोई भी दूसरे ताल, नाच और गाना नहीं होते हैं। उसी प्रकार से बाजा का ताल भी उसके अनुरूप ही होते हैं। ताण्डि पोरोब् के उपलक्ष में अगर कोई दूसरे त्योहार का बाजा बजाता है, तो वह गलत करता है। उसे सुधार करने के लिए 'दुपुब् दिषुम मरं वोंगा' दण्ड (दण्डे) करता है।

(9) हो' समुदाय (हुदा्) में अलग–अलग घर के दरवाजे में इस प्रकार के पहचान चिह्न के अंकन किये जाते हैंः–

(अ) फाटक द्वार (अंका दुवा्र):–

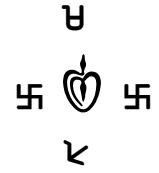

(आ) आँगन द्वार (मेला दुवा्र):–

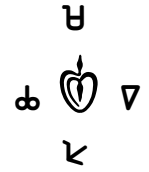

(इ) धान घर का द्वार (तंतरा दुवा्र):–

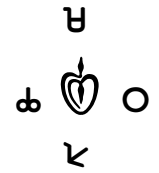

(ई) रसोई द्वार (अदिङ दुवा्र):–

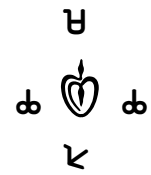

(उ) गोहाल द्वार (गोवाँ दुवा्र):–

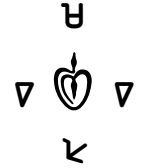

(ऊ) दुकान द्वार (दोकान दुवा्र):–

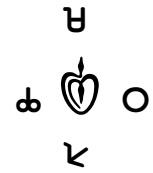

(ऋ) भाड़ा द्वार (बासा दुवा्र):–

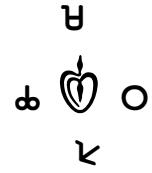

जिसमें, ♡ = ʒ, V और ꟻ का यौगिक अक्षर होता है। ʒ (ओङ) शब्द का अर्थ होता है, फूँकना। V (ङ्) शब्द का अर्थ होता है, जन्म देने वाले माता–पिता। ꟻ (अम) शब्द का अर्थ होता है, तुम श्रृष्टिकŸर्ा यानि भगवान। 卐 (आ) शब्द का अर्थ होता है, 'आ' दटा, बिषि्ः दटा' तथा 'हंकर–तुंक्र' हटाना। ʮ (षु') शब्द का अर्थ होता है, 'षहार' (लाभ) और ⱶ (सिइ) शब्द का अर्थ होता है, 'सगुन' (शुभ)। ɞ (इळ्) शब्द का अर्थ होता है, मैं। ∇ (अए्) शब्द का अर्थ होता है, वह। O (ओŸा) शब्द का अर्थ होता है, पृथ्वी या संसार में चुम्बकीय गुण। ♡ = ʒ + V + ꟻ. 卐 = Ր + Ր. ʮ =

स्वर वर्ण (इपन बोरोङ)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
A	Aa	I	EI	U	Uu	RI	E	AI	O	Au	An	Ah

व्यंजन वर्ण (बेङन बोरोङ)

क	ख	ग	घ	ङ
Ka	Kha	Ga	Gha	Nga
च	छ	ज	झ	ळ
Cha	Chha	Ja	Jha	Nya
ट	ठ	ड	ढ	ण
Ta	Tha	Da	Dha	Na
त	थ	द	ध	न
Ta	Tha	Da	Dha	Na
प	फ	ब	भ	म
Pa	Pha	Ba	Bha	Ma
य	र	ल	व	श
Ya	Ra	La	Wa	Sha
ष	स	ह	क्ष	त्र
Sha	Sa	Ha	Ksha	Tra

ज्ञ	ड़	ढ़।
-	Ra	Rha.

गिनती (लेनेका)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

मात्राएँ (तिनिङको)

क का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

ग गा गि गी गु गू गृ गे गै गो गौ गं गः

ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङृ ङे ङै ङो ङौ ङं ङः

च चा चि ची चु चू चृ चे चै चो चौ चं चः

ज जा जि जी जु जू जृ जे जै जो चौ चं चः

ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञृ ञे ञै ञो ञौ ञं ञः

ट टा टि टी टु टू ट्री टे टै टो टौ टं टः

ड डा डि डी डु डू ड्री डे डै डो डौ डं डः

ण णा णि णी णु णू णृ णे णै णो णौ णं णः

त ता ति ती तु तू तृ ते तै तो तौ तं तः

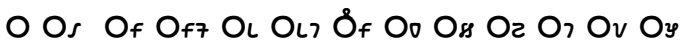

द दा दि दी दु दू दृ दे दै दो दौ दं दः

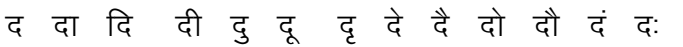

न ना नि नी नु नू नृ ने नै नो नौ नं नः

प पा पि पी पु पू पृ पे पै पो पौ पं पः

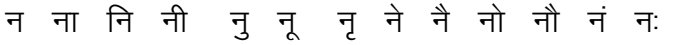

ब बा बि बी बु बू बृ बे बै बो बौ बं बः

म मा मि मी मु मू मृ मे मै मो मौ मं मः

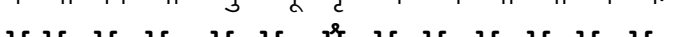

य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः

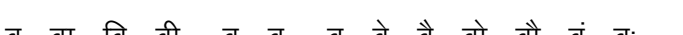

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः

ल ला लि ली लु लू लृ ले लै लो लौ लं लः

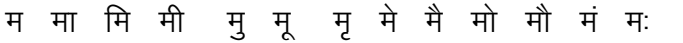

व वा वि वी वु वू वृ वे वै वो वौ वं वः

श शा शि शी शु शू शृ शे शै शो शौ शं शः

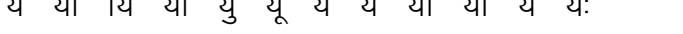

ष षा षि षी षु षू षृ षे षै षो षौ षं षः

स सा सि सी सु सू सृ से सै सो सौ सं सः

ह हा हि ही हु हू हृ हे है हो हौ हं हः

ड़ डा ड़ि ड़ी ड़ु ड़ू ड़ृ ड़े ड़ै ड़ो ड़ौ ड़ं ड़ः